

अनुक्रमणिका

विषय	पत्रांक.
१. प्रस्तावना	१
२. अभिधर्मत्यसंग्रह	१-६५
(१) चित्तसंग्रहविभाग	१
(२) चेतसिक्तसंग्रहविभाग	६
(३) पश्चिमकसंग्रहविभाग	१२
(४) दीयिसंग्रहविभाग	१७
(५) धीयद्वारसंग्रहविभाग	२२
(६) रुपसंग्रहविभाग	२९
(७) सम्प्रयुक्तग्रहविभाग	३६
(८) पश्चसंग्रहविभाग	४१
(९) कम्बानसंग्रहविभाग	४७
३. सदानुक्रम	५७
४. गाणानुक्रम	८५

प्रस्तावना

मामान्य रीते हालना बौद्धोना वे भाग पडे हे—उत्तरना बौद्धो अने दक्षिणना बौद्धो, डिकेट, मंगोलीया, चीन अने जापानना बौद्धो उत्तर-बौद्धो कहेवाय; अने मिलोन, द्वादश, मियाम अने बाम्बोर्डियाना बौद्धो दक्षिण बौद्धो कहेवाय. उत्तरना बौद्धो पोताने महायानना अने दक्षिणना बौद्धोने हीनयानना कहे हे.

बौद्ध अधिकारी नीवन्मुक्ति अथवा 'बोधि' इष्ट प्रकारनी मनाय हे, ते आ प्रभाणे—'धावकरोधि', 'प्रत्येक द्वाद्धोधि' अने 'सम्यक्सम्भोधि', 'धावक-बोधि' कहे हे. 'प्रत्येक द्वाद्ध' एट्ट्वे मुख शास्त्रे उपदेश थीथा चिना मम्मूर्तिः द्वाद्ध थाश हे ते, पण तेनामा बीजा लोकोने तारवानु सामर्थ्य गमी होतु. ते अगम्य कंगेरे कोइ पण एकान्त न्यद्वापा एकलो रही दिमुक्ति-मुख अगुभये हे. तेनी 'बोधि' ने 'प्रत्येक द्वाद्धोधि' वरे हे. 'सम्यक्सम्भवद्वाद्ध' एट्ट्वे मुख चिना ने सर्व धर्मने जाणे हे, अने पोताना सामर्थ्यपी बीजानो पण उद्धार करे हे. आदा मर्यमद्वाद्धो पणा हे. तेसां आ दल्लवना एका म्यवसंद्वाद्ध गाँवम् यूठ हे.

महायान पंथना भनुचारिभोने पहेला हे 'बोधि' पमद नभी; तेमने तो 'सम्यग्मवोधि' ज जोइण, अनेक जन्मोमां असंख्य प्राणीओनु दिन मार्धी अनेक वाढ पडी मम्यरम्यद्वाद्ध घट मोक्ष मेडावो ए नेमनु ल्येय हे. शान्तिदेवानार्थ रहे हे —



एवं सर्वमिदं शुद्धा यन्मयापादिते शुभम् ।
 तेन एतो भार्यमहात्मानो भासुःशब्दसामित्रित ॥
 मुञ्चयनेतु सत्तीतु गे ने प्रामोदयमागगः ।
 तेरेण ननु पर्णाते योदेवातरमिहेन निर् ॥'

(आ प्रमाणे आ बनुं कर्नि ने मने जे दुःख मल्लू छे तेवा कडे मां प्राणीओना सर्व दुःखनी शानि कर्नार पाउ । माँ प्राणीओनो उद्धार पतां तारामा ने प्रमोदमागर उन्टे छे ते बम नपी ! अगमिह षोडशी शु !) आ रिति सर्व प्राणीओनो उद्धार कर्नि ज आगांग मोहमा ननु नोइए; अने आपी ज पोतानो पंथ महायान पंग छे एम उत्तर देशोना बौद्धो माने छे; अने दक्षिण देशोना बौद्धोने तेमो हीनयान कहे छे, कारण के नेओ फरक पोताना दुर्गती ज दृष्टार रने छे; अहं यद मोह मेल्लया नारक न तेमनुं न्येय होय छे.

दक्षिणा बौद्धमाटित्यमा 'महायान' अने 'हीनयान' ए शब्दो बन्करुल मल्लता नपी. पोताना पंथने तेओ 'भेरवाद' (भाविग्याद) पंथ कहे छे. चुद्धना परिनिर्णय पट्ठी श्रग महिने महाकाश्यण, आनंद, उत्ताधि इत्यादि महाम्पविरोह गग्नगृहमां पृक्त्रा यह चुद्धना उपदेशनो मंग्रह कर्यो. मो वाम पट्ठी वैशाली नगरीमा 'यसा' व्याविरना प्रयामयी भिन्न-संघनी मोटी मधा मछी; अने तेमां धर्मग्रंथोनुं दुनः संशोधन करवामां आव्यु. मार्वभौम अशोकना ममयमा पण मोमालिपुत्र निस्स स्थाविरना अन्यत्पणा नीचे एक मोटी सभा भेगी यह अने तेमा श्रीनी वार चुद्धना उपदेशोनुं संशोधन करवामा आव्यु. आ परपरा दक्षिणा बौद्धोमां चालता होवापी तेओ पांताने व्यविरवादी कहेवडावे छे. दीपवंस अने कथावत्यु-अट्टकथामा अशोकना ममये बौद्धोना अद्वार भेद यसा एवं वर्णन छे. तेमां जेने महामंथिक कहे छे नेज महायान पंथना अनुगामीओ

1. बन्ने क्षोको बोविचर्यावतारमापी लघिला छे. पहेलो श्रीना परिच्छेदमां छे, अने बीजो दक्षमा परिच्छेदमां होवो नोइए.

हो ५ बु आगुनिर. पणितो अनुभान करे हे. परंतु आ महासंस्थितेनी
शासनमा भवित्वार उहेग पानिमाटित्यमा भडता नपी.

“प्रिपिटार् पंथना अनुयायीभोने जेम द्विपिटक पंथ पूज्य हे तेम
महायान पंथना अनुयायीभोने पण हे. फरक देवद व्येष पूरतो हे.
प्रिपिटक पंथ शूद्र पालि भासामा हे. तेना गुप्तपिटक, विनयपिटक तथा
अभिधर्मपिटक एवा इति भाग हे. महायान पंथीभोए आ पंथोनो संस्कृत
भासामा अनुवाद करी तेमां शणु नवुं दायल करी दीयुं हे; अने शोताने
अनुवृद्ध राते तेनो अर्प देवाहका प्रयत्न पण कर्दो हे. बुद्ध भगवान्नना अने
तेमना प्राचीनतम अनुयायीभोना नुद्ध अने मरल विनारो पाविभासाना
प्रिपिटक पंथोमा हे. अने भा पंथोना अभ्यासपी महायान पंथना पंथोनो
अभ्यास पण मुख्य भाय हे ए. शाब्दनमा दिग्गानोनो एकमत हे.

प्रिपिटक पंथोद्दुं सामान्य स्वरूप आपशामु आ स्थल नपी. तेने माटे
यह स्वरूप देव लगावी हे. अहिआ अनारे अभिधर्म पूरतो न विचार
करवानो हे. अभिधर्मना धर्मभगणि, निर्मग, शाशुकथा, पुण्यादपन्नसि,
कथादन्तु, यमक अने पट्टान पट्टा भात प्रकरणो हे. आ वधा बुद्ध न
उपर्युक्तां हे एवी. धदाक्तु द्वारोनी सान्यता हे. अने तेने टेको आपवानो
प्रयत्न अभिधर्मभृकथाहरे अहसानिनी नाममी धर्मसांगिनी अहृकथाना
आरभयो कर्यो हे. वरी कावतानो विचार करता अभिधर्मपिटक, मुष अने
विनय ए ने विटक पट्टीलाचा काढे रचायेलो होयो नोइण् ए लाट रिते मणाद
आवे हे. कथादन्तु प्रकरण तो मोणानियुत निम्मे अशोक राजाना समयमा
रण्यु एवो अहृकथामा धर्म उहेग हे; भर्तान् पहेली आर प्रकरण तेनी
पहेलां वेटलाक मध्ये अने तेवटना हे तेनी एवी वेटलाक मध्ये
रक्षाया हरो.

धर्मभगणि ए. देवो मर्त्यां प्राचीन ग्रंथ हे तेवो न ने महस्तवाक्ये
पण हे. वारण के घर्व अभिधर्मनो वायो तेना उपर रक्षाएँदो हे. एषा

सर्व पदार्थोना भिन्न भिन्न विभाग करी तेनो अर्थ निश्च करणा प्रयत्न करेलो छे. उदाहरण तरीके पहेली न 'त्रिस' व्यो. मर्म पदार्थोना 'कुशला धम्मा', 'अकुशला धम्मा' अने 'अन्याकृता धम्मा' एवा दो विभाग पाढी पडी कुशल धर्म कया, अकुशल कया अने अन्याकृत कया एनो विस्तारपी विनार कर्यो छे. आ चाचतमांन लगभग ग्रंथांनी पोर्ण भाग रोकेलो छे. बीजा विभागोनो अर्थ सेसपां कर्यो छे; कारण एउटा देखाय छे के—पहेला त्रिको अर्थ ब्राह्मण समज्या पढी बाझीना विभागोनो अर्थ ते प्रमाणे समनवो मुलम पडशी एवो ग्रंथकर्तानो के—ग्रंथकर्तानोनो—उद्देश हवो.

अनिन्द्य होइ परिणाममां मुख्यकारक ते कुशल, निन्द्य होइ परिणाममां दुःखकारक ते अकुशल. आ सियायना बाकी वधा अन्याकृत. बीजी गीति कहीए तो लोभमूलक, द्वेषमूलक अने मोहमूलक कर्म अकुशल कहेवाय छे, अने अलोभमूलक, अद्वेषमूलक तथा अमोहमूलक कर्मां कुशल वहेवाय छे. आहिआ अलोभ एटले केवळ लोभनो अभाव नयी, पण मनुष्य जातिने उपयोगी यवानी उत्कट इच्छा; अद्वेष एटले प्रेम अने अमोह एटले सात्त्विक ज्ञान एवो अर्थ समनवो तोडण.

अन्याकृत धर्मना रूप अने नाम एवा वे मुख्य भेद छे. रूप एटले वधी नडसृष्टि अने तेमापी उत्पन्न यण्ठी पाच ज्ञानेन्द्रियो. आ वधाने कुशल के अकुशल कही शकाय नहि. छता' आ चार महाभूतो अने तेमापी उत्पन्न यण्ठी नडसृष्टि कुशल अकुशलनुं मोदुं कारण भद घडे छे.

अन्याकृत नामना (मनना) वे भेद छे, पहेलो विषाक अने बीजो किया. विषाकमां ननिनेनी बाचतोनो ममावेश थाय छे. चक्रविज्ञानआदि पंच विज्ञान, आ निजानयी ते राग द्वेरा मोह अभवा अराग, अद्वेष, अमोह

उत्तम थाय एवं मुखिनो मनोऽगापार^१ अने पूर्वमन्मना कुशल अकुशल
कर्मने लीपे प्राप्त यत्कु प्रतिसन्धि^२ रिजान.

किया थे प्रसारनी हे एक सर्व सापारण प्राणीओनी किया अने
बीभी अहिनी गिरा, तेमा पटेलाना थण भेद हे. 'पश्चात्तावज्जन',
'मनोऽगापारवज्जन' अने 'योदृपन.' प्राणीओनी इन्द्रियो विषयोना सबधमा
पटेली होय हे ते ते गमये प्राणानु दिव अमुक एक इन्द्रिय तरफ थडे हे, आ
प्रयुक्त उपायगवज्जन दहु ते, दार्थी ने ते प्रवृत्तिने लीपे चित्त पांचमांथी
मोहे इन्द्रिय सरक ५०० ठे जे शिशम्बर स्वप्नरूपी चिह्न भूतकाळी
चावतो ताप थडे हे तेने मनोऽगापारवज्जन वहु हे; अने तेना थडे इन्द्रियो
द्वारा मठतो स्व चित्त भागल ल्यक्षित विषय तरकि स्पष्ट थाय हे तेने
योदृपन वहु हे. बालविद तीन भा बंग—मनोऽगापारवज्जन अने योदृपन—एकन
ज्ञान, किंगाओ हे.

^१हीनी शिशम्बरा का। मामान्य लोकोना कुशलमां बहुन थोडो
परक ते कुशल यमांनो विषार होय हे. स्वारे किया कर्मनो विषाक
लेतो नवी, कुशल कर्म एटले मामानिक माणमोण कोरेलु सत्कर्म अने

^२ आ मनोऽगापारनी लोडी थण ने गग द्वेष आदिकमां लइ जाय
दे ते 'योदृपन' कोहशाय हे.

३ कुशल अभवा अकुशल कर्मना विषाकने लीघे द्यति—अन्तःकरण
पुर्वमन्मन्ये पेश थाय हे. गर्भाशयमां प्रवेश करतानी प्रथम कणने अने
तेशादिमां उत्तरिनी प्रथम कणने 'पठिमनि' (प्रतिसन्धि) कहे हे. आ
अन्तःकरण आगी जीदिगीमा सतावन्ये कायम रहे हे, अने तेना आपारे
प्राणी नवी कुशल, अकुशल, अने किया कर्मां करे हे. आ आसा भृमां
गगित्तपे रहेनार अन्तःकरणने 'भाग' (भगाह) कहे हे, अन्य
दण्डा आ अन्तःकरणने 'चुनि' (च्युति=मरण) कहे हे.

किया एट्ले जीवन्मुक्त अर्हन्तोए करेलुं सत्कर्म. कुशल कर्मांयी अकुशल संभवी शके छे परंतु क्रिया कर्मांमां अकुशलनुं मिश्रण कढी पण यदि शकतुं नयी.

आनो शोडोक खुलासो अस्थाने नहि गणाय. सांसारिक मनुष्य दान दे छे, शीलरक्षण, ध्यान, भावना वगेरे करे छे अने एनो आस्वाद ले छे. तेना परिणामे अभिमान, तृप्णा इत्यादि दुर्गुण उत्पन्न यवानो संभव छे पट्टले के दान शील वगेरे कुशल कर्मांयी अकुशल कर्मां उत्पन्न यदि शके छे. पण अर्हन्तनी म्यिति आवी नयी. ते जोके बीना सामान्य जन प्रमाणे ज दान, शील, ध्यान, भावना वगेरे कर्मां आनरे तोपण तेनी सर्व यासनानो क्षय ययो होवायी तेना अन्तःकरणमा अभिमान वगेरे दुर्गुणोनो आविर्भाव कढी पण यतो नयी.

मन्बणपन्स अकरणं कुसलम्स उपमंपदा ।

मनितपरियोदपनं एतं बुद्धान सासनं ॥

आ धम्पदना १३ोकमां आज अर्प चोक्खी रीते कहेलो छे. “लोभ-मूलक, द्वेषमूलक, अने मोहमूलक कोइ पण कर्म करवुं नहि. अलोभमूलक, अद्वेषमूलक अने अमोहमूलक सर्व पुण्य कर्मां सारी रीते करवां, अने पोतानुं चित आ शुभ कर्मांमा पण आसक्त न यवा देता शुद्ध राखवुं ए मुद्दोनुं शामन छे.”

बुद्ध भगवाने कर्मने ज अत्यत प्राधान्य आप्यु छे. तंओ कहे छे के “कम्मस्सरोम्हि कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मचन्यु कम्मपटिसरणो, यं कम्मं करिस्सामि कल्याण वा पापकं वा तस्म दायादो भविस्सामी ति पञ्चनिनेन अभिग्हं पञ्चवेसिवतञ्चं ॥” (कर्म एन मारुं धन छे, कर्म एन मारो वारसो छे, कर्म एन मारो बन्यु छे, कर्मांयीन मारी उत्पात्ति छे, कर्म एन मारु शारण गे, ने पुण्य के पाप कर्म दुं करीश तेनो न मने)

यारसो मळशे एम प्रवनिते धारंवार विचार करवो जोइए.) अर्थात् अकुशल कर्मोंनो त्याग करी कुशल कर्मों करवापी भ मोक्ष मळे छे. एक प्रसंगे बैशालीमां सिंह सेनापतिर शुद्धने प्रश्न पुछ्यो के, “मदन्त, घणा लोको आपने अकियावादी कहे छे; तेभोना कहेवा प्रमाणे आप खोरतरा अकियावादी छो ?” शुद्धे जनाब आन्यो, ‘सिंह! एक रीते भने आकियावादी कही शकाय. पारी विचारो कियमां मुकुत्ता नहि, पारी विचारोनो नाश करवो, पारी विचारोने भनमां आउ ग पग नीढ़ देवा, एवो हु उपदेश करु छु. आ दृष्टियी जोइए, तो हु अकियावादी खोरो. पण जो बीजो कोइ मने कियावादी कहे तो तेनु कहेवुं पण खोटुं कहेवाय नहि; कारणके पवित्र विचारोने कियमां मुकुत्ता, कुशल मनोदृष्टिने बदावादी, सदिच्छानुसार वर्णन करवु एवो हु उपदेश करु छु. आ दृष्टियी जोइए तो हु कियावादी छु.”*

शुद्धना आ ईर्मयोगमां अने भगवद्गीताप्रतिपादित करेला कर्म-योगमां घणो मोटो फरहु छे. भगवद्गीतानुं एवुं कहेवुं छे के चारुर्ण्य ईच्छेर उत्तर्य करेल होवापी भे वर्णमां नन्म यदो होय ते वर्णने अनुमरीने कर्म करवुं जोइए; अने ते कर्ममां आसरिक गाल्या विजा वर्णुं जोइए. क्षत्रियोनो धर्म युद्ध करवानो छे; अने शुद्ध भाइभाहु साथे युद्ध करवानो प्रसंग आदे तो पग ते मोक्षमार्ग ज ते एम समन्नी निरपेक्षणे युद्ध करवुं ते तेनु कर्तव्य दे; अने आप करवापी ज तेने मुक्ति मळे. बौद्धोने आ कर्णवधम्या पमद नर्थी, तेभोनी कर्तव्यनी कमोटी राग, द्वेष अने मोहनो त्याग करी निरपेक्षता, प्रेष अने शानरूपक, धर्म मनन कर्या करवुं एमो छे. अर्थात् कोइ पण जातिनो माणम भा प्रमाणे वर्ते तो ते अहंत् घर राहे.

बेशन्तीओनुं ऐष नेम निर्गुण परम्पर ते तेम बौद्धोनुं ऐष निर्बाण ते. निर्बाणने बौद्धो जून्य कहे ते अने प्रभने बेशन्ती निर्गुण कहे छे.

* नुओ शुद्धलोगमारम्पह पृ. २७९-८० मराठीभाष्टि.

अर्थ एकत्र हे; शब्द मात्र नूदा हे. पण, निर्वाण तत्त्वमांथी निर्वाण यशुं के जगत्मांथी निर्वाणतत्त्व नीकल्युं आ वाद्धमा बुद्ध नयी. बुद्ध कहे हे. 'पुरिमा भिक्षवे ! कोटि न पञ्चायति अविद्वा भिक्षुओ, अविद्यानुं भूल ज्ञारण कही शकाय नेग नयी.' मंसार दुः हे अने निर्वाण शान्तिशायक हे, अने नेनो मार्ग कठीण तो ते मन्त्रम् करवु प्रज हे. बुद्धनुं आटल्युं ज कहेयुं हे.

निर्वाणतत्त्व अने नेना मार्गना विषयमां त्रापण अने चीजा न मापे येत्या वादविवाद मढायाने ग्रंथोमां पुनर्लङ्घ हे; तेवा ते स्थविरव पथना ग्रंथोमां नयी. अभिधर्मपिटकमां वादविवादात्मक ग्रंथ फै 'स्त्रावन्तु' न हे. परनु नेमा पण चीजा पणो गापे वादविवाद नहुन थो हे. चांद्र धर्मना प्रमेयो निशाच अरी बनावता मारू ग्रंथरूपे प्राच वादपद्धतेनो अगीकार कर्यो हे इद्दलु ज. आ उपगत थोदोमां शास्त्र वादी भिन्न पणो हत्ता तेना मनोनु गडन करवानो थोदो घणो प्रभा आ ग्रंथमां जगाय हे. चीजा तथा प्रकरणो मारभूत पदावर्णी लाल अने श्वर्णुरुण्याची खोला हे. धर्ममंगाणि ग्रथमा रुशाल भगुशाल आ खेद वर्णन्या हे ते उपर क्षयु ज हे विभाना अदार विभाग हे ते स्त्र, आयतन, पात्र, आर्थमन्य, इन्द्रिय प्रवीत्यममुन्याऽ, इत्या चासनोनी विनृत चर्चा हे. पात्रुरुण्यमा चात्रु, आयतन, करोरेनो स्त्र कोरोमां केवी गेने मंग्रह नाय हे तेनु चर्गन हे. पुण लालगिलिमा जगत्म मठता भिन्न भिन्न लवावनी ल्यान्दिभोनु चर्चासारण कर्गु हे. गमतम प्रधनोऽ अने नेना उत्तर हे. पटानमा शोशीष प्रवग्या कर्गुने प्रवग्यो रुशाल भगुशाल अने अन्याहूत मापे केवी सवध हे ए सत्तान्युं हे

आ मात्र ग्रंथोगा ने पदार्थोंनो उदारोद कर्यो हे तेसाना ग्रामपूर्वांनो मंग्रह भगुशदानार्थे अभिधर्मग्रामग्रह ग्रथमा कर्गु हे अभिवर्षया मे अर्हं वृद्धे पदार्थोंने तेनो मंग्रह एसो भा गंगा

अनुरुद्धेन थेरेन अनुरुद्धयसत्सिना ।
 तम्वरड्डे वसन्तेन नगरे राजनामके ।
 तत्य संविविसिडेन रजितेन अनाकुलं ।
 महाविहारवासिनं वाचना-मग्नानिस्ति ॥
 परमत्यं पकामेतुं परमत्यविनिच्छयं ।
 पकरणं कतं तेन परमत्यत्यवेदिना ति ॥”

(थेष कानीविदेशमा कावीरनामना नगरमां उचमकुलमां भन्म पामेला अनुरुद्ध^१ नेवा यशावाङ्गा ते बहुश्रुत ज्ञानी अने परमार्थस्तु जाणनारा अनुरुद्धस्यविरे ताम्ब्रराष्ट्रमां राज नामना नगरमां विशिष्ट चौद्द संग सापे रहेता महाविहारवासी आनायोनी परिशुद्ध परपरातुं भव-
 लंबन कर्त्तने परमार्थ प्रशाशित करवाना हेतुपी आ ‘परमत्यविनिच्छय’ नामनुं प्रकरण रच्युं.)

तेवी ज रीते मद्भ्यसागह ग्रगमा आ प्रकरण सचेये उल्लेप हे. ते आ प्रमाणे

अनुरुद्धेन थेरेन कथिषुरवे नर ।
 पकरण कतं तेन परमत्यविनिच्छये ॥”

(थेष कानीपुरमां अनुरुद्धस्यविरे परमत्यविनिच्छय नामनुं प्रकरण रच्यु.) उपराना श्लोकमां अने आ श्लोकमां बहु करक हे. पहेडामां राजनगरमा रहेती वराने आ प्रकरण रच्युं हतुं एवुं कहुं हे; अने आमां कार्षीपुरमां रच्यु एम कल्यु हे. पहेडामां कार्षीवराने राष्ट्र कल्जु हे अने आमां ‘पुर’ कहयुं हे.

१ आ नदोनो देवभित्र महामग्नितर्नि गिहली आदृतिपात्री लीणा हे.
 शास्त्रके मृळ ग्रन्थ मारी पामे नारी.

२ आ ‘अनुरुद्ध’ कृष्णनो एक शास्त्रवाचीय इमिद्ध शिष्य होनो,
 श्रुतो शुद्धताम भा. ३

आता यत्तो वधेरे गोटाळो हालना पिटोए अभिषम्बत्पसंगहना
अनितम एकमा अवशा 'तुमूर्मोम' नामना विहर संबंधे कर्यो
देनाय छे. दे.निक्र स्थिरे १.म. १८८८ नी सालमा तेने प्राट कोला
'आभवम्भत्पसंगह' नी प्रभावनामा 'तु' शब्द निराळो करी 'मूलसोम-
विहार' लंदाल्पिमा हतो एबु काल्यु छे. परंतु तेनी विरुद्ध दूराबो तुमंगाछ
नामना आचार्य बारमा भेसामा रचेली विभाइनी नामनी टीकामां भद्री
आवेंते तेमा 'तुमूर्मोम' नाम विहार' एबु साट काल्यु छे. एण ते विहार क्यां
इतो तेनो उल्लेख नपी. लेईसाया (लेईगामना आचार्य) नामना
प्रसिद्ध आधुनिक भद्री पंडिते 'परम्पराविहारी' नामनी अभिषम्बत्पसगह
उपर विरुद्ध टीका लव्ही छे. आ टीकानो मुख्य हेतु विभाइनी टीकाना
देखो अनुवाद ए हरे एम देनाइ आवे छे, उत्तो बीमी माहेती पण तेमा
पुष्कल मध्ये छे. परंतु लेईसायाने आधुनिक देतिहासिक पद्धतिनी
पाहीतो न झोकापी तुमूर्मोम विहार नयो इतो अने ते कोणे चाँच्यो ए
निर्जे जे माहोनो आपी छे ते ऐतिहासिक्काइए ग्राव लागती नपी.

नेबो बज्जे तेके — तुमूर्मोम नि एव नामक विहार ॥ उच्च हि
मुद्दमिक्काटीकाय—“ सहिलद्वये तुमूर्मोमविहारे सद्गुरुं पाकांते नि
मादाम्भ विकिगिन्वा करियति ॥ नहि तत्य पण्णेन अत्यो अतिग ॥ मब्बे
पि इद्वाजज्ञा पामादादयो ” ति ॥ एमो किर विहारो आदितो अभ्य-
गिरिरङ्गो अगमहेमीमृताय सोमदेविया कारापितवा यावज्जनना पि सोम-
विज्ञते स्वेव पञ्जायित ॥ तुमूर्मोम एन विमुलमद् परियायो .. सो च
विहारो सहिलसेहि मठापरिवेगेदि माडितो होती नि अतिविय विमुलो
मठन्नो विनियागां हेति । तन्मा सो विमुलवा महन्तवा वितिध्वन्ता
तुमूर्मोमो नि उच्चति ॥

(तुमूर्मोम एड्डे आ नामनो विहार. तुदमित्तना प्रकरणना
टीकामा कला ले के “ मिहुलद्वीपमां तुमूर्मोम विहारमां रहेता संषतुं

भोजन ताडपद्मे बेची करवामा आवे छे; कारणके स्थां ताडपद्मनी उनयोग नयी; सबदा महेलो बोरे नर्दीआधी टांकेन। ” आ विहार पहेलाहेली अमयगिरि राजानो सोमदेवी नामनी पश्चाणिष् कराल्यो; अने तेथी आने पण ते एन नामपी प्रसिद्ध छे. तुमूलशाह विपुलना गर्वनां छे.....
....ते विहारमा नुशी नुशी माइठ इमारतो होवायी ते बहु विपुल, मठान्, अने विन्तीर्ण छे ते विपुल, मठान् अने विस्तीर्ण होवायी तेने ‘तुमूलसोम’ कहे छे.)

अमयगिरि नामनो राना लंगद्वीपिमां यथानो महावंशमां क्यांइ पण उछेत्र मळनो नयी. तो पडी तेनी राणी सोमदेवी अने तेणे बधित्रा तुमूलसोमविहारनी तां शी गात करवी! लेडीआचार्य मुद्दमिक्ता दीकानो उछेठ कर्यै छे. ते कड दीका ढे ते ममजातुं नयी. सिंहलद्वीपिमां ‘मुमङ्गलन्यसादनी’ नामनी ने ‘मुद्दमिक्ता’ नी दीका प्रसिद्ध छे तेमां आ उनारो मळनो नयी; अने ने तेमा होवानुं पण कारण लागतुं नयी. कारण ए छे के तेनो कर्ता सिंहलद्वीपिमो रहेवासी होवायी “मिंहलद्वीपे” लाने एम लागतुं नयी. अर्यान् आ दीका कोइ वडी आचार्ये लाली हदो. ते वडीभाषाना ज लवाइ होय तो तेमा नवाइ नयी. ने आचार्ये करेनुं ‘तुमूलसोमविहार’नुं वर्णन काल्पनिक न हड्डे. लेडीआनार्ये नों तुमूलशाह उपर बनोवेनुं पाणिहत्य पण आवान प्रसारनुं छे. आदो मोटो विहार नो मिंहलद्वीपिमा होत तो तेनो महावंशमा के चीजा कोइ ग्राममा कोइक टेकाणे तो उहांच मळत; अने आने तेनो अवशेष कोइ पण नम्याण् खाचीर्थी मळत. पण मिंहलद्वीपिमां तेनो नरा एग पत्तो नयी.

आ प्रमाणे अनुरुद्धाचार्यनी बाचना मळनी माहीती भवूरी होइ केल्लेरु देहाणे परस्पर विहद् छे; तो पण आ आनार्य काचीपुर (हाडतुं कांसीवर) शाहेमा अथवा तेनी गानुचान् इस्वीमिना । १८ मैसाना

अन्तमा अपरा शारम् भैक्षणा प्रारंभया थया होश मोइए एटलुं अनुमान
हरी शत्रुघ्य हे. मिहन्दीपिंडा प्रस्त्रात पराक्रमवाहुनी गारबीदीनी शरु-
आत १. भ. ११६४नी सालमा थइ; अने ने पठी तेणे ३३ वर्ष एकत्रिती
रात्रय कहु. शोकानी कारबीदीमा बौद्ध चर्मनी उज्जति माटे तेणे अनेक
कामो कर्या, तेणे शोकानी राजधानी पुन्निश्चित्र (मिहनीमा शोलोजरुवा)
नी जगीक भेत्रन नामनो बोटो विहार बैधावी तेमा सारिपुत्र नामना
महास्थविर शाटे निकामस्थान करी आप्यु, एवु वर्णन महावशामा घडे हे
आ सारिपुत्र स्थविरे अनेक ग्रंथो सम्प्रया हे. तेमा सिहनीभाषामा करेली
अधिष्ठमन्त्रमगहनी टीका पण हे. तेना आधारे सुमंगलस्थविर नामना
तेमना शिष्ये विभावनी टीका पालीभाषामा लव्ही, अर्थात् अनुरुद्धाचार्यनो
समय सारिपुत्रस्थविर पहेला ओकामा ओळा एचाश वर्ष पहेला होयो नोइए

हम्बीमनना अर्गजारमा शत्रुघ्ना अन्तमा दक्षिण हिन्दुस्थानमा
कट्टनीवरनी आमुकामु थणा प्रपत्तरो थइ गया. गंपवंशमा कर्मु हे के--
“ मुददताचरियो, आनन्दाचरियो, घम्पालाचरियो, द्वे पुञ्चाचरिया,
महावनिरुद्धाचरियो, चुलवनिरुद्धाचरियो, दीपंकराचरियो, चुलघम्प-
पालाचरियो, कम्पणाचरियो नि इमे द्रमाचरिया नम्भुदीपिका हेहा-
वुत्पकारे गन्ये अकंमु. ”

आमा ‘पुञ्चाचरिया’ (पूर्वाचार्य) कोण हता ए समझाउं नपी
बहरीना आचार्यी विषे पण अनुरुद्धाचार्य प्रमाणे तेमना ग्रंथो उपरात
वधारे माहीती मल्हनी नपी. आनुं कारण एवुं होयो के आ आनयों पडी
पोहा समये अन्यन्त असहिष्णु शैखर्मनो प्रचार दक्षिण हिन्दुस्थानमा
थयो. नामिलभाषामा हलमाहात्म्य नमनुं एक पुस्तक हे, अने तेमा
एल नामना दोष मन्त्रामीण बौद्धो अने जैनोनो केखी रीते नाश कर्णे तेनुं
विस्तृत वर्णन हे. एवु माग साभलवामा आन्युं हे. आवी नितिमा
कठीनीवरनी आनु बासु नेपालेजा बीदूविहारनु नाम पण नधी एमा शुं

आश्वर्ये छे? मारा विचार प्रमाणे हुमूलसोमविहार पग आग प्रदेशानं हतो; अने जे 'नंद' नाना गृहस्थे 'अभिगम्भत्यमंगद' लालवानी अतुरुद्धाचार्यने प्रार्थना करेली ते पग नामिल नानिनो हतो. आ सर्व आचार्योना ग्रंथो सिंहलद्विषिमां पहेंची गया होताथी आने हयात छे; नहिं तो तेओना विद्वारोनी जे गति यड ते नेओना ग्रंथोनी पण थान ते कहेवानी जरुर नथी.

आ ग्रंथानुं मंशोगत मोटे यांगे ब्रण नुदा नुदा दुस्तकोने आवारे करेलुं छे. तेपानु पढेलुं हेवियन्तुट्टवे देवमित्रन्यविसे बुद्ध मंवन् '२४३२' अपवा इस्तीमन १८८८ना मालमां निहलीलिपिमां कोळ्डोमां प्रसिद्ध करेलुं छे. तेना पाठमेदो 'मी' अक्षराथी बनावेला छे. बीनूं विभावनी टीका साथे ब्रयी शब्द १२६८नी मालमां कविनेम्हायेमे रगुनमां प्रसिद्ध करेलु पुस्तक छे. आमाना पाठमेद 'म' अक्षराथी बनावेला छे. तीनुं पाली टेक्स्ट सोसायटीए १८८४नी मालमां पोनाना नर्नरमा गोमनाविपिमा प्रसिद्ध कर्यु छे. आनुं संशोधन जोके पालिभाषाना प्रसिद्ध विट्ठान् प्रो. हीस डेवीडसे कर्यु छे छतां से बराबर शुद्ध न ढुँवाथी तेना पाठमेद नॉव्या नथी. 'आरम्भण' शब्द मिहली आवृत्तिमां 'आछम्बन' त्वये अने ब्रजी आवृत्तिमां 'आलम्बण' रूपे मझे छे. परतु मूळ 'शम्भसगणि' बगेरे ग्रंथोमां 'आरम्भण' शब्द ज आवानो होवाथी अन दरंक जगाए कन रूप रहे एवा हेतुथी तेन रूपनो न्वीसार कर्यो छे. 'नोदुपन' शब्द मिहली आवृत्तिमा 'बोत्यपन' अने ब्रजी आवृत्तिमा 'बोट्यबन' अने पालिटेक्स्टसोसायटीनी आवृत्तिमा 'बोत्यप्पन' रूपे मझे छे. आ उपगत बीमा नहि जेता केरकारो नुदी नुदी आवृत्तिभोमा छे. परतु विभावनी टीका अने लेन्डी आचार्यनी परमत्यदीपनी टीकाना भाधारे चर चर विचार करी जै पाठ योग्य लाग्या तेन न्वीसार्यो छे. विन्तारना नयाथी खोदा पाटोनो निर्देश कर्यो नथी. पण उनी बजे पाठ न्वीकारवाथी भग बन

रेती रहे एवं दूषित परारे थोग्य वा भूमि कीने पाठ
द्वारा अतिले हे.

इटर्चन्प्रार्थ शरिमानवे 'अनुभवि' रहे हे. मिट्टी अने मध्यी
सात्त्वदना घोड़ो इत्यका गुणों प्रयत्ने परिमात्र वाहानी पढ़ति
थाय, काहि अनुभवित्वांक खिलो हे, एवं तेनो उपर्योग देवक नगर
द्वारा देवर्णे दृष्टि देवानो नपी तात्त्वदास प्रदेश बोड होतापी भस्तर
गाल उपर्योगे वरद म होय तो। मिट्टी लड्डीभोज (तात्त्वद लेपन)
अनुभवित्वा देवर्णे नपी अबे हे. आपी पाती घोड़ों पारिमाक
सात्त्वदु वाम परिष्या आनुभवित गर्दोपर्वते मापे रहे देवमिश्र पृथिविनी
मिट्टी अनुभवित्वा पारिमात्र हे एवं ओरटापी तेनो निर्देश करेणो नपी
मध्यी अने सात्त्वदिक्ष गोम इटीनी आवृत्तिघोड़ो पारिमात्रनी पठी ओरटा
एवं रात्रु ज्ञाने शावृत्तिघोड़ो परिमात्रनी पढ़ति गुरी शुद्धी हे.
आपे हे एवं पठति नपी गवाच्छरी मारी हे. अनुष्टुप्मणिगानुं वाम रहेलु
पाद दाटे देवमात्र पठी ओरटा शुद्धीला हे. कोर्म उपाया पछी केंद्र
वोर्द देवमिश्र अनुभवित्वा देवर्णी, मात्रा वगो उटी गोला देवाया पण
देवक इटिमा एकु नहि होय एवं खारी तेनु दुँ शुद्धिप्रयत्र आप्यु
करी, तुरात वामदान गर्दसो आवे खुलो तत ज आपी श्वेत
पूर्णी आदान हे.

एवं एकार गूमगान विद्यार्थि व्यापित्र शुगतत्त्वमंदिर मार्फत
तेनो अनुभव हेतानी तेनी प्रगताना गूमगानी भाषामो ज छम्भी योग्य
मणात, पग तेनु मने पूरतु शान नपी गूमगान शुगतत्त्व मंदिरना मन्त्री
थी, रमित्ताल छोलालाल परिमात्री गूमगानी अनुयाद करवाना वाममां
मार्द ज मध्यी होन तो तेम न रख्यु अदात्य थात. आ पाद माटे तेमना

कामरी थुं. बीमा प्रांतना वाचको तेनो घोशो रजो उख्येन द्वीपे
र हेतुभी प्रस्तावना नागरी छीरिया आरी छे.

गृहरात पुरातत्त्व मंदिर, काल्पनुन वद ४ मं. १९७९	पर्मानंद कोसम्बी.
--	-------------------



अभिधम्मत्यसंगहो

१.

(चित्तसंगहविभागो.)

नमो हम्म भगदहो अरहतो सम्मानेषुदस्ता ।

१. सम्मानेषुदम्भुले ससद्भ्यगणुत्तमे ।

अभिशादिय भासिम्भे अभिधम्मत्यसंगहे ॥

वत्य युताभिधम्मत्या चतुर्पा परमत्यतो ।

चिरे देवमिके रूपं निष्पानमिति सन्ध्या ॥

२. वत्य चित्तं ताव चतुर्विषये होति, कामावचरं, रूपावचरं, अरूपावचरं, लोकुचरं देति ॥

३. वत्य कतमं कामावचरं? सोपनस्तसहगते दिहिगतसंपुर्त असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । सोपनस्तसहगते दिहिगतविषये युते असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेत्तासहगते दिहिगतसंपुर्त असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेत्तासहगते दिहिगतविषये युते असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि अहु पि लोभसहगतानि चित्तानि नाम ॥

४. दोपनस्ममहगते पटियसंपुर्त असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि द्वे पि पटियचित्तानि नाम ॥

५. उपेत्तासहगते विचिकिच्छामंपुर्तमेकं, उपेत्तासहगते उद्दशमंपुर्तमेकं ति इमानि द्वे पि मोगूदचित्तानि नाम ॥

इत्येवं सन्ध्या पि द्वादसाहुसङ्खचित्तानि समचानि ॥

६. अदृशा छोभमूलानि दोसमूलानि च द्विषा ।
मोहमूलानि च द्वे ति द्वादसाहुसङ्गा सियुं ॥

७. उर्वरसासहगतं चरसुविज्ञाने । तथा सोतविज्ञाने, पानी
ज्ञाने, निन्दाविज्ञाने । दुर्बस्त्रसहगतं काषयविज्ञाने । उर्वरसासहगतं
मंसटिर्जननिते । उर्वरसासहगतं सन्तीरणनिते चेति इमानि सह
ति अहुमनविशाकचित्तानि नाम ॥

८. उर्वरसासहगतं चरसुविज्ञाने । तथा मोतविज्ञाने, पानी
ज्ञाने, निन्दाविज्ञाने । गुरामहगतं काषयविज्ञाने । उर्वरसासहगतं
मंसटिर्जननिते । गोपनस्मगमहगतं मंतीरणनिते । उर्वरसासहगतं
संतीरणनिते तेति इमानि भद्रे ति गुग्गात्तरिगाहेतुरुग्गितानि नाम ॥

९. उर्वरसासहगते पश्चायारात्तनगिरो । तथा मनोद्वारारात्तनगि-
रिते । गोपनस्मगमहगते इग्गिगुग्गात्तरिते तेति इमानि नीणि ति
गहेतुरुग्गिताचित्तानि नाम ॥

१०. इत्थो भवया ति भद्रास्त्रगाहेतुरुग्गितानि गमगानि ॥

११. गामाहुग्गात्तरात्तानि गुग्गात्तात्तानि भद्रुगा ।

कियाचित्तानि नीणि ति भद्रास्त्र भद्रेतुरु ॥

१२. गामाहेतुरुग्गात्तानि गोपनानी ति गुगरे ।

एहतर्गाहेतुरुग्गितानि भग्गेहनारे ति वा ॥

१३. संस्पर्शस्त्रसहगते लाग्नीगृहे भग्गेत्तात्तिरेह, गतेत्तात्ति-
रेह । संस्पर्शस्त्रसहगते लाग्नीगृहे भग्गेत्तात्तिरेह, गतेत्तात्ति-
रेह । उर्वरसासहगते लाग्नीगृहे भग्गेत्तात्तिरेह, गतेत्तात्ति-
रेह । उर्वरसासहगते लाग्नीगृहे भग्गेत्तात्तिरेह, गतेत्तात्तिरेह
ति इवानि अहु ति लामारात्तरुग्गात्तरितानि नाम ॥

१४. संस्पर्शस्त्रसहगते लाग्नीगृहे भग्गेत्तात्तिरेह, गतेत्तात्ति-
रेह । एकस्त्रस्त्रसहगते लाग्नीगृहे भग्गेत्तात्तिरेह, गतेत्तात्ति-

येकं । उपेत्तदासारगतं आणमंपयुनं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेत्तदासारगतं आणविष्पयुतं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि अहृ पि सदेत्तुक्षामावचरविपाकचित्तानि नाम ॥

१४. सोमनससगमारगतं आणमंपयुनं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । सोमनससगमारगतं आणविष्पयुतं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेत्तदासारगतं आणमंपयुतं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेत्तदासारगतं आणविष्पयुतं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि अहृ पि सदेत्तुक्षामावचरविपाकचित्तानि नाम ॥

इत्येवं मन्त्रया पि चतुर्वीसति सदेत्तुक्षामावचरहुसलविपाकचित्तानि भवतानि ॥

१५. वेदनाथाणसंखारमेदेन चतुर्वीसति ।

सदेत्तुक्षामावचरपूञ्चपाकक्रिया भवा ॥

१६. कामे तेवीस पाकानि पुञ्चापुञ्चानि धीसति ।

एकादस प्रिया चेति चतुरपञ्चास सम्यथा ॥

१७. वित्तविचारपीतिमुखेकगतासहितं पठमज्ञानहुसलचित्तं । विचारपीतिमुखेकगतासहितं दुतियज्ञानहुसलचित्तं । पीतिमुखेकगतासहितं त्रितियज्ञानहुसलचित्तं । सुखेकगतासहितं चतुर्त्यज्ञानहुसलचित्तं । उपेत्तदेशगतासहितं पञ्चमज्ञानहुसलचित्तं चेति इमानि पञ्च पि रूपावचरहुसलचित्तानि नाम ॥

१८. वित्तविचारपीतिमुखेकगतासहितं पठमज्ञानविपाकचित्तं । विचारपीतिमुखेकगतासहितं दुतियज्ञानविपाकचित्तं । पीतिमुखेकगतासहितं त्रितियज्ञानविपाकचित्तं । शुखेकगतासहितं चतुर्त्यज्ञानविपाकचित्तं । उपेत्तदेशगतासहितं पञ्चमज्ञानविपाकचित्तं चेति इमानि पञ्च पि रूपावचरविपाकचित्तानि नाम ॥

१९. वित्तविचारपीतिमुखेषगतासहितं पठमज्ञानक्रियाचित्तं ।

विचारपीति मुखेकगतासहितं द्रुतियज्ञानक्रियाचित्तं । पीतिमुखे कगतासहितं ततियज्ञानक्रियाचित्तं । मुखेकगतासहितं चतुर्त्यज्ञानक्रियाचित्तं । उपेक्षेकगतासहितं पञ्चमज्ञानक्रियाचित्तं चेति इमानि पञ्च पि रूपावचरक्रियाचित्तानि नाम ॥

इयते सन्ध्या १५ पश्चस् रूपावचरकुसलविपाकक्रियाचित्तानि समत्तानि ॥

२०. पञ्चमा ज्ञानभेदेन रूपावचरमानसं ।
पुञ्चमाकक्रियाभेदा तं पञ्चदसधा भवे ॥

२१. आकासानश्चायतनहुसलचित्तं । विज्ञाणश्चायतनहुसलचित्तं । आकिञ्चञ्चायतनहुमलचित्तं । नेव सञ्चानासञ्चायतनहुसलगितं चेति इमानि चतारि पि अरूपावचरहुमलचित्तानि नाम ॥

२२. आकासानश्चायतनविपाकगितं । विज्ञाणश्चायतनविपाकगितं । आकिञ्चञ्चायतनविपाकगितं । नेव मञ्चानामञ्चायतनविपाकगितं चेति इमानि चतारि पि अरूपावचरविपाकगितानि नाम ॥

२३. आकाशानश्चायतनक्रियागितं । विज्ञाणश्चायतनक्रियागितं । भास्त्रज्ञायतनक्रियागितं । नेव मञ्चानामञ्चायतनक्रियागितं । चेति इमानि चतारि पि अरूपावचरक्रियागितानि नाम ॥

इयते सन्ध्या पि द्वादश अरूपावचरहुग्राहकविपाकपि-
तानि समत्तानि ॥

२४. आद्यमनष्टभेदेन चतुर्थादपानर्थं ।
तृतीयाकक्रियाभेदा गूढ द्वादशाया द्विं ॥

२५. चोद्याभिपाकवित्तं । द्वादशाभिपाकवित्तं । भवानाविष-
विचित्तं । अद्यनवगावित्तं चेति इमानि चतारि पि ओडगाड-
भार्दकिलानि नाम ॥

२६. सोवापचिकलचितं । सकदागामिकलचितं । अनागामि-
फलचितं । अरहतफलचितं चेति इमानि चत्तारि पि लोकुचरणि-
पाकचित्तानि नाम ॥

इयेवं सन्ध्या पि अटु लोकुचरणुसल्लिपापचित्तानि समत्तानि ॥

२७. चतुषगणप्यमेदेन चतुरा कुसलं तथा ।

पांकं चस्त्रं फलत्ता ति अद्वपानुचरं यत्वं ॥

२८. द्वादसाहुसलानेवं दुसलानेकवीसति ।

छर्चिसेव विषाक्तानि शिष्याचित्तानि वीसति ॥

२९. चतुर्ब्जात्तथा कामे रूपे पद्मरसीरये ।

चित्तानि द्वादसाह्ये अद्वपानुचरे तथा ॥

इत्यमेवून्नयुतिष्पमेदं पन मानसं ।

एकवीरासतं वाय विभजन्ति विच्छब्दणा ॥

३०. कथं एहैननयुतिविष्पं चित्तं एक्षोससतं होति । विषफरि-
शारपीतिमुखेकगतासहितं पठमज्ञानसोवापचिमगचितं । रिचार
पीतिमुखेकगतासहितं दुवियज्ञानसोवापचिमगचितं । पीतिमुखे-
कगतासहितं उत्तियज्ञानसोवापचिमगचितं । मुखेकगतासहितं
चतुर्ब्जानसोवापचिमगचितं । उपर्युक्तगतासहितं पञ्चमज्ञान-
सोवापचिमगचितं चेति इमानि पञ्च पि सोवापचिमगचित्तानि
नाम ॥ तथा सकदागामिमग-अनागामिमग-अरहतमगचितं चेति
समवीसति मगचित्तानि । तथा फलचित्तानि चेति समचत्तान्नीस
लोकुचरचित्तानि भवन्ती ति ॥

३१. क्षान्तगपोगमेदेन कल्येत्तेकं तु पश्या ।

षुघ्नानुचरं चित्तं चत्तान्नोस दिष्टं ति च ॥

यथा च रूपावधरं गणतानुचरं तथा ।

पठमाद्विज्ञानमेदं आह्ये शार्पि पञ्चये ॥

एकादसविंशति वस्त्रा पठमादिकपीरितिं ।
 ज्ञानमेंकेरुमन्ते तु तेवासनिविष्टं भवे ॥
 सत्तर्विंसविष्टं पुञ्चं द्विपञ्चासविष्टं तथा ।
 पाठमिथ्याहु विचानि एकवीससतं शुष्ठा ॥

इनि अभिधमत्यसंगहे चित्तसंगदविभागो नाम पठमो परिच्छेदी ॥

—१२२२९६—

२.

(चेतसिकसंगदविभागो.)

१. एकादनिरोधा च एकालम्बनवत्तुका ।
 नेतोयुक्ता द्विपञ्चास पम्या नेतमिका मता ॥
२. कथे ? फःसो, वेदना, सञ्चारा, नेतना, एकगता, जीरिणि-
 दिये, नेतमिकारो नेति गतिमें नेतमिका सब्दविचारणापारणा नाम ॥
३. तिर्थो, विचारो, अविषोरखो, गिरिये, पीति, छन्दो आ
 ए इसे नेतमिका विचारणा नाम ॥ एरपें तेरण नेतमिका
 भद्रवागमाना ति वेदितव्या ॥
४. पाठो, भद्रिरिख, भनोत्तरी, उद्गं, ओपो, द्विदि, मानो,
 हांसो, इच्छा, मार्त्तिये, दुष्टुरी, पीते, पिदे, विगिरिखण। वेति
 नुदमिये नेतमिका भहुगता नाम ॥
५. गटा, गति, दिरि, ओत्तरी, भलोपो, भद्रोगो, तप्तपात्त-
 ना, वायाम्यादि, वित्ताग्निदि, वायद्वृत्ता, वित्तद्वृत्ता, वायागृह्ण-
 ना, वित्तागृह्णना, वायद्वृत्ता, वित्तद्वृत्ता, वायागृह्ण-
 ना, वित्तागृह्णना, वायद्वृत्ता, वित्तद्वृत्ता, नेति एहनी-
 द्विदेव नेतमिका भीमवागमापारणा नाम ॥

६. सम्मावाचा, सम्माकम्मन्तो, सम्माभानीवो चेति विस्सो विरवियो नाम ॥

७. करणा-मुदिता पन अप्पमञ्जायो नामा ति सम्बया पि पञ्चन्द्रियेन सद्गुणवत्तिमे चेतसिका सोभना ति यंदितव्या ॥

८. एचावडा घ-

तेरसञ्जसमाना घ शुद्धसाकुसला तथा ।

सोभना पञ्चवीसा ति द्विपञ्जास पवृत्तरे ॥

९. तेसं चिचावियुक्तानं यथायोगमित्रो परं ।

चिचुप्पादेमु पचेकं संपयोगो पवृत्तति ॥

सत्र सम्बत्य युज्ञन्ति यथायोगं पक्षिण्णका ।

शुद्धसाकुसलेस्येव सोभनेस्येव सोभना ॥

१०. कथं ? सम्बचिच्छसापारणा ताव सत्र चेतसिका सम्बेद्य पि एकादसमुत्तिचिचुप्पादेमुःलम्भन्ति ॥

११. पक्षिण्णांमु पन वितको ताव द्विपञ्चविज्ञाणवज्जितकामा-
वचरविचेमु चेव एकादसमु पठमञ्जान चिचेमु चेति पञ्चपञ्जास-
चिचेमु उप्पन्ननि ॥ विचारो पन तेमु चेव एकादसमु दुरियज्ञान-
चिचेमु चेति उसट्टिचिचेमु जायति ॥ अथिमोक्तसो द्विपञ्चविज्ञाण-
विचिकित्त्वावज्जितचिचेमु ॥ विरियं पञ्चद्वारावज्जनन-द्विपञ्चवि-
ज्ञाण-संपदित्तन-संतीरणवज्जितचिचेमु ॥ पीति दोमनसमुपे-
यत्वासहगत-कायविज्ञाण-चतुन्थञ्जानवज्जितचिचेमु ॥ उन्दो अहे-
तुक-मोमूहवज्जितचिचेमु लम्भति ॥

१२. ते पन चिलुप्पादा यथाक्रमं-

उसट्टि पञ्चपञ्जास एकादस च सोब्दस ।

सत्रति शोसति चेव पक्षिण्णकविवज्जिता ॥

पञ्चपञ्चास छसटिष्ठसत्तंति विसत्तति ।

एकपञ्चास चैकूनसत्तति सपकिणका ॥

१३. अकुसलेषु पन मोहो, अहिरिकं, अनोचर्पं, उद्धर्वं चेति
चत्तारोमे चेतसिका सञ्चाकुसलसाधारणा नाम । सब्बेषु पि द्वाद-
साकुसलेषु लभ्मन्ति ॥ लोभो अष्टशु लोभसहगतचित्तेस्येव लभ्मति ॥
दिद्धि चतुषु दिद्धिगतसंपयुत्तेषु ॥ मानो चतुषु दिद्धिगतविष्टु-
तेषु ॥ दोसो, इस्सा, मच्छरियं, कुकर्वं व द्वीषु पटियचित्तेषु ॥
यीनं, मिद्दं पञ्चषु संसंखारिकचित्तेषु ॥ विचिंकिच्छा विचिकिच्छा-
सहगतचित्ते येव लभ्मती ति ॥

१४. सञ्चापुञ्जेषु चत्तारो लोभमूले तथो गता ।

दोसमूलेषु चत्तारो संसंखारे द्वयं तथा ॥

विचिकिच्छा विचिकिच्छाचित्ते चेति चुद्दस ।

द्वादसाकुसलेस्येव संपयुजन्ति पञ्चासा ॥

१५. सोभनेषु पन सोभनसाधारणा ताव एकूनवीसति चेतसिका
सन्वेषु पि एकूनराटिसोभनचित्तेषु संविज्ञन्ति ॥ विरतियो पन
निस्सो पि लोकुत्तरचित्तेषु सञ्चया पि नियता एकतो व लभ्मन्ति ।
लोकियेषु पन कामावचरकुसलेस्येव कदाचि संदिस्मन्ति विग्रुं विग्रु ॥
अप्पपञ्चासये पन द्वादसषु पञ्चपञ्चासनविज्ञतपहगतचित्तेषु चेत
कामावचरकुसलेषु च सदेतुकामावचरकिमाचित्तेषु चेति अड्डीसति-
चित्तेस्येव कदाचि नाना हुत्या जायन्ति ॥ उपेक्षासासहगतेषु पनेत्य
फरगाहृदिता न सन्ती ति केचि बदलि ॥ पञ्चास पन द्वादसषु
वाणसंपयुत्तरामावचरचित्तेषु चेत सब्बेषु पञ्चरितपहगतकोहृषर-
चित्तेषु येति सत्तपत्तात्रीसचित्तेषु संपयोगं गच्छती ति ॥

१६. एकूनवीसति पम्मा जायनेकूनमहिषु ।

तयो सोऽव्युचितेषु अड्डीसतियं द्वयं ॥

एवं एकाग्रिना रात्रचत्ताचीमविपेतु रि ।

गंपयुषा चतुर्देवं सोभनेस्यं च माभना ॥

१७. इस्सामच्छेर-नुयुष-विरती-करणादयो ।

नाना कदाचि मानो च यीनमिद्दं तथा सह ॥

यथायुषानुसारेन संसा नियमयोगिनो ।

गंगां च पवरत्यामि तेमं दानि यथारहं ॥

१८. उचित्तानुचरे घम्मा पञ्चतिंग पद्मगते ।

अद्वितिसापि भवन्ति कामावचरसोमने ॥

सत्त्वीमत्यपुञ्ज्वग्निः द्वादसाहेतुके ति च ।

यथार्थभवयोगेन पञ्चधा तत्य संगत्तो ॥

१९. कथं ! लोकुत्तरेतु ताव अद्यु पठमज्ञानिकचित्तेतु अञ्ज-
समाना तेरस चेत्तसिका, अप्पमञ्जावज्जिता तेवीसति सोभनवेत-
सिका चेति उचित्तस घम्मा गंगां गच्छन्ति ॥ तथा दुतियज्ञानिक-
चित्तेतु वित्तवज्ज्ञा ॥ ततियज्ञानिकचित्तेतु वित्तविचारवज्ज्ञा ॥
चतुर्थज्ञानिकचित्तेतु वित्तविचारपीतिवज्ज्ञा ॥ पञ्चमज्ञानिकचि-
त्तेतु उपेक्षवदामहगता ते एव मंगयहन्ति ति सम्बया पि अद्यु
लोकुत्तरचित्तेतु पञ्चकज्ञानवत्तेन पञ्चधा व संगत्तो होती ति ॥

२०. उचित्तस पञ्चतिंसापि चतुर्तिंस यथास्मै ।

तेचित्तस दूयमित्येवं पञ्चधानुचरे दिता ॥

२१. पद्मगतेतु पन कीमु पठमज्ञानिकचित्तेतु ताव अञ्जसमाना
तेरस चेत्तसिका विरतित्यवज्जिता द्वावीसति सोभनवेत्तसिका वेति
पञ्चतिंस घम्मा संगां गच्छन्ति ॥ करणामुदिता पनेत्य पञ्चकमेव
योजेवद्वा ॥ तथा दुतियज्ञानिकचित्तेतु वित्तवज्ज्ञा । ततियज्ञा-
निकचित्तेतु वित्तविचारवज्ज्ञा ॥ चतुर्थज्ञानिकचित्तेतु वित्तवि-
चारपीतिवज्ज्ञा ॥ पञ्चमज्ञानिकचित्तेतु पन पञ्चरसमु अप्पमञ्जायो

पञ्चपञ्चास छसद्विसत्तंति त्रिसत्तंति ।

एकपञ्चास चेकूनसत्तंति सपकिण्णका ॥

१३०. अद्युसलेमु पन मीहो, अहिरिं, अनोरप्पं, उद्धर्वं वं
चत्तारोमे नेवसिका सन्वाकुसलसाथरणा नाम। सन्वेमु पि द्वा
साकुसलेमु लभन्ति॥ लोधो अद्युमु लोमसदगवचिचेस्वेव लभन्ति
दिडि चद्यु दिडिगवसंपयुत्तेमु ॥ मानो चद्यु दिडिगवविष्य
त्तेमु ॥ दोसो, इस्सा, मन्छरियं, कुक्कर्वं व द्वीमु पटियचित्तेमु
यीनं, मिद्दे पञ्चमु संखारिकचित्तेमु ॥ विचिकिच्छा विचिकिच्छा
सदगवचिचे येव लभवी दि ॥

१४. सन्वापुञ्चेमु चत्तारो लोभमूले तयो गगा ।

दोसमूलेमु चत्तारो संसंखारे द्वयं तया ॥

विचिकिच्छा विचिकिच्छा चेति चुदस ।

द्वादसाकुसलेस्वेव संपयुठजन्ति पञ्चवा ॥

१५०. सोभनेमु पन सोभनसाधारणा ताव एकूनवीसत्ति वेतसि
सन्वेमु पि एकूनसद्विसीभनचित्तेमु संविजनन्ति ॥ विरवियो प
विस्सो पि लोकुत्तरचित्तेमु सञ्चया पि नियत्रा एकत्रो व लभन्ति
लोकियेमु पन कामावचरकुसलेस्वेव कदाचि संदिस्मन्ति विमुं विमुं
अष्टपञ्चायो पन द्वादसमु पञ्चपञ्चानवडिनवमहगवचित्तेमु वं
कामावचरकुसलेमु च संदेवक्कामावचरकियाचित्तेमु चेति अद्वीसि
चिचेस्वेव कदाचि नाना हुत्ता जायन्ति ॥ उपेक्खासदगतेमु पनेत
फणगामुदिवा न सन्वी ति केचि वदन्ति ॥ एञ्जा पन द्वादसा
आणसंपयुत्तकामावचरचित्तेमु वेव सन्वेमु पञ्चतिसमहगवलोक्तर
चित्तेमु चेति सचचत्तावीसचित्तेमु संपयोगं गच्छती वि ॥

१६. एकूनवीसति पम्या जायन्तेकूनसद्विमु ।

तयो सोबुचित्तेमु अद्वीसवियं द्वयं ॥

पञ्चा पञ्चामिता मध्यवच्चाल्लीमविषेषु नि ।

संपतुता चतुर्देवं सोभनेस्येव सोभना ॥

१७. इस्ता-मन्त्रे-त्रिपुष्ट-विरती-करणादयो ।

नाना कदाचि पानो च यीनपिद्व तथा सह ॥

यथातुतानुमारेन सेसा नियनयोगिनो ।

संगर्ह च पदवरखामि तेम दानि यथारह ॥

१८. उत्तिसामुच्चरे पम्पा पञ्चनिंग पहगते ।

अद्वितिसापि सम्बन्धि पापावचरसोभने ॥

सत्त्वामत्यपुञ्जमिद द्वादसादेतुके नि च ।

यथामेभवयोगेन पञ्चथा सत्य संगहो ॥

१९. कथं ? लोकुत्तरेषु ताव अद्वमु पठमज्ञानिकचित्तेषु अञ्जन-
समाना तेरस नेतसिका, अप्पमञ्चावज्जिता तेवीसति सोभनवेत-
सिका वेति उत्तिस पम्पा संगर्ह गच्छन्ति ॥ तथा दुनियज्ञानिक-
चित्तेषु वित्तवज्ज्ञा ॥ तत्त्वियज्ञानिकचित्तेषु वित्तकविचारवज्ज्ञा ॥
चतुर्थज्ञानिकचित्तेषु वित्तविचारपीतिवज्ज्ञा ॥ पञ्चमज्ञानिकचि-
त्तेषु उपरखामहगता ते एव संगश्चन्ति ति सम्बया षि अद्वमु
लोकुत्तरचित्तेषु पञ्चरुज्ञानवरसेन पञ्चथा च संगहो होती ति ॥

२०. उत्तिस पञ्चनिंग चतुर्तिस यथामर्य ।

तेत्तिस द्वयमिष्येवं पञ्चथानुचरे दिवा ॥

२१. महगतेषु पन तीमु पठमज्ञानिकचित्तेषु ताव अञ्जसमाना
तेरस वेतसिका विरतित्यवज्जिता द्वाधीसति सोभनवेतसिका वेति
पञ्चनिंग पम्पा संगर्ह गच्छन्ति ॥ करणामुदिता पनेत्य पद्मेव
योजेतन्वा ॥ तथा दुनियज्ञानिकचित्तेषु वित्तकवज्ज्ञा । तत्त्वियज्ञा-
निकचित्तेषु वित्तविचारवज्ज्ञा । चतुर्थ ज्ञानिकचित्तेषु वित्तकवि-
चारपीतिवज्ज्ञा ॥ पञ्चमज्ञानिकचित्तेषु पन पञ्चरसमु अप्पमञ्चायो

न लब्धन्ती ति सञ्चया; पि सच्चवीसतिमहगातचित्तेषु, पञ्चकज्ञानं
वसेन पञ्चया व संगहो होतीः ति ॥

२२. पञ्चनिंस चतुर्विंश तेचिंस च यथाकर्म ।

वचिंस चंव तिंसति पञ्चया व महगते ॥

२३. कामावचरसोभनेषु पन कुसलेषु ताव पठमद्वये अञ्जसमाना
तेरस चेनमिका, पञ्चवीसनि सोभनवेनसिका चेति अट्टर्विंश षष्ठा
संगहे गच्छन्ति ॥ अप्पमङ्गावरनियो पनेत्य पञ्च पि पञ्चरुपेन
योजेनव्या ॥ तथा दुनियद्वये आणवज्जिता । वितियद्वये बाणमंप-
युता पीनिवज्जिता । चतुरुत्थद्वये आणपीतिवज्जिता ते एव मंगद्वन्ति ॥
क्रियाचिरेषु पि विरनिवज्जिता तथेन चतुर्षु पि दुर्षेषु चतुर्था च
संगद्वन्ति ॥ तथा विशारेषु च अप्पमङ्गाविरविवज्जिता ते एव
सीगद्वन्ती ति सञ्चया पि चतुर्वीसतिकामावचरसोभनविचेषु दुर्ष-
वरोन व्यादसथाव तंगहो होती ति ॥

२४. अट्टर्विंश मत्तनिंस द्वये छतिंसर्ह घुमे ।

पञ्चनिंस चतुर्विंश द्वये तेचिंसर्ह क्रिये ॥

तेचिंस पाके षण्ठिंस द्वयेष्टर्विंशर्ह भरे ।

मंगद्वन्तीकामावचरयून्नपाकद्वियापने ॥

न रित्तनीन्य विरली क्रियागृ च महानो ।

भनुनरे अप्पमङ्गाकामाह द्वये तथा ॥

अनुनरे भानपम्या अप्पमङ्गाच मणिश्वरे ।

विरली बाणरीती च परितेषु रित्तेगदा ॥

२०. अद्वमलेषु पन छोभम्येषु तार पडमे अर्तारारिके अद्वमा-
माना तेगा चेनमिका, अद्वमलमारारागा चनारे चा ति गुणता
छोभदिविति भद्रि एद्वनीमति चम्या खंगहे गच्छन्ति ॥ तथेन

दुतिये असंखारिके लोभमानेन । ततिये तयेव धीतिवज्जिता लोभ-
दिहीहि सह अद्वारस । चतुर्थे तयेव लोभमानेन ॥

२६. पञ्चमे पन पटिष्ठसम्पयुते असंखारिके दोसो, इस्सा, मच्छ-
रियं, कुमुखं चेति चतुर्थे सर्दि धीतिवज्जिता ते एव वीसनि धम्मा
संगयन्ति ॥ इस्सापञ्चेत्कुमुखानि पनेत्य पञ्चेकमेव योजेतब्बानि ॥
संसंखारिकपञ्चके पि तयेव धीनमिद्देन चिसेसेत्वा योजेतब्बा ॥

२७. छन्दपीतिवज्जिता पन अञ्चसमाना एकादस, अकुसलसा-
थारणा चत्तारो चा ति पञ्चरस धम्मा उद्दधसहगते सम्पयुज्जन्ति ॥
विचिकिच्छासहगतचिते च अधिमोक्षविरहिता विचिकिच्छासह-
गता तयेव पञ्चरस धम्मा समुपलब्धन्ती ति सन्धया पि द्वादसाकु-
सलचित्तुप्पादेष्टु पञ्चेके योनियमाना पि गणनवसेन सत्तधा च
संगहिता भवन्ती ति ॥

२८. एकनवीसद्वारस वीसेकवीस बोसति ।

द्वावीस पञ्चरसेति सत्तथाकुसले ठिता ॥
साथारणा च चत्तारो समाना च दसापरे ॥
कुइसेवे पञ्चवन्ति सन्धाकुसलयोगिनो ॥

२९. अहेतुकेमु यन इसनचिचे हाव छन्दवज्जिता अञ्चसमाना
द्वादस धम्मा संगहै गच्छन्ति । तथा बोहपने छन्दपीतिवज्जिता न
मुखसंतीरणे छन्दविरियवज्जिता । पनोधातुतिकाहेतुकपटिसन्धि-
युगले छन्दपीतिविरियवज्जिता । द्विपञ्चविज्ञाणे पकिणणकवज्जिता
ते येत्र संगयन्ती ति सन्धया पि अद्वारसमु अहेतुकेमु गणनवसेन
चतुषा च संगहो होती ति ॥

३०. द्वादसेकादस दस सत्त चा ति चतुर्मिथो ।
अद्वारसाहेतुकेमु चित्तुप्पादेष्टु संगहो ॥

अहेतुमु सन्वत्य मन सेमा यथार्ह ।
 इति वित्यारनो युक्तो तेर्तिमधिष्ठयेगदो ॥
 इत्थे चित्तावियुक्तानं मंपयोगं च संगहं ।
 अत्वा मेदे यथायोगं चित्तेन समस्तिसे ॥

इति अभिधम्मत्यमंगदे चेत्तमिकमंगहविभागो नाम
 दुतियो परिच्छेदो ॥

३.

(पक्षिण्णकसंगहविभागो)

१०. संपयुक्ता यथायोगं तेपञ्जास समावतो ।

चित्तचेवसिका धम्मा तेसं दानि यथार्ह ।

येदनाहेतुतो किञ्चारारम्मणवत्युतो ।

चित्तुप्पादवसेनेव संगदो नाम नीयते ॥

२०. तत्य येदनासंगहे ताव तिविद्या येदना, मुखं, दुखं, अदुखत-
 ममुखं चेति । मुखं, दुखं, सोमनस्सं, दोमनस्सं, उपेक्खा ति च
 मेदेन पन पञ्चधा होति ॥

३०. तत्य मुखसहगतं कुसलविपाकं कायविज्ञाणमेकमेव । तथा
 दुखसहगतं अकुसलविपाकं कायविज्ञाणं ॥ सोमनससहगत-
 चित्तानि पन लोभमूलानि चत्तारि । द्वादस कामावचरसोमनानि ।
 मुखसंतीरण-हसनानि च हे ति अट्टारस कामावचरचित्तानि चेव
 पठम-दुतिय-ततिय-चतुर्त्यज्ञानसंखावानि चतुर्वत्ताश्रीस महगत-
 खोकुचरचित्तानि चेति द्वासद्विविधानि भवन्ति ॥ दोमनससहगत-

चिचानि पन द्वे पटिश्चिचानेव ॥ सेसानि सन्धानि पि पञ्च-
ज्ञास उपेक्षासहगतचिचानेबा ति ॥

४. मुखं दुकर्खं उपेक्षा ति तिविधा तत्य खेदना ।

सोमनस्सं दोमनस्समिति भेदेन पञ्चधा ॥

मुखमेकत्य दुकर्खं च दोमनस्सं द्वये ठिं ।

दासटिमु सोमनस्सं पञ्चपञ्जासकेकरा ॥

५. हेतुसंगहे हेतबो नाम, लोभो, दोसो, मोहो, अलोभो, अदो-
सो, अमोहो चा ति उद्दा भवन्ति ॥

६. तत्य पञ्चद्वारावज्ञन-ट्रिपञ्चित्याण-संपटिच्छन-संतीरण-चो-
द्वप्न-इसनवसेन अद्वारस अहेतुकचिचानि नाम ॥ सेसानि सन्धानि
पि एकसर्त्तिं चिचानि सहेतुकानेव ॥

७. तत्यापि द्वे मोमृहचिचानि एकहेतुकानि । सेसानि दस अहु-
सलचिचानि चेव जाणविष्पुचानि द्वादस कामावधरसोभनानि
चेति द्वावीसति दुहेतुकचिचानि ॥ द्वादस जाणसंपुचकामावधर-
सोभनानि चेव पञ्चतिस महगतलोकहेतुरचिचानि चेति सचचचा-
र्णीस तिहेतुकचिचानी ति ॥

८. लोभो दोसो च मोहो च हेतु अहुसला तयो ।

अलोभादोसामोहा च हुसलाभ्याकृता तया ॥

अहेतुकद्वारसेकहेतुका द्वे दुवीसति ।

दुहेतुका मता सचचचार्णीस तिहेतुका ॥

९. किञ्चसंगहे किञ्चानि नाम पटिमंषि-भवंगावञ्चन-दससन-सद-
न-पायन-सायन-फुमन-संपटिच्छन-संतीरण-बोद्वप्न-जवन-उदार-
म्यण-चुतिवसेन चुदसविधानि भवन्ति ॥ पटिमंषि-भवंगावञ्चन-
पञ्चविड्याणद्वानादिवसेन पन त्वेसं दसघा ढानयेदो खेदितम्यो ॥

१०. तत्य है उपेक्षायदग्रमंतीरणानि वेच अट् महाविगालनि
च, नव रुपारुपविगालानि वेति एकमवीसति चित्तानि पटिमधि-
मवंग-चुनिकिचानि नाम ॥ आवज्जनकिचानि पन हे । वा-
दस्सन-सवन-यायन-सायन-फूसन-संपटिच्छनकिचानि च ॥ गीनि
संतीरणकिचानि ॥ मनोद्वारावज्जनमेव पञ्चद्वारे बोद्धपनकिचं सा-
पेति ॥ आवज्जनदूपवत्तिगानि कुसलाकुसल-फल कियाचिचानि
पञ्चपञ्चास जवनकिचानि ॥ महाविपाकानि वेच संतीरणत्वयै वेति
एकाइस तदारम्पणकिचानि ॥

११. तेमु पन हे उपेक्षासदग्रमंतीरणचित्तानि पटिमधि-भौ-
ग-चुनि-नदारम्पण-संतीरणवर्मन पञ्चकिचानि नाम ॥ महाविगा-
कानि अट् पटिमधि-मवंग-चुनि-नदारम्पणवर्मन चतुर्किचानि ॥
महग्रविगालानि नव पटिमधि-भौग-चुनिवर्मन तिकिचानि ॥
सोमनस्तमगतं संतीरणं संतीरण-नदारम्पणवर्मन दुर्लिख । वा-
बोद्धपनं च बोद्धपनावज्जनवर्मन ॥ सेमानि पन मन्वानि पि जवन-
-मनोयातुचिक-द्विपञ्चविभजाणानि यथामंभवमेककिचानी ति ॥

१२. पटिमंषाद्यो नाम किञ्चमेदेन शुद्धम् ।

दमवा डानमेदेन चित्तुप्पादा पक्षामिना ॥

अट्टमटि तथा है च नवहै द्वे यथाहर्म ।

एक-द्वि-ति-चतु-पञ्चकिचानानि निरिमे ॥

१३. द्वारमंगदे द्वारानि नाम, चरम्मदार, मीनदार, शानदार, ति-
चादार, कायदार, मनोदार अंति छत्तियानि भवनि ॥

१४. तन्य चरम्ममेव चरम्मदार । तथा मोतादयो मोनदारादीनि ॥
मनोदार पन भरंगे ति पशुगति ॥

१५. तन्य पश्चारारवन-घरमुरिघमाग-भंगटिच्छन-मंतीरण-
बोद्धम-वामाचरम-सदन-तदारम्पदण्डमेन उच्चार्द्धात्रि च वित्तानि च-

मुचानं च पदिसंविभवं गच्छुनिसंखावानं छत्तिवं पि यथामैर्मवं दे-
सुय्येन भवन्तरे छट्टारगदितं पच्छुप्पन्नमतीतं पञ्जतिमूतं वा कम्ब-
कम्मनिमित्त-गतिनिमित्तसंमतं आरम्मणं होति ॥

२२. तेषु चतुर्विज्ञाणादीनि यथाक्षमं रूपादिएकारम्मणा-
नेव ॥ मनोवादुचिकं पन रूपादिपञ्चारम्मणं ॥ सेसानि कामावचर-
विषाकानि इसनचिरं चेति सन्ध्या पि कामावचरारम्मणानेव ॥
अदुसलानि चेव ज्ञाणविष्पयुत्तकामावचरजवनानि चेति लोकुचर-
ज्ञिवसन्धारम्मणानि ॥ ज्ञाणमैपयुत्तकामावचरदुसलानि चेव पञ्चन-
उपानसंखातं अभिज्ञादुसलं चेति अद्वर्तमन्गफलवज्ञिवसन्धार-
म्मणानि ॥ ज्ञाणसंपयुत्तकामावचरक्रियानि चेव क्रियाभिज्ञादी-
द्वयने चेति सन्ध्या पि सन्धारम्मणानि ॥ आरुप्येषु दुतियवनुत्पानि
यद्वग्नारम्मणानि ॥ सेसानि महगतचित्तानि सन्धानि पि पञ्ज-
सारम्मणानि ॥ लोकुचरचित्तानि निन्धानारम्मणानी ति ॥

२३. पञ्चवीस परितम्हि छ चित्तानि महगते ।

एकवीसति बोहारे अहृ निन्धानगोवरे ॥

वीसानुचरमुतम्हि अग्नमग्नफलुज्जिते ।

पञ्च सन्ध्यत्य छ चेति सत्तधा तत्य संगहो ॥

२४. वरयुसंगदे वरयूनि नाम चतुर्मोत-पान-तिव्वा-काप-
-एदपवन्यु चेति छन्दिपानि भवन्ति ॥ तानि कामलोके समानि
पि सन्ध्यन्ति ॥ स्पष्टोके पन पानादित्यं नत्यि ॥ अद्वर्तलोके पन
सन्धानि पि न मंडिलन्ति ॥

२५. तत्य पञ्च रित्तप्राग्यथातुयो यथाहमं एकनेन पञ्च पमार-
कन्यूनि निम्मानेव परतन्ति ॥ पञ्चदारादल्लन-मंगरित्तप्राग्यथा
पन करोग्यात् च इद्यं निम्मता देवा परागति ॥ भवयंगा पन
दरोरित्तप्राग्यथातुम्माना च मंकारण-परादित्ताक-पदिपूर्व-पदम-

दग्म-हमन-स्पावचरवसेन इदये निस्मायेव पवत्तनित ॥ अवसेसा
इसलाहुसलक्षियानुचरवसेन पन निम्नाय वा अनिम्नाय वा ॥
आरूपविषाक्तवसेन इदये अनिम्नायेवा ति ॥

२६. छवतर्थु निम्निता कामे सत्त रूपे चतुर्विषय ।
तिवर्तर्थु निम्नितारूपे पान्तेसानिम्निता भवा ॥
तेचचाल्लीस निम्निताय द्वेचचाल्लीम जापरे ।
निम्निताय च अनिम्निताय पाकारूपा अनिम्निता ॥
इति अधिष्ठम्भत्यसंगाहे पक्षिष्णकर्मगहविभागो नाम
वित्यो परिच्छेदो ॥

४.

(वीथिसंगहविभागो)

१. चित्तुप्पादानमिद्येवं कल्पा संगहमुचरं ।
भूमिषुगलभेदेन पुन्नापरनियापितं ॥
पवतिसंगाहे नाम पठिमन्यपवचिये ।
पववसामि सपासेन यथासंमवदो कर्य ॥
२. छ चत्युनि, छ द्वारानि, छ आरम्भणानि, छ विज्ञाणानि,
छ शीघ्रियो, छद्वा विसयणवचि चेति शोघिसंगाहे छ उद्धानि
षेदितम्बानि ॥
३. शीघ्रिमुक्तानं पन कर्म-कर्मनियित-गतिनियितवसेन ति-
विषा होनि विसयणवचि ॥
४. तत्य चत्युद्वारारम्भणानि पुन्ने शुचनयानेव ॥
५. चक्रुविज्ञाण, मोउविज्ञाण, पानविज्ञाण, निष्ठावि-
ज्ञाण, कायविज्ञाण, मनोविज्ञाण चेति छ विज्ञाणानि ॥

६. ए दीयियो पन चारहुदारतीयि, सोतदारतीयि, पानहु
तीयि, निजहुदारतीयि, कायहुदारतीयि, मनोहुदारतीयि देति हारा
सेन वा । चारहुनिज्जागतीयि, सोतनिज्जागतीयि, पाननिज्ज
तीयि, निजहविज्जागतीयि, कायविज्जागतीयि मनोविज्ज
तीयि देति तिज्जागतेन वा द्वारल्लरता चित्तप्राणियो थोजेत्ता

७. अमिसन्ते, मसन्ते, परिने भवित्तिये नेति पागदारे । मने
इरे तिभूषणभूषा वेति उद्धा तिगव्यारति वंद्वाना ॥

८. को ! उगारद्विभित्तियागेन तागतारे एहविगारारे नाम ।
तावि एन गगारा निगारागानि आपामानयागु ॥ एहविगारा
गारोगि वा एहविगारागारिगि वा गिनल्लगानेर पवाराह
गागि उच्छारे खागागागारउगि ॥ तामा वहि एहविगाराग
गीतहै आगराली परामुग ग्रामागागागर्ति, तामो परे द्विगा
वौने वहि गोगागो शोभिग-एग गोरे आगरागागागारो
पक्ष्यारागागारिन रापित्ता तिकागरि ॥ तामा तामाक्षरा
गोरे वहि गोगागो वागुगित्तागो । गोगित्तवने गोरागागर्ति
गे तिगव्यारे गोरागर्ति । गोगागो गोद्वारविने वेति गोगाग
गोगागर्ता तिकागरि ॥ तामो वहि एहविगिक्कागागागारो
वहि वहिग वहिग गोगागो गोगागुगुगर्ति । तामानुगागित
वहि गोगागनारागिति गोगागिति वहिगनि ॥ तामो वहि गोगागागो ॥

९. गोगागो गोग वीविगिक्कागो, दे गोगागनारिति, गोग
गोगविगिति गोगो + विगो गोगागिति गोगागतानि गोगित्तिगि ।
गोग वहि वहिग ॥ गोगागो + गोगागिति गोगागो ॥ गोग
गोगविगिति गोग वहिग । गोग वहिग गोगागिति गोगागते गोग-
वहि । गोग गोगागागते वहिगवहि + वहिग, वहिग गोगाग
वहिग वहिग वहिगवहिग वहिगवहिग वहिगवहिग वहिगवहिग वहिग

म्यणं परिचं नाम ॥ तत्य जवने पि अनुष्प्रित्वा द्वितीयखतुं वी-
द्वप्नमेव पवत्तति । ततो परं भवंगपातो व होति ॥ याव वोद्वप्नु-
प्पादा च पन अप्पहोन्नानीतकमापाथमागतं निरोशासन्नमारम्मणं
अतिपरिचं नाम ॥ तत्य भवंगचलनमेव होति, नत्य वीयिचित्-
प्पादो ॥ इचेवं चवसुद्वारे, तथा सोवद्वारादिसु चेति सन्धया पि पञ्चद्वारे
तदारम्मण-जवन-वोद्वप्न-मोघवारसंखातानं चतुर्तं वारानं यथाक्षमं
आरम्मणभूता विसयप्पवति चतुर्था वेदितव्वा ॥

१०. वीयिचित्तानि सर्वं चित्तप्पादा चतुर्दस ।

चतुर्पञ्चात् वित्यारा पञ्चद्वारे यथारहं ॥

अयमेत्य पञ्चद्वारे वीयिचित्तप्पवत्तिनयो ॥

११. मनोद्वारे पन यदि विभूतमारम्मणं आपाथमागच्छति, ततो
परं भवंगचलन-मनोद्वारत्वज्ञन-जवनावसाने तदारम्मणपाकानि
पवत्तन्ति । ततो परं भवंगपातो ॥ अविभूते पनारम्मणे जवनाव-
साने भवंगपातो व होति । नत्य तदारम्मणुप्पादो नि ॥

१२. वीयिचित्तानि तीणेव चित्तुप्पादा दसेरिणा ।

वित्यारेन पनेत्येकचत्ताळीस विभावये ॥

अयमेत्य परिचज्जवनवारी ॥

१३. अप्पनाजवनवारे पन विभूताविभूतमेदो नत्य । तथा तदार-
म्मणुप्पादो च ॥ तत्य हि ज्ञानसंपुत्रकामावचरजवनानमद्वधं अ-
ङ्गतरस्मि परिकम्पोपचारानुलोमगोप्रभुनामेन चतुर्खतुं विक्ष-
त्तमेव वा यथाक्षमं उप्पज्जित्वा निरदानन्तरमेव यथारहं चतुर्त्यं
पञ्चमे वा छब्बीसति महगनम्लोकुत्तरजवनेषु यथाभिनीहारवसेन यं
किञ्चि जवने अप्पनावीयिमोतरति ॥ ततो परं अप्पनाजवनावसाने
भवंगपातो व होति ॥

१४. तत्य सोमनस्सस्सद्गवज्जवनानन्तरं अप्पना पि सोषनस्सस-

इन्ता च पाटिकं स्तिवन्वा । उरेस्त्वासहयत्तमवनानन्तरं उरेस्त्वासहया-
व ॥ तत्यापि कुमलजनवनानन्तरं कुमलजनवं नेत्र हेष्टिम् च फलव-
यमन्तेति । कियाजनवनानन्तरं कियाजनवं अरहतकं चा ति ॥

१९. इच्छिसंसुख्युभ्यम्भा द्वादसोपेत्वस्ता परं ।

सुस्तिवक्षियतो यह छ मंभोनि उरेस्त्वां ॥

पुषुभ्यजनान सेत्वानेकामयुभ्यनिहेतुतो ।

निहेतुकामक्षियतो वीतरागानमरणना ॥

अयनंत्य मनोद्वारे शीघ्रिचित्तवत्तिनयो ॥

२०. सञ्चया च पनेत्य अनिहे आरम्भने अद्यमवसिताहाते-
पश्चिमाण-मंभटित्त्वन-मीतीरण-नदारम्भगानि । इहे कुगमरिता-
कानि ॥ अनिहे पन सोमनम्भमहागानेत्र मंभीरणनदारम्भगानि ॥
तत्यापि सोमनम्भमहागानियाजनवनारम्भाने सोमनम्भमहागा-
नेत्र नदारम्भगानि परन्ति । उरेस्त्वासहयत्तमवनारम्भाने च
उंभागागहागानि होन्ति ॥

२१. दोषनम्भगागहागवनारम्भाने पन नदारम्भगानि गेत भी-
गानि च उंभागागहागानेत्र परन्ति ॥ तत्या पदि सोमनम्भगानि-
देवित्तम्भ दोषनम्भगागहागवनारम्भाने नदारम्भगानीपरो नहि,
तदा वै द्वित्रि परिवित्त्वात् तत्त्वारम्भगपारम्भ उंभागागहा-
गवनेत्रली उपात्तति ॥ तपनलिया मरीगानो च हांगो च इहेति
भावत्तिया ॥ तथा बापात्तवाज्जनवनारम्भाने बापास्तरगताने बापा-
स्तरहम्भेष्टर अरम्भगभूत्यु नदारम्भगत्त्वात्त्वात्ति इहेत्त्वात्ति ॥

२२. चाले त्रानगत्तास्तरगताने नियते ताँ ।

त्रिवैष्टिपदने च नदारम्भगत्तीति ॥

अयनेत्र नदारम्भगत्तियमा ॥

२३. अद्येत्तु च वृत्तिवदवत्तीत्वात्ति बापास्तरगतावत्ति बापास्तरगति ॥

एवत्वत्तुमेव वा जबन्ति ॥ मंदप्पवचियं पन मरणकालादिसु पञ्चवा-
रमेव ॥ भगवतो पन यमकपाटिहारियकालादिसु लहुकप्पवसियं
चत्तारि पञ्च वा पद्येवत्वणचित्तानि भवन्ती ति पि बदन्ति ॥
आदिकम्मिकस्त स पन पठ्यकप्पनायं पद्मगनमवनानि अभिज्ञाज-
वनानि च सब्बया पि एकवारमेव जबन्ति । ततो परं भवंगपातो व ॥
चत्तारो पन मग्नुप्पादा एकचित्तवत्वणिका । ततो परं द्वे तीणि
फलचित्तानि यथारहं उप्पज्ञन्ति । ततो परं भवंगपातो ॥ निरो-
पसमापत्तिशाले द्वित्वत्तुं चतुर्त्यारुप्पज्ञवनं जबनि । ततो परं निरोधं
कुसवि ॥ बुद्धानकाले च अनागामिफलं वा अरहचफलं वा यथा-
रहमेकवारं उप्पज्ञिनत्वा निरुद्धे भवंगपातो व होति ॥ सब्बया पि
समापचित्तोयियं भवंगसोतो विय वीधिनियमो नत्थी ति कत्वा
षहनि पि लब्धन्ती ति ॥

२०. सचत्वत्तुं परित्तानि पग्नाभिज्ञा सर्कि पता ।

अवसेसानि लब्धन्ति जबनानि वहनि पि ॥

अयमेत्य जबननियमो ॥

२१. दुदेतुकानपदेतुकानं च पनेत्य क्रियाजबनानि चेव अप्पना-
जबनानि च न लब्धन्ति ॥ तथा जाणमंपयुत्तविपाकानि च सुग-
तियं ॥ दुगतियं पन जाणविप्पयुत्तानि च महाविपाकानि न
लब्धन्ति ॥

२२. निदेतुकेयु च खीणासवानं कुसलाकुसलजबनानि च न
लब्धन्ति । तथा सेवत्वपुयुत्तनानं क्रियाजबनानि ॥ दिष्ठिगवसंपयु-
त्तविचिकित्ताजबनानि च सेवत्वानं ॥ अनागामिपुगलानं पन
पटियजबनानि च न लब्धन्ति ॥ लोकुत्तरजबनानि च यथारहं
अरियानमेव समुप्पज्ञन्ती ति ॥

हगता व पाटिकं लितव्वा । उपेत्तासहगतजननानन्तरं उपेत्तासहगत
व ॥ तत्यापि कुमलजननानन्तरं कुसलजननं चेत् हेत्तिं व कल्पे
यप्पेति । क्रियाजननन्तरं क्रियाजननं अरहत्तकलं चा ति ॥

१५. द्विंस सुखपुञ्जम्हा द्वादशोपेत्तत्वका परं ।

सुखितक्रियतो अहु छ संभोन्ति उपेत्तत्वका ॥

पुष्पुञ्जनान संतत्वानं कामपुञ्जनिहेतुतो ॥

तिहेतुकामक्रियतो वीतरागानप्पना ॥

अयमेत्य पनोद्वारं वीयिचित्पवत्तिनयो ॥

१६. सन्ध्या पि पनेत्य अनिहे आरम्भगे अहुमलविशकानेत
पञ्चविञ्जाण-संपटित्तुन-मंत्रोरण-तदारम्भगानि । इहे कुमलविश-
कानि ॥ अतिहे पन सोपनम्समहगतानेत संतीरणवदारम्भगानि ॥
वत्यापि सोपनम्ससहगतक्रियाजननावसाने सोपनम्ससहगत-
नेत तदारम्भगानि भवनि । उपेत्तासहगतक्रियाजननावमाने च
उपेत्तासहगतानि होन्ति ॥

१७. दोपनम्ममहगतजननावमाने पन तदारम्भगानि चेर मर-
गानि घ उपेत्तासहगतानेत भवनि ॥ तस्या यदि सोपनम्सर्पि-
मेषिहस्म दोपनम्ममहगतजननावमाने तदारम्भगर्भपरो नति,
तदा ये क्रित्ति परिचित्पुञ्चं परित्तारम्भगपारम्भ उपेत्तासहगत-
मंत्रीरणं उप्पत्तति ॥ तपननग्निरा भरंगपात्रो य होतो ति पदनि
आचरिया ॥ तया कामादवरजननावसाने कामादवरमताने कामा-
दवरमन्मन्मने आरम्भगभूतेषु तदारम्भगे इच्छन्ती ति ॥

१८. कामे जननपुकारम्भगाने नियमं गति ।

तिभूतिपदने च तदारम्भगर्भागति ॥

अयमेत्य तदारम्भगनियता ॥

१९. अवनेत्र च परिचननरीयिय कामादवरमतानि यत्तम्भृ

चतुर्खनुभेद वा जबन्ति ॥ मंदप्पवत्तियं पन मरणकालादिसु पश्चवा-
रमेव ॥ भगवतो पन यमकपाटिहारियकालादिसु लहुकप्पवत्तियं
चत्तारि पश्च वा पश्चवेचत्तवणचित्तानि भवन्ती ति पि जबन्ति ॥
आदिकम्मिकस्स पन पठमकष्यनायं महगतजबनानि अभिज्ञाज-
बनानि च सञ्चया पि एकवारमेव जबन्ति । ततो परं भवेगपातो व ॥
चत्तारो पन मग्नुप्पादा एकचित्तवत्तणिका । सबो परं द्वे तीणि
फलचित्तानि यथारहं उप्पज्ञन्ति । ततो परं भवेगपातो ॥ निरो-
घममापत्तिकाले द्वित्त्वत्तुं चतुर्त्यारुप्पमवनं जबन्ति । ततो परं निरोधं
झुसति ॥ बुहानकाले च अनागामिफलं वा अरहतफलं वा यथा-
रहमेकवारं उप्पज्ञिभत्वा निरुद्धे भवेगपातो व होति ॥ सञ्चया पि
समापत्तिशोधियं भवेगसोतो विय वीथिनियमो नत्यी ति फला
बहुनि पि लभन्ती ति ॥

२०. सत्त्वत्वत्तुं परिचानि मग्नाभिज्ञा सर्कि मता ।
अवसेसानि लभन्ति जबनानि बहुनि पि ॥

अयमेत्य जबननियमो ॥

२१. दुहेतुकानमहेतुकारं च पनेत्य क्रियाजबनानि चेद अप्पना-
जबनानि च न लभन्ति ॥ तथा ज्ञाणसंपुच्चविशकानि च मुग-
तियं ॥ दुग्नतियं पन ज्ञाणविष्पुच्चानि च महाविशकानि न
लभन्ति ॥

२२. तिहेतुकेमु च खीणासवानं कुमलाकुसलजबनानि च न
लभन्ति । तथा सेमखपृष्ठुडजनानं क्रियाजबनानि ॥ दिट्टिगवसंपु-
च्चविचिकिच्छाजबनानि च सेमखारं ॥ अनागामिषुग्गलारं पन
पटियजबनानि च न लभन्ति ॥ लोहुषरजबनानि च यथारहं
अरियानमेव समूप्पज्ञन्ती ति ॥

हगता व पादिकं खितन्वा । उपेक्षामहगतवनानन्तरं उपेक्षामहगता व ॥ तत्यापि कुमलनवनामन्तरं कुमलनवनं चेव हेत्प्रिं च एव यमणेत्रि । क्रियानवनानन्तरं क्रियानवनं व्रहनत्वं चा ति ॥

?५०. द्विंचिसु सुखपृज्ञनम्हा द्वादशोपेक्षकरुपा परं ।

सुखिवक्रियतो अहु च मंभोनि उपेक्षवसा ॥

इयुद्धनवनं संख्यार्थे कापपृज्ञनिद्वन्तुतो ॥

विद्वुकामक्रियतो धीतरागानपत्पना ॥

अयमेत्य पनांदारं वीथिचिन्तनवनिनयो ॥

?६. सन्वया पि पनेत्य अनिद्वे आस्मणे अद्वयविग्रहाक्षनित्पव्यविज्ञाण-संविद्विल्लन-मंत्रीरण-वदारम्भगानि । इद्वे कुमलविग्रहाक्षानि ॥ अतिइद्वे पन सोपनस्मस्तगतवनेव मंत्रीरणवदारम्भगानि ॥ वत्यापि सोपनस्ममहगतक्रियानवनावसाने सोपनस्मस्तगतवनेव वदारम्भगानि भवन्ति । उपेक्षामहगतक्रियानवनावसाने च उपेक्षामहगतानि होन्ति ॥

?७. दोपनस्ममहगतवनवावसाने पन वदारम्भगानि चेव भवन्ति गानि च उपेक्षामहगतानेव भवन्ति ॥ तत्या यदि सोपनस्मपटिसंविहस्त दोपनस्ममहगतवनवावसाने वदारम्भगम्भीर्तो नति, तदा ये क्रियापरिचितपृज्ञे परिनारम्भमारव्य उपेक्षामहगत-मंत्रीरण उष्णज्ञति ॥ तपनन्तरित्वा भवन्तपात्रो ये दोत्रो ति वदनि आचरिया ॥ तया कामावचरतवनावसाने कामावचरमधानं कामावचरत्यम्भेस्तेव आरम्भगम्भीर्तु तदारम्भगते इच्छन्ती ति ॥

?८. काये नवनमुक्तारम्भगानं नियमं सति ।

विष्ट्रैतिपल्ले च वदारम्भणीर्ति ॥

अयमेत्य वदारम्भणियता ॥

?९. अयनेत्पु च परिचत्वरनवीयिर्य कामावचरतवनानि सनस्त्रै

३. वत्य अपायभूमि, काममुगविभूमि, रूपावचरभूमि, अरु-
पावचरभूमि चेऽपि चतस्सो भूमियो नाम ॥
४. चामु निरयो, विरच्छानयोनि, पेत्तिविसयो, अमुरकायो
चेति अपायभूमि चतुर्बिधा होति ॥
५. मनुस्सा, चातुर्महाराजिका, तावर्तिसा, यामा, हुरिता,
निम्मानरति, परनिम्मितवसदत्ती चेति काममुगनिभूमि सत्तविधा
होति ॥ सा पनायमेकादसविधा पि कामावचरभूमिचेव संखं
गच्छति ॥
६. ग्रद्धापारिसज्जा, व्राणपुरोहिता, महावज्ञा चेति पठमज्ञान-
भूमि । परिचापा, अप्पमाणमा, आभस्सरा चेति दुनियज्ञानभूमि ।
परिच्छमा, अप्पमाणमुभा, शुभकिण्हा चेति तनियज्ञानभूमि ।
वेदफला, असञ्चसत्ता, चुदावासा चेति चतुर्त्यज्ञानभूमो नि-
रूपावचरभूमि सोळमविधा होति ॥ अविहा, अनष्टा, सुदस्सा,
सुदस्सी, अकनिहा चेति चुदावासभूमि पञ्चविधा होति ॥
७. आकासानज्ञायतनभूमि । विद्युत्त्वायतनभूमि । आकि-
ज्ञायतनभूमि । नेवसञ्चानासञ्चायतनभूमि नेति अरुपभूमि च-
तुर्बिधा होति ॥
८. पुण्ड्रजना न लब्धन्ति चुदावासेषु सत्यथा ।
सोतापद्मा च सकदागामिनो चापि पुण्ड्रा ॥
अरिया नोपलब्धन्ति असञ्चापायभूमिषु ।
सेसद्वानेषु लब्धन्ति असियानरिया पि च ॥
इदमेत्य भूमिचतुर्के ॥
९. अपायपटिसंधि, काममुगनिपटिसंधि, रूपावचरपटिसंधि,
अरुपावचरपटिसंधि चेति चतुर्बिधा पटिसंधि नाम ॥
१०. वत्य अदृसलविपाकोपरखासहगतसंतोरणे अपायभूमियं

२३. अतेरत्वानं चतुर्व्याप्तेस संरत्वाननुद्दिसे ।

उपम्यामारसंतानं चतुर्प्रभ्यात् संभवा ॥

अपदेन्य पुण्यक्षमेहो ॥

२४. कामावचरभूमियं पनेतानि सञ्चानि शीघ्रिचित्तानि वक्ता
उत्तम्भनि । रुगावचरभूमियं पठियतवनवदारम्बन्तिगति ॥
अल्पावचरभूमियं पउमयग-रुगावयर-इसन-इटिमारुप्तरविगति
न लब्धनि ॥ मन्यापि न वैनंसादरहितानं तंत्रशृणितोर्मि
चित्तानि न लब्धन्ते ॥ अमज्ज्वमध्याने पन मन्यथा रितिपारति
ननेता ति ॥

२५. अमीति शीघ्रिचित्तानि कामं स्वं पापार्थ ।

पुगडि कागङ्गे देवगाढीम स्वरे ॥

अपदेन्य भूमिरिभागो ॥

२६. इयंते उद्गमित्विकारानि पापामीषो घोगन्तिता यात्
पुरमध्योगित्वा परम्भि ॥

इति अविमाम्यमेहो शीघ्रिमुक्तसंग्रहविभागो नाम
चतुर्पाणं परिच्छेहो ॥

(शीघ्रिमुक्तसंग्रहविभागं)

१. शीघ्रित्वागेने तानियनुरोदितो ।

शार्दूलादी नाम नीति शावि तुर्वा ॥

२. काम्यां दृश्यां । वृद्धिराग वृद्धिरि । वृद्धि वृद्धिरि
वृद्धा काम्यादी वृद्धि वृद्धितुर्वादो वृद्धि वृद्धि
वृद्धिर्वृद्धिर्वृद्धि ॥

३. वत्य अपापभूमि, कामसुगविभूमि, रूपावचरभूमि, अरु
पावचरभूमि चेति चतुर्स्तो भूमियो नाम ॥

४. कामु निरयो, विरच्छानयोनि, पेचिविसयो, अमुरकायो
चेति अपापभूमि चतुर्विधा होति ॥

५. मुहुस्ता, चाहुम्मदारानिका, तावर्तिसा, यामा, तुसिवा,
निम्मानराति, परनिम्मिकवसवत्ती चेति कामसुगविभूमि सत्तविधा
होति ॥ सा पनायमेकादसविधा पि कामावचरभूमिचेव संख्या
५८ ॥

६. व्याघ्रपारिसज्जा, व्याघ्रपुरोहिता, महाघ्रमा चेति पृथग्ज्ञान-
भूमि । परिचामा, अप्यमाणामा, आभस्तरा चेति दुनियज्ञानभूमि ।
परिचमुमा, अप्यमाणमुमा, सुभकिष्ठा चेति तनियज्ञानभूमि ।
रूपावचरभूमि सोब्लविधा, सुदावासा चेति चतुर्त्यज्ञानभूमो नि
सुदस्ती, अक्षनिष्ठा चेति सुदावासभूमि पञ्चविधा होति ॥

७. आकासानज्ञायतनभूमि । विज्ञाणज्ञायतनभूमि । आकि-
टविधा होति ॥

८. इपुञ्जना न लभन्ति सुदावासेमु सञ्चया ।
सोवापमा च सफदागामिनो चापि पुगला ॥
अरिया नोपलभन्ति असञ्चापापायभूमिषु ।
सेसदानेमु लभन्ति अरियानरिया पि च ॥

मेत्य भूमिचतुर्वर्ण ॥

अपापटिसंधि, कामसुगविपटिसंधि, रूपावचरपटिसंधि,
वचरपटिसंधि चेति चतुर्विधा पटिसंधि नाम ॥

वत्य अद्वासलविधाकोपेत्वासद्वावसंवोरण अपापभूमियं

बोकनिकखणे पटिसंधि हुत्वा, ततो परं भवेगं, परियोसाने चतुर्वेद
हुत्वा बोचिठ्ठजति ॥ अयमेकापायपटिसंधि नाम ॥

११. कुसलविषाकोपेश्वासदगतसंतीरणे पन काममुगतियं प्रभु-
सानं चंव जद्यथादीनं, भूम्पनिस्सितानं च विनिपानिकामुरानं
पटिसंधि-भवेग-नुतिवसेन पवचति ॥ महाविषाकानि पन अह सं-
व्यया पि काममुगतियं पटिसंधि-भवेग-नुतिवसेनेव पवचति ॥
इषा नव काममुगतिपटिसंधियो नाम ॥ सा पनायं दसविषा पि
कामावचरपटिसंधियेव मंखे गच्छति ॥

१२. तेमु चतुर्वेद अपायानं, पनुम्सानं, विनिपानिकामुरानं च
आयुष्माणगणनाय नियमो नत्यि ॥ चातुर्महाराजिकानं पन देवाने
दिन्वानि पश्च वम्मसनानि आयुष्माणं । पनुस्सगणनाय नवुतिरः-
सगतानसाहस्रप्रमाणं होति ॥ ततो चतुर्गुणं सावतिमानं ॥ ततो
चतुर्गुणं यामानं ॥ ततो चतुर्गुणं तुमितानं ॥ ततो चतुर्गुणं नि-
म्पानरतीने ॥ ततो चतुर्गुणं परनिभितवसत्तीने ॥

१३. नरमने नेहूदीम वस्माने कोटियो तथा ।

वम्मसनतराहम्मानि गढि च वस्यतिषु ॥

१४. पठप्रश्नानविषाकं पठप्रश्नानभूमियं पटिसंधि-भवेग-नुति-
वगेन पवचति । तथा दृतियप्रश्नानविषाकं ततियप्रश्नानविषाकं च
दृतियप्रश्नानभूमियं । चतुर्गुणप्रश्नानविषाकं ततियप्रश्नानभूमियं । पश्च-
प्रश्नानविषाकं चतुर्गुणप्रश्नानभूमियं ॥ अगमत्राणाने पन रुपों
पटिसंधि होति । तथा ततो परं पवचति चरनदाले च रुपों पर-
गिन्वा निराशति ॥ इषा छ रुपारथापटिसंधियो नाम ॥

१५. तेषु व्रजमारिगमाने देवाने कामग तनियो भागो भाषु-
प्रवर्ण । व्रजारोदिताने उद्दृश्यो । वरावद्वाने एवो कर्त्तो ।
परिनावानं द्वे रुपानि । भाषपागामाने चतारि रुपानि । भाष-

स्सराने भट्ट कप्पानि । परिचयुभाने सोऽस कप्पानि । अष्पमाणसु-
भाने द्विस कप्पानि । युभकिणाने चतुसडि कप्पानि । वैफलाने,
असञ्जमचाने च पश कप्पसज्जानि । अविहाने कप्पसइस्सानि ।
अवप्पाने दे कप्पसइस्सानि । युदसाने पचारि कप्पसइस्सानि ।
युदसीने भट्ट कप्पसइस्सानि । अकुनिहाने सोऽस कप्पसइस्सानि ॥

१६. पठमारुप्पादिविपाकानि पठमारुप्पादिभूमिसु यपाक्षे पटि-
संधि-भवग-युतिरसेन पवत्तनि ॥ इपा चतस्रो भाष्पपटिसंधियो
नाम ॥

१७. हेतु पन आकासानश्चायतनूपगाने देवाने थोसति कप्पसह-
स्सानि आशुप्पमाण । विष्वाणश्चायतनूपगाने देवाने चत्तारीस कप्प-
सहस्सानि । आकिशञ्जायतनूपगाने देवाने सहि कप्पसहस्सानि ।
नेवसञ्जानासञ्जायतनूपगाने देवाने चतुरासीठि कप्पसहस्सानि ॥

१८. पटिसंधि भर्वंगी च तथा चवनमानसे ।

एकमेव तयेरेकविसये थेकमात्रिये ॥

इदमेत्य पटिसंधिचतुर्कं ॥

१९. जनकमुपर्थेभक्तमुपरीक्तमुपथातकं चेति फिशवसेन । गरु-
कमारदमाचिष्मै, कटचाकम्यं चेति पाकदानपरियायेन । दिष्टवस्म-
येदनीये, उपपञ्जेदनीये, अपरापरियेदनीये, अहोसिकम्यं चेति
पाककालवत्तेति पचारि कम्मानि नाम ॥ तथा अदुसर्ले, कामा-
वचरदुसर्ले, रुपावचरदुसर्ले, अर्घ्यावचरदुसर्ले चेति पाकदानवत्तेन ॥

२०. तत्थ अदुसर्ले, कापकम्यं, धर्मीकम्यं, मनोकम्यं चेति कम्य-
दारवसेन तिविर्ध होति ॥

२१. कथे १ पाणातिशातो, अदिपादाने, कामेतु पित्ताचारे
चेति कायविडञ्चिसंखाते कायदारे यादुद्युक्तितो कायकम्यं नाम ॥

२२. युसावादो, पितृणवाचा, फृष्टवाचा, संफल्पलापो चेति

षचीनिज्ञतिसंसारे षचीदारे षाहुद्युक्तिनो षचीकर्म्य नाम ॥

२३. अभिग्ना, व्यापादो, मित्तादिति चेति अज्ञवारि तिष्ठि
चिया यनस्मि येति षाहुद्युक्तिनो यनोकर्म्य नाम ॥

२४. तेषु पाणातिपातो, फूलसराचा, व्यापादो च दोममूर्ते
जायन्ति ॥ कामेषु मित्ताचारो, अभिग्ना, मित्तादिति च छोप-
मूर्तेन ॥ सेवानि चयारि पि द्वीपि मूलेहि संमतन्ति ॥ चितुनां-
बनेन एनो यज्ञतत्त्वे रम्या ति द्वादसविष्ठे होति ॥

२५. कापातपरहमने ति कापदारे पत्ती कापकर्म्य, षचीदो
पत्ती पत्तोकर्म्य, यनोद्धारे पत्ती यनोकर्म्य भेति हम्मदारात्मे-
तिष्ठि होति । तथा दान-सोळ-भारनारसेन ॥ चितुनांगारसेन
एनो अट्ठाति होति ॥ दान-सीळ-भारना-भारापन-तेषाम-
पनिशान-गतानुपोरन-पद्यपारन-पम्पदेगना-दित्तिष्ठुहम्मदारेन ॥
तरिते होति ॥ ते एनेन शीमतिष्ठि ति कापातपरकर्मपिष्ठे
तीते गत्तति ॥

२६. व्यापादपरहुगते एन यनोहम्मपेरा ॥ ते च भारनापा, भा-
रनाने, ज्ञानेन पत्तिष्ठि होति ॥ तथा अस्पातपरहुगते च
वत्तोकर्म्य ॥ ते पि भारनापरी, भारनाती, भारम्पत्तेन चु-
प्ति होति ॥

२७. व्यापादाकाम्पद्युक्तादाति व्यापादविष्ठे दित्तिष्ठि ज्ञतेति ॥
दित्तिष्ठि एन गडी पि द्वादसति गतानुपातातानि गम्भीरा पि
द्वादसात् द्वादसात् च यनारहि तिष्ठति ॥

२८. व्यापादपरहुगते पि व्यापादविष्ठे विष्ठिष्ठि ज्ञतेति ।
तथा वर्तिष्ठि च वर्तिष्ठितात्तानि । अंतर्दितितात्तानि एन यज्ञे पि
व्यापादविष्ठि व्यापादात् व्यापादात् च यनारहि तिष्ठति ॥

२९. दत्तति दित्तिष्ठुहुगते मित्तिष्ठुहुगते विष्ठिष्ठि दत्ता एते

सोऽस विपाकानि विपद्धति ॥ तिहेतुकमोमके द्विहेतुकमुक्तहं च
कुसलं द्विहेतुके पटिसंस्थिं दत्ता पवचे तिहेतुकरहितानि द्वादस पि
विपाकानि विपद्धति ॥ द्विहेतुकमोमके पन कुसलं अहेतुकमेव पटि-
संस्थिं देति, पवचे च अहेतुकविपाकानेव विपद्धति ॥

३०. असंखारं संसंखारविपाकानि न पञ्चति ।

संसंखारप्रसंखारविपाकानी ति केचन ॥

तेसे द्वादस पाकानि दसह च यथाक्षमे ।

यथाखुचानुसारेन यथासंभवमुद्दिसे ॥

३१. रूपाषधरकुसलं पन पठमज्ञानं परिचं भावेत्वा ग्रहणारि-
सम्मेशु उप्पज्ञति । तदेव मज्जिमं भावेत्वा ग्रहणपुरोहितेशु । पणीतं
भावेत्वा महामध्येशु ॥ तथा दुतियज्ञानं तवियज्ञानं च परिचं भा-
वेत्वा परिचामेशु । मज्जिमं भावेत्वा अप्पमाणामेशु । पणीतं भावे-
त्वा आभस्सरेशु ॥ चतुर्त्यज्ञानं परिचं भावेत्वा परिचमुमेशु ।
मज्जिमं भावेत्वा अप्पमाणमुमेशु । पणीतं भावेत्वा सुषकिणेशु ॥ पञ्च-
मज्ञानं भावेत्वा षेष्टकलेशु । तदेव सञ्चारविरागं भावेत्वा असञ्च-
सरेशु ॥ अनागामिनो पन मुद्रावासेशु उप्पज्ञन्ति ॥

३२. अरूपाषधरकुसलं च यथाक्षमं भावेत्वा अरूपेशु उप्प-
ज्ञन्ति ति ॥

३३. इत्येष्महागतं मुञ्च्यं यथाभूमिवदत्पिठं ।

जनेति सदिसं पाके पटिसंविष्पवत्तियं ॥

इदमेत्य कम्यवत्तुक्तं ॥

३४. आपुवत्तयेन, कम्यवत्तयेन, उभयवत्तयेन, उपच्छेदकक्षमुनाः
चेति, चतुर्था मरणुपत्ति नामः ॥

३५. तथा च मरन्तानं पन मरणकाले यथारह अभिमुखीभूतं प्र-
न्तरे पटिसंविननकं कम्यं दा, तैकम्यकरणकाले रूपादिकमुपलद्द-

पुन्वमुपकरणभूतं च कम्मनिमित्तं वा, अनन्वरमुपज्ञमानभेदे उपल-
विभितव्यं उपमोगभूतं च गतिनिमित्तं वा कम्मबलेन छन्ने द्वारानं
अञ्जनवरस्मि पच्चुपद्वाति ॥ ततो परं तमेव तयोपद्वितं आरम्भं
आरम्भ विपश्चमानकम्मानुरूपं परिसुद्धमुपकिलिहुं वा उपलनिमित्-
व्यभवानुरूपं तत्योणतं व चित्तसंतानं अभिष्टं पवत्तति वाहुछेन ॥
तमेव वा पन जनकभूतं कम्मप्रभिनवकरणवसेन द्वारप्पवत्तं होति ॥

३६. पच्चासन्नमरणम्स तस्स वीषिचित्तावसाने भवंगवत्वे वा
चवनवसेन पच्चुपज्ञभवपरियोसानभूतं चुतिचित्तमुपजित्वा निष-
ज्ञति ॥ तर्स्मि निरुद्धावसाने तस्सानन्वरमेव तयागद्वितं आरम्भ-
णमारम्भ सवत्थुकं, अवत्थुकमेव वा यथारहं अविज्ञानुसयपरिविल-
त्तेन तण्डानुसयमूलकेन संखारेन जनीयमानं संपयुत्तेहि परिगद्यमानं
सहजातानमधिट्ठानमावेन पुन्वंगमभूतं भवन्वरपटिसंयानवसेन पटि-
संधिसंखातं मानसं उपज्ञमानमेव पतिद्वाति भवन्तरे ॥

३७. मरणासन्नवीयियं पनेत्य मंदप्पवत्तानि पत्रेव जननानि
पाटिकंखितव्यानि ॥ तस्या यदा पच्चुपज्ञारम्भेसु आपायमागर्वेमु
घरन्तेस्येव परणं होति, तदा पटिसंधिभवंगानं पि पच्चुपज्ञारम्भ-
णता लभनी ति कल्पा कामावचरपटिसंधिया छद्वारगद्विते कम्म-
निमित्तं, गतिनिमित्तं च पच्चुपज्ञमनीनारम्भणं उपलब्धति । कम्म
पन अवीत्वमेव ॥ तं च मनोद्वारगद्वितं ॥ तानि पन सम्मानि पि
परित्पम्भूतानेवारम्भणानि ॥

३८. रूपावचरपटिमधिया पन पञ्चतिभूते कम्मनिमित्तेवार-
म्भणं होति ॥ तथा आदप्पपटिसंधिया च महगतभूते पञ्चतिभूते
च कम्मनिमित्तेव यथारहं आरम्भणं होति ॥ अमध्यसतानं भी-
तिवनवद्विते पटिसंधियांनं पतिद्वाति ॥ तथा ते रूपपटिसंधिया
नाम ॥ अस्या अरूपपटिमधिया ॥ होता रूपाह्वपटिसंधिया ॥

पुन्वमुपकरणभूतं च कम्मनिमित्तं वा, अनन्तरमुपज्ञमानभवे उष्टु
विभवत्वं उपभोगभूतं च गतिनिमित्तं वा कम्मबलेन छञ्च द्वारा
अञ्जतरस्मि पञ्चुपद्वाति ॥ ततो परं तमेव तथोपद्वितं आरम्भ
आरम्भ विपद्मानकम्मानुरूपं परिसृद्धमुपकिलिहुं वा उपलन्धित
व्यभवानुरूपं तत्योणतं व चित्तसंतानं अभिष्ठै पवचति याहुल्लेन ।
तमेव वा पन जनकभूतं कम्ममभिनवकरणवसेन द्वारप्पवत्तं होति ।

३६. पच्चासन्नमरणस्स तस्स वीयिचित्तावसाने भवंगवद्ये व
चवनवसेन पञ्चुपज्ञमवपरियोसानभूतं चुनिचित्तमुपजित्वा निश्च
ज्ञति ॥ तर्स्मि निरुद्धावसाने तस्सानन्तरमेव तयागहितं आरम्भ-
णमारम्भ सवत्युक्तं, अवत्युक्तमेव वा यथारहं अविज्ञानुसयपरिक्षि-
तेन तण्डानुसयमूलकेन संखारेन जनीयमानं संपयुतेहि परिगद्यमानं
सद्गावानमधिट्टानभावेन पुन्वंगमभूतं भवन्तरपटिसंथानवसेन पटि-
संघिसंखातं मानसं उपज्ञमानमेव पविद्वाति भवन्तरे ॥

३७. मरणासन्नदीयियं पनेत्य मंदप्पवद्यानि पद्मेव जवनानि
पाटिक्खिनम्वानि ॥ तस्या यदा पञ्चुपज्ञारम्मणेसु आपायमाणेसु
परन्तेस्येव मरणं होति, तदा पटिसंघिमवंगानं पि पञ्चुपज्ञारम्भ-
णता लब्धनी नि कल्या कामावचरपटिसंघिया छद्मागहितं कम्म-
निमित्तं, गतिनिपित्तं च पञ्चुपज्ञमनीतारम्मणं उपछब्मति । कम्म-
पन भवीतमेव ॥ ते च मनोद्मागहितं ॥ तानि पन सम्बानि पि
परितपम्मभूवानेवारम्मणानि ॥

३८. रूपावचरपटिमधिया पन पञ्चतिभूतं कम्मनिमित्तमेवार-
म्मणं होति ॥ तया आहप्पपटिमधिया च महगतभूतं पञ्चतिभूतं
च कम्मनिमित्तमेव यथारहं आरम्भनं होति ॥ अग्रम्यमसानं भी-
तिगतरहमेव पटिसंघियानेन पविद्वानि ॥ तम्मा हे रूपपटिमधिया
नाम ॥ अस्या अरूपपटिमधिया ॥ सोमा रूपारूपपटिमधिया ॥

३९. आरुप्तुतिया होन्ति हेद्विपारुपवज्जिवा ॥
 परमारुपसंघी च तथा कामविहेतुका ॥
 रूपावचरत्तुतिया अहेतुरद्विता सियुं ।
 सन्या कामविहेतुमहा कामेस्वेव पनेवरा ॥
 अयमेत्य त्रुतिपटिसंधिक्षमो ॥

४०. इश्वेवं गहिवपटिसंधिकानं पन पटिसंधिनिरोपानन्तरतो
 पमृति तमेवारमणमारन्भ तदेव चित्तं याव त्रुतिचित्तुप्पादा असति
 वीयिचित्तुप्पादे भवसस अंगभावेन भवंगसंततिसंखातं मानसं अब्बो-
 च्छज्ज्ञं नदीसोतो विय पवचति । परियोसाने च चबनवसेन
 त्रुतिचित्तं हुता निरुद्धिति ॥ ततो परं च पटिसंपादयो रथचकमिव
 यपाक्षमं एवमेव परिवचन्ता पवचन्ति ॥

४१. पटिसंधिभवंगबीयियो त्रुति चेह तथा भवन्तरे ।
 पुन संयि भवंगमिव्यं परिवचति चित्तसंवति ॥
 पटिसंखाय पनेवमद्गुवं अधिगन्ता पदमधुरं शुषा ।
 मुसमुच्छिभसिनेहवेधना सममेस्सन्ति चिराय मुन्दवा ॥
 इति अभिधम्मत्यसंगदे वीयिमुचकसंगहविभागो नाम
 पञ्चमो परिच्छेदो ॥

५.

(रूपसंगहविभागो)

१. एचावता विभता हि सप्तमेद्ध्यवतिका ।
 चित्तवेतसिका चम्मा रूपं दानि पवुषति ॥
२. समुद्देशा विभागा च समुद्दाना कलापतो ।
 पदविहमवो वेति पञ्चात्मा तत्य संगरो ॥

३. चत्तारि महाभूतानि चहुङ्गं च महाभूतानं उपादाय । रूपं ति
दुविष्ये पेनं रूपं एकादसविष्येन संगई गच्छति ॥

४. कथं ? पठबीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, पृतल्लै
नाम ॥ चवसु, सोतं, पानं, निव्वा, कायो, पसादरूपं नाम ॥ रूपं,
सहो, गंथो, रसो, आपोधातुविष्येन भूतचपसंखारं फोटूम्बं, गोच-
ररूपं नाम ॥ इत्यत्तं, पुरिसत्तं, भावरूपं नाम ॥ इदयत्तु इदयरूपं
नाम ॥ जीविनिन्द्रियं जीविनरूपं नाम ॥ कवबीक्षारो आहारो
आशाररूपं नाम ॥ इति च अट्टादसविष्ये पेनं रूपं, समावरूपं, सङ-
बद्धणरूपं, निष्कल्परूपं, रूपरूपं सम्मसनरूपं ति च संगई गच्छति ॥

५. आसामधातु परिच्छेदरूपं नाम ॥ कायविज्ञवति, वची-
विज्ञवति, विज्ञवतिरूपं नाम ॥ रूपसस लहुता, मुदुता, कम्मज्जता,
विज्ञवतिद्वये विहाररूपं नाम ॥ रूपसस उरचयो, संतति, जरता,
अनिषता, लस्तुगरूपं नाम ॥ जानिरूपमेव पनेत्य उपचपसंतनि-
नामेन पशुपती ति ॥ एकादसविष्ये पेनं रूपं अट्टोसविष्ये होति
महारसेन ॥

६. कथं ?

भूतण्मादरिगया भावो इदयमिष्यपि ।

ओरिताहाररूपंहि भद्वारमसिष्ये तथा ॥

परिच्छेदो च विज्ञवति विकारो-म्लगणे ति च

अविकल्पा दमा चेति अट्टोसविष्ये भरे ॥

अयमेव्य रूपमस्तु इमो ॥

७. मन्त्रं च पनेतं नरं अदंतुर्ह, मारचय, गामर, संतार,
ओहियं, कामादवर, भनाम्पर्ण, भावाहातमभेदा ति एक्षात्पि ति
अद्विष्यिष्टातिगदिगंतं शूना येद् गारणि ॥

८. कथं ? एकादसविष्ये पक्षात्पि ति भगवनिहाली नाम ।
इतरं वाहिररूपं ॥ रामादरहयवैष्यानं उमिरे ति वायुस्त्रे नाम ।

इतरस्त्रायुर्वं ॥ रागाद्विष्णवित्तेत्वात् सप्तदिवं पि द्वारुर्वं नाम ।
इतरप्रारुर्वं ॥ पराद्-भाव-जीवित्तेत्वात् अद्विभे पि इन्द्रियर्वं
नाम । इतरप्रविनिष्ठ्यर्वं ॥ पराद्-शिगयमेत्वात् द्वादसदिवे पि
ओन्नास्त्रर्वं, सन्तिर्वं, सप्तदिवर्वं च । इतरं एतुष्पर्वं,
द्वेष्पर्वं, अप्पटिष्पर्वं च ॥ काम्यते इतादिष्ट्यर्वं । इतरं अनु-
पादिष्ट्यर्वं ॥ रुपायतने सनिदस्तनर्वं । इतरं अनिदस्तनर्वं ॥
परम्यादिष्ट्ये अग्रेत्तदत्तेन, पानादिष्ट्ये संपत्तवत्तेना त्रि पश्चिमे
पि गोपरम्यादिष्ट्यर्वं । इतरं अगोपरम्यादिष्ट्यर्वं ॥ बण्डो, गैयो,
एगो, ओमा, भूत्तदत्तुर्वं देवति अद्विभे पि अविनिष्ठ्यांगर्वं । इतरं
दिविष्ठ्यांगर्वं ॥

१०९. इत्येवपृथीसविविष्टे पि च विचवत्तणा ।

अग्रहचित्तादिवेदेन दिष्ट्यन्ति पयारह ॥

अयमेत्य रूपदिभागो ॥

११०. काम्य, चित्त, उठ, आदारो देवति चत्तारि रूपसमृद्धानानि
नाम ॥

१११. वृत्त्य कामावचरं रूपावचरं देवति पञ्चवीसविविष्टे पि शुस-
स्थाकुमलकम्पमधिसंखतं अग्रहचित्तसंक्षामें कम्पसमृद्धानर्वं पटिसंपि-
षुपादाय खण्डे खण्डे समृद्धार्पति ॥

११२. अरूपदिवाक-द्विष्ट्यविष्ट्याणवज्जितं पञ्चसत्त्विविष्टे पि
चित्तं चित्तमसृद्धानर्वं पठमयंगसृपादाय जायन्तमेव समृद्धार्पति ॥
वृत्त्य अप्पनामनने इरियापथे पि सम्मार्पति ॥ सोद्ग्रहन-कामावचर-
जवनाभिष्ट्या पन विष्ट्यत्ति पि समृद्धार्पति ॥ सोमनस्सनवनानि
पनेत्य तुरस इसने पि जनेन्ति ॥

११३. सीतुण्होकुमपञ्चाना देवोषाद्वु वितिष्पत्ता च उदुसमृद्धानर्वं
अग्रहत्ते च वहिदा च पयारहं समृद्धार्पति ॥

३. चत्तारि महाभूतानि चतुर्व्वयं च महाभूतान् उपादाय रूपं ति
दुविष्यं पेतं रूपं एकादसविष्येन संगमं गच्छति ॥

४. कथं ? पठ्वीशातु, आपोशातु, तेजोशातु, वायोशातु, भूतरूपे
नाम ॥ चक्षु, सोवं, धानं, निब्दा, कायो, पसादरूपं नाम ॥ रूपं,
सहो, गंयो, रसो, आपोशातुवज्ञितं भूतत्त्वयमंखाते फोड्ल्ये, शोभ-
ररूपं नाम ॥ इत्थर्त्तं, पुरिसत्तं, मात्ररूपं नाम ॥ हृदयवत्त्यु हृदयरूपे
नाम ॥ जीविनिन्द्रियं जीवितरूपं नाम ॥ कबल्लीकारो आहारो
आहाररूपं नाम ॥ इति च अद्वारसविष्ये पेतं रूपं, समावरूपं, सङ्क-
षणरूपं, निष्पक्षरूपं, रूपरूपं सम्प्रसनरूपं ति च संगमं गच्छति ॥

५. आकाशधातु परिच्छेदरूपं नाम ॥ कायविज्ञवति, दक्षी-
विज्ञवति, विज्ञवत्तिरूपं नाम ॥ रूपस्त लहुता, मुदुता, कम्पस्तुता,
विज्ञवत्तिदृयं विकाररूपं नाम ॥ रूपस्त उपचयो, संतति, जरता,
अनिष्टता, मृत्युगरुपं नाम ॥ जातिरूपमेव पनेत्य वृपवपर्मेतति-
नानेन पृथगती ति ॥ एकादसविष्ये पेतं रूपे अद्वौसविष्ये होति
मरुपवर्गेन ॥

६. कथं ?

भूतप्पमादरिमया भाषो हृदयमिष्यति ।

जीविताहाररूपंहि भद्वारमविधं तथा ॥

परिच्छेदो च विज्ञवति विकारोऽमरणं ति च

अनिष्टता दमा यंति अद्वौसविष्ये भवे ॥

अयमेव्य व्यापमूदेमो ॥

७. मर्दे य पनेतं स्त्रि अदेतुर्द, मण्डय, नामर, गंतते,
सोहियं, कापादभर, भनारम्भर, भण्डारम्भमेता ति एकरिष्ये ति
भाश्चनिद्वाडिगदिवर्गेन वद्युता भेदे गरणति ॥

८. कथं ? वमादर्वेषाने प्रसिद्धे ति भग्नगिहाळी नाम ।
इर्द वाहिररूपं ॥ वमादर्वेषाने उभिष्ये ति व्यूल्लभे नाम ।

इतरप्रयुक्ति ॥ पताद्विद्वचिसत्त्वातं सत्त्वविधि पि द्वाररूपं नाम ।
इतरपद्वाररूपे ॥ पताद्-पाद-जीवितमैत्याते अहविधि पि इन्द्रियरूपे
नाम । इतरपनिन्द्रियरूपे ॥ पताद्-विसायसत्त्वातं द्वादसविधि पि
अब्द्यादिफलरूपे, सन्ति केरूपे, मध्यटियरूपे च । इतरं सुहुपरूपं,
द्वेरूपे, अभटियरूपे च ॥ कम्मने उपादिष्टरूपं । इतरं अनु-
पादिष्टरूपं ॥ रूपायत्तनं सनिदम्भानरूपं । इतरं अनिदम्भानरूपं ॥
उपतादिदृष्टे अमेपत्तविसेन, पानादिष्टये संपत्तवसेना ति पञ्चविधि
पि गोधरगाहिकरूपे । इतरं अगोचरगाहिकरूपे ॥ वणो, गैथो,
रमो, ओजा, भूतचतुर्क चेति अहविधि पि अविनिभांगरूपे । इतरं
विनिभांगरूपं ॥

९. इषेवपद्वीसविविधि पि च विचरणा ।

अञ्जश्चिकादिभेदेन विभजन्ति यथारह ॥

अयमेत्य रूपविभागो ॥

१०. कम्म, चित्त, चतु, आहारो चेति चत्तारि रूपसमुद्भानानि
नाम ॥

११. तत्य कामावचरं रूपावचरं चेति पञ्चवीसविविधि पि तुस-
लामुसलकम्मभिसंखतं अञ्जश्चिकासंवाने कम्मसमुद्भानरूपं पटिसंघि-
ष्पादाय खणे खणे समुद्भापेति ॥

१२. अरूपविपाक-द्विपञ्चविड्याणवज्जितं पञ्चसत्त्वविधि पि
चित्तं चित्तसमुद्भानरूपं पठमभरंगमुपादाय जायन्तमेव समुद्भापेति ॥
तत्य अप्यनानवनं इरियापथे पि सत्त्वामेति ॥ बोद्धन-कामावचर-
जवनाभिष्ठा पन विड्यति पि समुद्भापेति ॥ सोमनस्सजवनानि
पनेत्य तेरस इसने पि जनेन्ति ॥

१३. सीतुण्होतुसमझाना तेजोथातु दितिष्पत्ता च उतुसमुद्भानरूपं
अञ्जहर्च च वहिदा च यथारह समुद्भापेति ॥

१४. ओजासंखातो आहारो आहारसमुद्भानरूपं अग्नोहरणकाठे
वानप्पत्रो च समुद्भाषेति ॥

१५. तत्य इदय-इन्द्रियरूपानि कम्मजानेव ॥ विज्ञतिद्वयं वि-
त्तजमेव ॥ सद्गो चित्तोद्गुणो ॥ लहुवादित्तये उद्गुचिचाहारेहि संभो-
वि ॥ अविनिब्योगरूपानि वेव आकासधातु च चतुर्दि संभूतानि ॥
लक्खणरूपानि न कुनोचि जायन्ति ॥

१६. अद्वारस पञ्चरस तेरस द्वादसा ति च ।

कम्म-चित्तोद्गुकाहारजानि होन्ति यथाकर्म ॥

जायमानादिरूपानं सभावत्ता हि केवलैः ।

लक्खणानि न जायन्ति केहिची ति पकासितं ॥

अयमेत्य रूपसमुद्भाननयो ॥

१७. एकुणादा एकनिरोधा एकनिस्तया सहवुचिनो एकवीसति
रूपकलापा नाम ॥

१८. तत्य जीवितं, अविनिब्योगरूपं च चक्षुना सह चक्षुर-
सकं ति पबुचति । तथा सोवादीहि सद्गि सोवदसकं, धानदसकं,
जिब्दादसकं, कायदसकं, इत्यभावदसकं, पुम्भावदसकं, वत्थुदसकं,
चेति यथाकर्म योजेतन्वं ॥ अविनिब्योगरूपमेव जीवितेन सह जीवि-
तनवकं ति पबुचति ॥ इमे नव कम्मसमुद्भानकलापा ॥

१९. अविनिब्योगरूपं पन मुद्धकं ॥ तदेव कायविज्ञतिया
सह कायविज्ञतिनवकं । वचीविज्ञति-सद्गेहि च सह वचीविज्ञति-
तिदसकं । लहुवादीहि सद्गि लहुवादेकादसकं । कायविज्ञति-
हुवादिदादसकं वचीविज्ञति-सह-लहुतादितेरसकं चेति च
चित्तसमुद्भानकलापा ॥

२०. मुद्धकं, सहनवकं, लहुतादेकादसकं, सहलहुवादिदादसकं
चेति घचारो उद्गुसमुद्भानकलापा ॥

२४. एव्यहर्त्ता, अनुपारेकादगर्ह देति हे आदारगम्भृतानकलापा ॥

२५. ग्राम एव्यहर्त्ता, गर्दनवर्द्धेति हे उत्तुगम्भृतानकलापा वीर्दा
दि लक्ष्यनिः । अरगोत्ता एव गम्भे पि अग्नश्चिह्नस्त्रे ॥

२६. इत्यर्थोत्तुगम्भृतानागम्भृताना यथावै ।

न एव एव्यहर्त्ता हे ति वक्तापा एव शीर्षति ॥

इत्तुगम्भृते वर्त्त्वं वर्त्त्वं वर्त्त्वं वर्त्त्वं ।

म वक्तारेणदिवादु आवाग्ने लक्ष्यनानि ए ॥

अद्येत्य वक्तारदोग्ना ॥

२७. गम्भानि पि एनेकानि स्थानि कामलोके यथार्ह अनूनानि
परित्यज्य उपस्थित्यन्ति ॥ एटिमधियं एन गंतेदग्नाने वेव ओपसाति-
काने ए उत्तुगु-गोत्-यान-जिज्ञा-काय-भाव-उत्तुदग्नकमेसाकानि
एव दग्नानि पातुभवन्ति उपदृष्टवेन । ओपकवगेन एन उत्तुगु-
गोत्-यान-शावदग्नानि वक्तापि पि न लभन्ति ॥ तस्मा वेगे
वगेन वक्तापरानि देवित्यस्मा ॥ गव्यमेत्यक्तानाने एन काय-भाव-
उत्तुदग्न गंताकानि तीणि दग्नानि पातुभवन्ति ॥ तत्यापि
भावदगर्ह कहापि पि न लभति ॥ ततो परं परचिह्नाते कमेन
उत्तुदग्नपादीनि ए पातुभवन्ति ॥

२८. इत्येवं एटिमधिमुपादाय उत्तुमसम्भृताना, दुवित्यचिच्छमुपादाय
चिच्छम्भृताना, टितिकालमुपादाय उत्तुमसम्भृताना, ओजापरणमुपा-
दाय आदारसम्भृताना वेति उत्तुमसम्भृतानरूपकछापसन्तति कामलोके
दीपकाला विष नदीसोंतो रिष ए यावतायुक्तपञ्चोच्चित्ते पर-
ति ॥

२९. मरणामे एन चुतिचित्तोपरि-सचरमपचित्तस्म डितिकाल-
मुपादाय उत्तुमप्रलयानि न उप्यज्जन्ति । पुरेवरम्भमानि ए उत्तु-
मरूपानि चुतिचित्तसचरमकालमेव परचित्त्वा नेनहन्ति ॥ ततो

१४. ओजस्संसातो आहारो आहारसमुद्भानरूपं अज्ञोहणकावे
वनप्पचो व समुद्भाषेति ॥

१५. तत्य इद्य-इन्द्रियरूपानि कम्मजानेव ॥ विज्ञतिश्च चि-
त्तजनेव ॥ सहो चित्तोत्तुनो ॥ लहुआदित्यं उद्युचिताहरेरि संभो-
ति ॥ अविनिष्ठोगरूपानि चेत आकासधानु च चतुहि संभूतानि ॥
अवस्थगरूपानि न कुर्वोचि जायन्ति ॥

१६. अद्वारस पश्चरस तेरस द्वादसा वि च ।

कम्म-चित्तोत्तुकाहरजानि होन्ति यथाह्यं ॥

जायमानादिरूपानं समावत्ता हि केवलं ।

अवस्थणानि न जायन्ति केहित्वी ति पकासिवं ॥

अयमेत्य रूपसमुद्भाननयो ॥

१७. एकप्यादा एकनिरोषा एकनिस्तया सद्युचिनो एकत्रीसर्ति
रूपकल्पाणा नाय ॥

१८. कन्य जीवितं, अविनिष्ठोगह्यं च परमुना सह चरण-
मर्कं ति पशुष्टिं । तथा सोतादीहि मद्दि मोतदसर्क, पानदसर्क,
नित्यादमर्क, कायदमर्क, इत्यिषायदसर्क, पुम्मादसर्क, व्युदमर्क,
येति यथाह्ये योजेतन्मये ॥ अविनिष्ठोगरूपमेव जीवितेन सह फोटि-
तनरक्तं ति पशुष्टिं ॥ इमे नद कम्मगम्भूतानहकारा ॥

१९. अविनिष्ठोगह्यं पन गुदहर्कं ॥ गदेर कायदित्ततिषा
मह कायदित्ततिनरक्तं । वयोरित्ततिन-गदेरहि थ मह वयोरित्त-
तिनरक्तं । छूतादीहि मद्दि छूतादेकादमर्कं । कायदित्ततिष-
तुदादिदादमर्कं वयोरित्ततिन-गद-छूतादित्तरक्तं येति ॥
विनममुद्भानहकारा ॥

२०. मृदहर्कं, मरनरक्तं, छूतादेकादमर्कं, गदमृतादित्तरक्तं
येति चकारं चमुपमुद्भानहकारा ॥

२३. एदहर्वं, ज्युतादेवादगर्वं देति हे आदारमसुद्वानकल्पासा ॥
२४. गन्ध एदहर्वं, गरनरवः देति हे ज्युगमसुद्वानकल्पासा इहिदा
पि लक्ष्मनिः । अदरोगा एन गन्धे पि अन्तर्विकल्पे ॥

२५. कम्पिष्ठोज्जारारमसुद्वाना प्रयाशये ।

गद ए रुरो हे ति कलापा एकदीमति ॥

इलापाने परिष्ठेद्वयवणाता विषवरणा ।

प इलापानमिदाहु आकारं उवरणानि च ॥

अयदेय बहापयोगना ॥

२६. गन्धानि पि वनेजानि स्प्लानि कामलोके पशारई अनूनानि
पश्चिये एषमध्यन्ति ॥ पटियेष्यं एन मंसोदजाने षेष ओपपाति-
जाने च चरण-गोत-पान-गिर्हा-काय-भाव-चतुर्दसकर्मसातानि
गत दग्धानि पातुभरन्ति उरद्धरेन । ओमहवरेन एन चरण-
गोत-गोत-पान-पावदग्धानि बद्धाचि पि न लक्ष्मनि ॥ तस्मा हेमे
एगेन कलापहानि वेदितव्या ॥ गन्धसेष्यकसनाने पव काय-भाव-
चतुर्दशकर्मसातानि कीणि दग्धानि पातुभरन्ति ॥ तत्यापि
भावदग्धकर्मसातानि बद्धाचि पि न लक्ष्मनि ॥ ततो परे पवतिशाले कमेन
चरणदग्धकार्दीनि च पातुभरन्ति ॥

२७. इयेवं पटिसेपिष्ठुपादाय कम्पसमुद्वाना, दुविष्विचम्पुपादाय
चित्तमसुद्वाना, टितिकालम्पुपादाय उत्तमसुद्वाना, ओनाफरणम्पुपा-
दाय आदारमसुद्वाना चेति उत्तमसुद्वानरूपकलापसन्ति कामलोके
दीपनाला दिय नदीसोतो विय च यावतायुकम्प्लोच्छज्ञे पव-
तनि ॥

२८. घरणसाले एन शुलिचित्तोषरि-सत्तरमवित्तस्ता डितिकाल-
म्पुपादाय कम्पमरूपानि न उप्पज्ञन्ति । पुरेतरम्पुपानि च कम्प-
मरूपानि शुलिचित्तसमकालमेव पवतित्वा निष्मन्ति ॥ ततो

परं चिचनाहारनरूपं च शोच्छज्जति ॥ ततो परं चतुर्समुद्धानरूपं परंपरा याव यनकव्येरसंखावा पवत्तन्ति ॥

२७. इश्वरे पवसचानं पुनर्देव भवन्वरे ।

पटिसंधिमुपादाय तथारूपं पवत्तति ॥

२८. रूपलोके पन धान-निव्वा-काय-भावदमकानि वेद आहार-जक्कापानि च न लघ्मन्ति ॥ तस्मा तेसं पटिसंधिकाले चरण-सौन-चत्युवसेन तीणि दमकानि जीवितनकं चंति चरारो कम्ब-समुद्धानकलापा पवत्तियं विचोत्तुसमुद्धाना च लघ्मन्ति ॥ असम्भ-सत्तानं पन चरण-मोत-चत्यु-सदानि पि न लघ्मन्ति । तथा सन्नानि पि चिचनरूपानि ॥ तस्मा तेसं पटिसंधिकाले जीरिन-नदक्षंर, पवत्तियं च मदवज्ञिनं उत्तुसमुद्धानरूपं अतिरिच्छति ॥ इग्ने काय-रूपामञ्जिमंखानेषु शीषु गानेषु पटिसंधि-पवत्तिसेन दुरिषा रूपारति येदितन्या ॥

२९. अहुरीमति कामेषु होन्ति तेरीस रूपिणु ।

मत्ताग्नेरमन्त्रीने वस्त्रं नस्यि किंवि पि ॥

महो विकारो भरता वरणं शोषयति ।

न लघ्मन्ति परत्तेषु न किंवि पि न लघ्मन्ति ॥

अथमन्त्र रूपपत्तिहयो ॥

३०. निवाने पन छोड्गारंगार्ण चतुर्समग्राग्नेन गच्छानम् यमाहानमारम्भग्नभूतं बानमंगाकाय तथाय निशानना निवाने नि पत्तति ॥ तदेव गमानां एततिथे पि गडाशिग्निशान-यन्तु अनुगादिमेयनिधानात्तु गंति दृष्टिरे होति काणारिया-देव । तथा दुष्कर्ता, अनिमित्त, अनागिदिति गंति गिरि । होति अनुदारनेदेव ॥

१. नो. उत्तुसमुद्धानरूपा च मदवज्ञिनं लंभाण वस्त्रमन्ति ॥

११. एवमसुमदनं अदीक्षयनुपूर्ण ।
निष्ठानमिति भासनि शानुला पर्यग्ये ॥
१२. हति पिति देवगिरु एवं निष्ठानमिष्टिः ।
एवमर्थं एकाग्रं शुभा य लक्षणं ॥
१३. अभिप्रायमर्त्तंगहं स्तरंगाचिष्ठागो नाम
षट् परिच्छेदा ॥

३५४-३५५

३.

(समुच्चयसंग्रहयिभागो)

१. द्वामरुतिविषा युक्ता बहुप्रम्पा सङ्करणा ।
हेतु दानि प्रयाणीयं पवरयामि ममुष्ये ॥
२. अकुमरुतंगहो, पिस्यकर्मगहो, षोपिष्ठिखपर्तंगहो, सम्ब-
रंगहो इति समुच्चयसंग्रहो एवुन्निष्ठो वेदितव्यो ॥
३. वैय ? अकुमरुतंगहे ताव, चत्तारो आसवा । कामासवो,
भवासवो, दिहामवो, अविज्ञामवो ॥
४. चत्तारो ओया । कामोयो, भवोयो, दिहोयो, अविज्ञोयो ॥
५. चत्तारो योगा । कामयोगो, भवयोगो, दिहियोगो अवि-
ज्ञायोगो ॥
६. चत्तारो गन्या । अभिज्ञा कायगन्यो, ज्यापादो कायगन्यो,
सीलव्युतप्रापादो कायगन्यो, इदंसत्ताभिनियंसो कायगन्यो ॥
७. चत्तारो उपादाना । कामुपादानं, दिहुपादानं, सीलव्यु-
पादानं, अत्तवादुपादानं ॥

८. छ नीवरणानि । कामच्छन्दनीवरणं, व्याशादनीवरणं, वीर-
मिदनीवरणं, उद्धवहृष्णुवनीवरणं, विचिकित्तानीवरणं, अर्द्ध-
ज्ञानीवरणं ॥

९. सत्तानुसया । कामरागानुसयो, मवरागानुसयो, पटिग-
नुसयो, मानानुसयो, दिष्टानुसयो, विचिकित्तानुसयो, अस्त्रा-
नुसयो ॥

१०. दम मंयोजनानि । कामरागसंयोजनं, व्याशागसंयोजनं,
अस्त्ररागसंयोजनं, पटियमंयोजनं, मानमंयोजनं, दिष्टमंयोजनं,
गीत्यन्वयरागमंयोजनं, विचिकित्तामंयोजनं, उद्धवमंयोजनं,
अदित्तामंयोजनं, सुखनं ॥

११. मररानि दम माँनि । कामरागमंयोजनं, मरराग-
योजनं, पटियमंयोजनं, मानमंयोजनं, दिष्टमंयोजनं, गीत्यन्वय-
रागमंयोजनं, रिविकित्तामंयोजनं, इस्मामंयोजनं, पर्त्तिर-
मंयोजनं, अदित्तामंयोजनं भ्रमिष्यते ॥

१२. दम हिंसा । ओषो, दोषो, मोहो, मानो, रिडि, फिरि-
हिराला, वीने, उद्धव, अहिरिक, अनोहर्ष ॥

१३. आगरादिगु पनेल्प छाप-भवनामेन तप्तायुषा तप्ता भर्ति-
लंता । गीत्यन्वयरागमासो, इरंगषामिनिमासो, आगरासो ॥ १४
तप्ता तप्ती दिष्टिगमेन पत्तुर्ति ॥

१४. आगरोहा च योगा च तप्तो गन्धा च बन्धुओ ।

उगाजना दूरं युक्ता अहृ नीरणा गिर्ह ॥

छट्टानुसया हाँनि नह गैरोदना यता ।

हिंसा दम दूरोहै तप्ता वार्गंगरो ॥

१५. शिष्यर मंदां छ हेतु । ओषो, दोषो, मोहो । अहोहो,
उद्धवो, असोहो ॥

१६. एष हानेगानि । विजदो, रिषारो, शीति, एकलाग, तो-
द्वारो, दोद्वारो, द्वंद्वादा ॥

१७. द्वादश अभीजानि । गम्यादिः, गम्यावैकापो, गम्याराशा,
गम्यावस्थापो, गम्याभावीपो, गम्यारापादो, गम्यागति, गम्या-
गताधि । दिस्यादिः, दिस्यामेकाशो, दिस्यारापादो दिस्या-
गताधि ॥

१८. एवीततिनिद्रिषानि । एवतुन्दिष्य, गोत्रिन्दिष्य, पात्रिन्दिष्य,
पितृन्दिष्य, दायिन्दिष्य, इयिन्दिष्य, दुरितिन्दिष्य, जीवितिन्दिष्य,
पवित्रिन्दिष्य, एवितन्दिष्य, दुरितन्दिष्य, गोपनरितन्दिष्य दोपनस्ति-
न्दिष्य, एवेवितन्दिष्य, गद्धिन्दिष्य, विरिपित्रिन्दिष्य, सविन्दिष्य, समा-
धिन्दिष्य, पठितन्दिष्य, अनङ्गालङ्गा । शीतिष्य, अङ्गिष्यन्दिष्य,
अङ्गालङ्गाविन्दिष्य ॥

१९. एव दलानि । गद्धार्दण, विरियर्दण, रात्रदण, समाधिदण,
एङ्गालङ्ग, तिरिषर्दण, ओषध्यर्दण, अहिरिकर्दण, अनोष्पर्दण ॥

२०. एकारो अपिएतो । उद्धापिति, विरिपापिति, पिता-
पिति, शीतगापिति, ॥

२१. एकारो आहारा । एवतीकारो आहारो, परसो दुतियो,
पनोगेचेतना तविष्या, दिष्ट्वाणं चतुर्थे ॥

२२. इन्द्रियेषु पनेष्य सांकाशतिमग्नाणं अनङ्गालङ्गसापी-
तिन्दिष्य । अरदणगद्धाणं अङ्गालङ्गविन्दिष्य । मङ्गो छ लाणानि
अङ्गिजन्दिषानो ति बुशन्ति ॥ जीवितिन्दिष्यं च रूपारूपवसेन
दुरिष्य होति ॥

२३. पश्चरिष्मागेषु ज्ञानेगानि, अविरियेषु एकानि, अदेहोषु
यम्भगानि च द्वम्भन्ति ॥ तथा विषिकिर्षणावित्ते दृक्गता, मग्नि-

८. छ नीवरणानि । कामच्छन्दनीवरणं, व्यापादनीवरणं, थीव
मिद्धनीवरणं, उद्धचकुकुचनीवरणं, विचिकिच्छानीवरणं, अवि
ज्ञानीवरणं ॥

९. सच्चानुसया । कामरागानुसयो, भवरागानुसयो, पटिय
नुसयो, मानानुसयो, दिहानुसयो, विचिकिच्छानुसयो, अविज्ञा
नुसयो ॥

१०. दस संयोजनानि । कामरागसंयोजनं, रूपरागसंयोजनं
अरूपरागसंयोजनं, पटियसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिहिसंयोजनं
सीलब्बतपरामाससंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, उद्धचसंयोजनं
अविज्ञासंयोजनं, मुक्तन्ते ॥

११. अपरानि दस सांनि । कामरागसंयोजनं, भवराग-
योजनं, पटियसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिहिसंयोजनं, सीलब्बतप
रामाससंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरिय-
संयोजनं, अविज्ञासंयोजनं अभिधम्भे ॥

१२. दस किलेसा । लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दिडि, विचि-
किच्छा, धीनं, उद्धचं, अहिरिकं, अनोशार्पं ॥

१३. आसवादिषु पनेत्य काम-भवनामेन तब्बत्युका तण्णा अवि-
प्त्वा । सीलब्बतपरामासो, इदंसथाभिनियेसो, अचवादो वि-
षया पवर्ते दिव्विगतमेव पबुद्यति ॥

१४. आसवोप्या च योगा च सयो गन्या च बत्युतो ।
वपादाना दुषे युता अहु नीवरणा सियुं ॥
छवेवानुसया हीन्ति नव संयोजना मता ।
किलेसा दस युत्तोर्य नवथा पापसंगहो ॥

१५. मिसारु संगडे ए हेतु । लोभो, दोसो, मोहो । अलोभो,
अदोसो, अमोहो ॥

१६. गग शानेगानि । रित्यो, शिवारो, पीति, एकग्रता, सो-
क्षणारो, दोषनारो, दरंवाया ॥

१७. द्वादश शम्मानि । शम्मादिष्टि, शम्मागैकाप्तो, शम्मावाचा,
शम्माइम्पल्लो, शम्माभागीयो, शम्मावायामो, शम्माराति, शम्मा-
गामाधि । मिर्जादिष्टि, मिर्जामंकल्पो, मिर्जावायाप्तो मिर्जा-
गामाधि ॥

१८. दारीमतिनिद्रियानि । घरएन्द्रिय, सोविन्द्रिय, पानिन्द्रिय,
मिहिन्द्रिय, घापिन्द्रिय, इम्यिन्द्रिय, शुरिमिन्द्रिय, जीविनिन्द्रिय,
शविनिन्द्रिय, शुरिनिन्द्रिय, दुखितनिन्द्रिय, गोमनसिनिन्द्रिय दोषनसिस-
निन्द्रिय, घरेविविन्द्रिय, शदिनिन्द्रिय, विरियनिन्द्रिय, सविनिन्द्रिय, समा-
पिनिन्द्रिय, पट्टिविन्द्रिय, अनङ्गातङ्ग । मीतिय, अछिविन्द्रिय,
अच्छात्ताविनिन्द्रिय ॥

१९. नव षलानि । गच्छार्थ, विरियर्थ, रात्रयर्थ, समाप्तिर्थ,
पञ्चाशर्थ, दिरिषर्थ, ओत्तरपश्चर्थ, अहिरिषर्थ, अनोपपश्चर्थ ॥

२०. घचारो अधिष्ठो । उन्द्रापिष्ठि, विरियापिष्ठि, पिचा-
पिष्ठि, शीर्षमापिष्ठि ॥

२१. घचारो आहारा । कष्टीघारो आहारो, फस्तो दुतियो,
मनोगंदेवना तत्त्विया, विष्वाणं घदुर्घ्य ॥

२२. इन्द्रियेषु पनेन्य सीतापतिपथज्ञाणे अनङ्गातङ्गस्सामी-
निन्द्रिय । अरहत्तपालज्ञाणे अङ्गाताविनिन्द्रिय । पञ्चे छ आणानि
अछिजनिन्द्रियानो ति युष्मन्ति ॥ जोविनिन्द्रियं च रूपाख्यवसेन
दुविष्ठं होति ॥

२३. पञ्चविष्वाणेषु शानेगानि, अविरियेषु षलानि, अदेतुकेषु
पर्मगानि न दर्शन्ति ॥ तथा विचिकित्ताचित्ते पक्षगता मगि-

निद्रियवलम्बादे न गच्छति । द्विदेहुक-विदेहुकजनवनेस्वेव पृथासंकरं
अधिपति एकोव लब्धभृति ॥

२४. छ हैरु पञ्च ज्ञानेगा मगंगा नव वत्युतो ।

सोऽसिन्द्रियवम्मा च वलयम्मा नवेरिता ॥

चत्तारोविषपती बुद्धा तथाहारा ति सत्तवा ।

कुसलादिसमाकिण्णो बुद्धो मिस्सकसंगहो ॥

२५. वीथिपत्रिखयसंगहे चत्तारो सतिपद्माना-
सतिपद्मानं, वेदनानुपस्तनासविपद्मानं, चित्तानुपस्तनासविपद्मानं,
थम्मानुपस्तनासविपद्मानं ॥

२६. चत्तारो सम्पत्पथाना । उपज्ञानं पापकानं धम्मानं पहानाय
वायामो, अनुपज्ञानं पापकानं धम्मानं अनुप्पादाय वायामो, अनु-
पज्ञानं कुसलानं धम्मानं उप्पादाय वायामो, उपज्ञानं कुसलानं
धम्मानं भिल्योभावाय वायामो ॥

२७. चत्तारो इद्विपादा । उन्दिद्विपादो, विरिथिद्विपादो, वि-
तिद्विपादो, वीर्मसिद्विपादो ॥

२८. पश्चिन्द्रियानि । सद्दिन्द्रियं, विरितिन्द्रियं, सतिन्द्रियं,
समाविन्द्रियं, पञ्चिन्द्रियं ।

२९. पञ्च वश्चानि । सद्वावलं, विरिवलं, सतिवलं, समाविरलं,
पञ्चवलं ॥

३०. सण शोऽङ्गंगा । मनिसंषोऽङ्गंगो, पाम्पविचपस्तोऽङ्गंगो,
विरियमंषोऽङ्गंगो, पीनिमंषोऽङ्गंगो, पञ्चदिग्मंषोऽङ्गंगो, सपावि-
संषोऽङ्गंगो, उपाम्पामंषोऽङ्गंगा ॥

३१. अह पर्माणानि । गम्मादिटि, गम्मामैक्षणो, गम्मावाषो,
गम्माकम्लो, गम्माभासीषो, गम्मावायामो, गम्मामति, गम्मा-
समाविति ॥

१०. एव्य एन एसारो गतिपद्माना ति भग्नादति एषा च एवु-
इति । शेषा एसारो गम्यादप्साना ति च भग्नादायापो ॥
११. इन्द्रो पितृमुरेवया च गद्बाससदिसीतियो ।
गद्बादिति च गंशस्त्रो लायापो विरतितये ॥
भग्नादति भग्नापो ति चुरमो गम्नादनो ।
महतित्प्रमेदन गच्छा तत्य गंगदो ॥
१२. गंडाप्परगदि च वीतूपेवया
इन्द्रो च चित्ते विरतितये च ।
महेष्वदाना विरिये नवह
गर्भी...गर्भी एहु पञ्च गम्ना ।
गद्बा दृटानुरुपगतिग-
भग्नानमंगो पहरो विभागो ॥
१३. गम्बे लोहुतरे होनि न शा गंकल्पसीतियो ।
लोकिये पि यथापोरे उभियुद्दिष्ट्यदियं ॥
१४. सत्यगंगां पश्चपरवन्था । रूपवरवन्थो, वेदनावरवन्थो, सङ्ख्या-
वरवन्थो, रीत्यावरवरवन्थो, विज्ञाणवरवन्थो ॥
१५. एञ्चुपादानवरवन्था । रुचुपादानवरवन्थो, वेदनुपादानवरव-
न्थो, रज्जुपादानवरवन्थो, संखापादानवरवन्थो, विज्ञाणुपादान-
वरवन्थो ॥
१६. द्वादसायतनानि । घवत्यायतनं, सोत्यायतनं, पानायतनं,
मित्यायतनं, कायायतनं, यन्नायतनं । रूपायतनं, सहायतनं, गन्धा-
यतनं, रसायतनं, फोटून्यायतनं, पम्मायतनं ॥
१७. अद्वारस धातुयो । घवत्यापातु, सोत्यापातु, पानधातु, मित्या-
पातु, कायधातु । रूपपातु, राद्यधातु, गन्धधातु, रसधातु, फोटून्य-
धातु । एवत्युविज्ञाणधातु, सोत्विज्ञाणधातु, पानविज्ञाणधातु,

जिव्हाविज्ञाणवात्, कायविज्ञाणवात् । मनोवात्, घम्यवात्, मनो-
विज्ञाणवात् ॥

४० चत्तरि अरियसचानि । दुक्खं अरियसचं, दुखसमुदयं अ-
रियसचं, दुखनिरोधं अरियसचं, दुखनिरोधगमिनीपटिष्ठा
अरियसचं ॥

४१. एत्य पन चेतसिक-मूसुमरुप-निज्ञानवसेन एहनमर्ति
घम्या घम्यायतनं घम्यवात् वि च संखं गच्छन्ति ॥ मनायतनमेव
सत्त्वविज्ञाणवात्वसेन भिज्जन्ति ॥

४२. रूपं च वेदना सञ्चा सेसा चेतसिका वथा ।

विज्ञाणमिति पञ्चते पञ्चवत्त्वन्वा वि भासिता ॥

पञ्चुपादानवत्त्वन्वा वि तथा तेभूपक्षा पता ।

मेदाभावेन निज्ञानं खन्यसंगहनिस्सं ॥

द्वारालंबनमेदेन भवन्त्वायतनानि च ।

द्वारालंबतदुप्पन्नपरियापेन घातुयो ॥

४३. दुखं तेभूपकं वह्न तण्डा संमुद्रयो भवे ।

निरोपो नाम निज्ञानं पम्बो छोकुत्तरो भडो ॥

पग्युचा फला चेव चतुसंविनिस्सदा ।

इति पञ्चपमेदेन पवृचो सञ्चर्मगदो ॥

इति अभियम्यत्यसंगहे समुद्धयमंगहविभागो नाम
सत्त्वपो परिच्छेदो ॥

८.

(पद्यसंग्रहविभागो)

१. ये संखवधम्माने ये अम्मा पद्यया यथा ।
ते विभागमिहेदानि पदवलामि यथारहे ॥
२. पटिष्ठसमुप्पादनयोः पटाननयो वेति पद्यसंग्रहो दुष्पिशो
येदित्यशो ॥
३. तत्य तन्मावमाविभावाकारमत्तोपलविखतो पटिष्ठसमुप्पा-
दनयो ॥ पटाननयो पन आइय पद्यट्टिमारन्म पतुयति ॥ उभये
पन वोमिस्तत्वा पपञ्चेन्ति आचरिया ॥
४. तत्य अविज्ञापद्यया संखारा । संखारपद्यया विज्ञाणे ।
विज्ञाणपद्यया नामरूपे । नामरूपपद्यया सज्जायतने । सज्जायतन-
पद्यया फस्सो । फस्सपद्यया वेदना । वेदनापद्यया तण्डा । तण्डाप-
द्यया उपादानं । उपादानपद्यया भवो । भवपद्यया जांति । जाति-
पद्यया जरामरण-सोकुरिदेवदुरतदोपनस्मुपायासा सैभवन्ति ।
एवमेवस्स केवलस्स दुरतदेवन्यस्स समुदयो होवो ति ॥ अयमेत्य
पटिष्ठसमुप्पादनयो ॥
५. तत्य तयो अद्भा, द्वाइसंगानि, शीमताकारा, तिसंषिः, चतु-
र्संतेपा, तीणि चट्टानि, द्वे मूँगानि च येदित्यशानि ॥
६. कथे ! अविज्ञासंखारा अतीतो, अद्भा । जातिनसमर्थं
अनागतो अद्भा । भज्जे अद्भुपद्ययो अद्भा ति तयो अद्भा ॥
७. अविज्ञा, संखारा, विज्ञाणे, नामरूपे, सज्जायतने, पस्सो,
वेदना, तण्डा, उपादाने, भवो, जाति, जरामरणे ति द्वाइसंगानि ॥
सोकादिवचने पनेत्य निस्सन्दफलनिदस्सने ॥

८

८. अविज्ञामैसारणगहणेन पनेण्य मन्दूपादानमता ति गाला
भवन्ति । तथा तण्डूपादानमाग्नहणेन च अविज्ञामैत्यारा । तात्पुर-
रामरणगहणेन च विज्ञाणादिकल्पनक्रमेन गतिं ति कला-

अतीते हेतवो पञ्च इदानि फलपत्रहरुं ।

इदानि हेतवो पञ्च आर्यांति फलपत्रहरुं ति ॥

योसनाकारा, तिसैचि, चतुर्संखोग च भवन्ति ॥

९. अविज्ञानमन्दूपादाना च फ्लेसरहरुं । कम्पपत्रमेसानो भाँ-
फदेसो संत्वारा च कम्परहरुं । उपपत्तिभवमेसानो भरेस्तदेसो अ-
वसेसा च विषाक्तरहरुं ति तीणि बट्टानि ॥ अविज्ञावग्नावसंतदे-
मूलानि च षेदितव्यानि ॥

१०. तेसमेव च मूलानं निरोधेन निरुद्घाति ।

जरामरणमुच्छय पीछिवानं अभिगृहसो ॥

आसवानं समुप्पादा अविज्ञा च पंचत्तिं ।

बट्टपावन्यमिथेवं तेभूमकमतादिकं ।

पाठ्यसमुप्पादो ति पढ़रेति महामूलि ॥

११. हेतुपञ्चयो, आरम्भणपञ्चयो, अविष्पतिपञ्चयो, अनन्तरप-
ञ्चयो, समनन्तरपञ्चयो, सद्जानपञ्चयो, अञ्जपञ्जपञ्चयो, निस्त-
यपञ्चयो, उपनिस्तयपञ्चयो, पुरेनातपञ्चयो, पञ्चानातपञ्चयो, आ-
सेवनपञ्चयो, कम्पपञ्चयो, विषाकपञ्चयो, आहारपञ्चयो, इन्द्रिप-
ञ्चयो, ज्ञानपञ्चयो, मग्नपञ्चयो, मंपपुत्रपञ्चयो, विष्पुत्रपञ्चयो, अ-
तियपञ्चयो, नतियपञ्चयो, विगतपञ्चयो, अविगतपञ्चयो ति ॥ अपमेत्य
पड़ाननयो ॥

१२. छद्मा नामे तु नामस्स पञ्चया नामरूपिनं ।

एकया पुन रूपस्स रूपं नामस्स चेकया ॥

पञ्जतिनामरूपानि नामस्स दुश्चिधा दृष्ट्य ।
द्रयस्स नवधा वेति छन्दिधा पञ्चया कर्त्त्य ॥

१३. अनन्तरनिरदा चित्तवेत्तसिका धम्मा पञ्चुपज्ञाने चित्त-
वेत्तसिकानं धम्मानं अनन्तर-सप्तनन्तर-नतिय-दिग्ब्रहसेन, पुरिमानि
जवनानि पञ्चिधानं जवनानं आसेननवसेन, सहजाता चित्तवेत्तसिका
धम्मा अञ्जमञ्जं संपयुक्तसेनेति च छद्दा नामे नामस्स पञ्चयो
होति ॥

१४. इतुज्ञानंगमग्नंगानि सहजातानं नामरूपानं हेतादिवसेन ।
सहजाता चेतना सहजातानं नामरूपानं, नानाक्तिणिका चेतना
फम्माभिनिव्यतानं नामरूपानं कम्पवसेन । विशाकवस्त्वन्था अञ्ज-
मञ्जं, सहजातानं रूपानं विशाकवसेनेति च पञ्चया नामे नामरूपानं
पञ्चयो होति ॥

१५. पञ्चाजाता चित्तवेत्तसिका धम्मा पुरेनावस्स इमस्स कायस्स
पञ्चाजातवसेनेति एकया च नामे रूपस्स पञ्चयो होति ॥

१६. छ वत्युनि पवत्तिये सर्वत्र विज्ञाणथानून्, पञ्चारम्यणानि
च पञ्चविज्ञाणवीयिया पुरेनाववसेनेति एकया च रूपे नामस्स
पञ्चयो होति ॥

१७. आरम्यणवसेन उपनिस्सयवसेनेति द्रिधा पञ्जतिनाम-
रूपानि नामस्सेव पञ्चया होन्ति ॥ तत्य रूपादिवसेन छन्दिधं होति
आरम्यणी ॥

१८. उपनिस्सयो पन तिविधो होति । आरम्यणूपनिस्सयो,
अनन्तरूपनिस्सयो, परतूपनिस्सयो वेति ॥

१९. तत्य आरम्यणमेव गरुदते आरम्यणूपनिस्सयो ॥ अन-
न्तरनिरदा चित्तवेत्तसिका धम्मा अनन्तरूपनिस्सयो ॥ रागादयो

पन घम्मा, सद्दाद्यो च; शुर्ति, दुर्गति, पुमाली, योगनं, उड्ड
सेनासनं च यथारहं अञ्जनं च बहिद्वा च कृपलादिवम्मानं, कर्म
विपाकानं ति च बहुवा होति पश्चनूयनिस्सर्यो ॥

२०. अधिष्ठिनि-सहजान-अञ्जनमञ्जन-निस्सयादारिद्रिय-वि-
पयुत्त-अत्ति-अविगतवसेनेति यथारहं नववा नापरुणानि नामहानं
पच्चया भवन्ति ॥

२१. तन्य गरुकतमारम्मणं आरम्मगाधिरतिवसेन नामाने,
सहजानाधिरति चतुर्भित्रो पि महजानवसेन सहजावानं नामल्लानं
ति च दुविथो होति अधिष्ठिपच्चयो ॥

२२. चित्तवेत्तसिका घम्मा अञ्जनमञ्जनं सहजानरूपानं च; यद्दा-
भूतो अञ्जनमञ्जनं उपादारूपानं च, पटिसंधिरत्तगे वर्त्यु-विपाका
अञ्जनमञ्जनं ति च तिविथो होति सहजानपच्चयो ॥

२३. चित्तवेत्तसिका घम्मा अञ्जनमञ्जनं, महामृता अञ्जनमञ्जनं,
पटिसंधिरत्तगे वर्त्यु-विपाका अञ्जनमञ्जनं ति च तिविथो होति
अञ्जनमञ्जनपच्चयो ॥

२४. चित्तवेत्तसिका घम्मा अञ्जनमञ्जनं सहजानरूपानं च, महामृता
अञ्जनमञ्जनं उपादारूपानं च, उ वर्त्यूनि सच्चन्नं विञ्चाणवानूने
ति च तिविथो होति निस्सयपच्चयो ॥

२५. कर्वेद्योकारो आहारो इयस्स कायस्स, अरुपिनो आहारा
सहजावानं नापरुणानं ति च दुविथो होति आहारपच्चयो ॥

२६. पञ्च पशादा पञ्चन्नं विञ्चाणानं, रूपजीवितिरिद्रियं उपादिं-
णरूपानं, अरुपिनो इन्द्रिया सहजावानं नापरुणाने ति च तिविर्ती
होति इन्द्रियपच्चयो ॥

२७. ओष्ठनिवसने वर्त्यु विपाकानं, चित्तवेत्तसिका घम्मा सर-

जातस्थानं सहजाववसेनः। पच्छाजाता चित्तवेत्सिका धम्मा पुरेजा-
वस्सः इमस्सः कायस्सः पच्छाजानवसेन। छ वरधुनि पवतियं
सच्चन्नः विज्ञाणधातून् पुरेजानवसेनेति च तिविषो होति
विष्प्रयुक्तपश्यो ॥

२८. सहजातं पुरेजातं पच्छाजातं च सञ्चया ।

कदब्लीकारो आहारो रूपजोवित्तमिच्यं ति ॥

पञ्चविषो होति अत्यिपश्यो, अविगतपश्यो च ॥

२९. आरम्मणूपनिस्सय-कम्मत्यिपच्छयेषु च सञ्चे पि पच्चया
समोधानं गच्छन्ति ॥

३०. सहजानस्थं ति पनेत्य सञ्चया पि पवते चित्तसमुद्भासानं,
पटिसंघियं कट्टास्थानं च वसेन दुविर्धं होती ति धेदित्वच्च ॥

३१. इति तेकालिका धम्मा कालमुचा च संभवा ।

अज्ञातं च धहिदा च मंखनासंखना तथा ॥

पञ्चचिनापस्थानं वसेन तिविषा डिता ।

पच्चया नाम पट्टाने चतुर्वीसति सञ्चया ॥

३२. वत्य रूपधम्मा रूपवत्त्वयो च ॥, चित्तवेत्सिकसंखाता च-
चारो अहपिनो खन्धा, निज्ञानं चेति, पञ्चविर्धं पि अस्थं ति च
नामं ति च एतुचिति ॥ ततो अवसेसा-पञ्चतिः एनः पञ्चापियत्ता
पञ्चत्ति, पञ्चापनतो पञ्चत्ति ति च दुविषा होति ॥

३३. कथं ? तत्त्वंभूतविपरिणामाकारमुपादाय वथा तथा पञ्चत्ता
भूमित्वनादिका, संभारसंनिरेसाकारमुपादाय गेहरपत्तकटादिका,
खन्धपञ्चकमुपादाय पुरिसपुग्नादिका, चन्द्रवत्तनादिकमुपादाय
दिसाकालादिका, असंकुट्टाकारमुपादाय कूपगुहादिका, सत्त्वंभूतनि-
पित्तं भावनाविसेसं च उपादाय कसिणनिमित्तादिका चेति एवपा-
दिष्पमेदा पन परमस्थतो अविज्ञानान् पि अत्यन्तासाकारेन चित्त-

प्रादानमारमणभूता तं तं उपादायं उपनिवाय कारणं कला वया
तथा परिकर्मियमाना मंखायनि समञ्चायनि वोइरियनि पञ्चारि-
यती ति पञ्चती ति पञ्चती ॥ अयं पञ्चति पञ्चापियता पञ्चति
नाम ॥

३४. पञ्चापनतो पञ्चति पन नाम-नामकम्मादिनामेन परिदी-
पिता ॥ सा विज्ञानपञ्चति, अविज्ञानपञ्चति, विज्ञानेन
अविज्ञानपञ्चति, अविज्ञानेन विज्ञानपञ्चति, विज्ञानेन
विज्ञानपञ्चति, अविज्ञानेन अविज्ञानपञ्चति चेति छब्बिंश
होति ॥

३५. तत्य यदा पन परमत्यतो विज्ञानं रूपवेदनादिं एताय प-
ञ्चापेन्ति, तदायं विज्ञानपञ्चति ॥ यदा पन परमत्यतो अवि-
ज्ञानानं भूमिपञ्चवादिं एताय पञ्चापेन्ति, तदायं अविज्ञानपञ्चती
ति पञ्चति ॥ उभिज्ञं पन वोमिस्सकवसेन सेसा ययाकमं छञ्चभिज्ञो,
इत्यिसद्वो, चक्षुविज्ञाणं, राजपुत्रो ति च वेदिवञ्चा ॥

३६. वचीयोसानुसारेन सोतविज्ञाणवीयिया ।

पवच्चानन्वरूपवन्नमनोद्वारस्स गोचरा ॥

अत्था यस्सानुसारेन विज्ञायन्ति ततो परं ।

सायं पञ्चति विज्ञवेय्या लोकसंकेतनिमित्ता ॥

इति अभिधम्मत्यसंगदे पचयसंगद्विभागो नाम

अट्टमो परिच्छेदो ॥

—४६—

१.

(कम्मट्टानसंगहविभागो)

१. समयविष्टसनानं भावनानमित्रो परं ।
कम्मट्टाने पदवत्तामि दुर्विर्थं पि यथास्त्वं ॥
२. तत्य समयसंगदे तात्र, दस कसिणानि । दस अमृता
दस अनुसमतियो । घटस्तो अप्यमङ्गायो । एका सञ्ज्ञा । एव
षष्ठ्यानं । चत्तारो आहृणा चेति सत्त्विष्येन समयकम्मट्टानतंगदो ॥
३. रागचरिता, दोसचरिता, मोहचरिता, सदाचरिता, बुद्धि-
चरिता, वित्तचरिता चेति छन्दिष्येन चरितसंगदा ॥
४. परिकम्मभावना, उपचारभावना, अप्यनाभावना चेति
विस्तो भावना ॥
५. परिकम्मनिपित्तं, उग्गाहनिपित्तं, पटिमागनिपित्तं चेति तीणि
निपित्तानि च प्रेदितव्यानि ॥
६. कथं ! पदबीकसिणं, आपोकसिणं, तेजोकसिणं, वायोक-
सिणं, नीलकसिणं, पीतकसिणं, लोहितकसिणं, ओदातकसिणं,
आकासकसिणं, आलोककसिणं चेति इमानि दस कसिणानि नाम ॥
७. उद्धूमानकं, विनोलकं, विपुलकं, विच्छिहकं, वित्तायि-
कं, विवित्तचकं, हवधिवित्तचकं, लोहितकं, पुळुकं, अष्टिकं चेति
इये दस अमृता नाम ॥
८. शुद्धानुस्तवि, पम्मानुस्तवि, संयानुस्तवि, सीलानुस्तवि,
चागानुस्तवि, देवतानुस्तवि, उपसमानुस्तवि, मरणानुस्तवि, का-
यगतास्तवि, आनापानस्तवि चेति इमा दस अनुस्तविषो नाम ॥

९०. मेत्ता, करुणा, मुदिता, उपेक्खा चेति इमा चतुर्सो अप्पम्-
ज्ञायो नाम । ब्रह्मविहारा ति पि बुद्धनिति ॥

१०. आहारे पटिक्लसञ्जा एका सञ्जा नाम ॥ चतुर्थातुवत्-
त्यानं एकं वयत्यानं नाम ॥

११. आकासानञ्जायतनादयो चत्तारो आरुप्या नामा ति सब्बया
पि 'समयनिष्ठेसे चत्ताळोस कम्मद्वानानि' भवनिति ॥

१२. चरिंतामु पन दस अमृभा, कायगतासति संखात् कोडास-
भावना रागचरितस्स सप्पाया ॥ चतुर्सो अप्पमञ्जायो, नोऽगदीति
च 'चत्तारि' कसिणानि दोसचरितस्स । आनापानं मोहचरितस्स,
वितकचरितस्तःच । बुद्धानुसनिथादयो छ सद्बाचरितस्स । मरण-
उपसम-सञ्जा-वयत्यानानि बुद्धिचरितस्स ॥ सेसानि पन, सञ्जानि
पि 'कम्मद्वानानि' सब्बेसं पि सप्पायानि ॥ तत्यापि कसिगेमु पुषुङ्गे
मोहचरितस्स । सुद्धकं वितकचरितसेवा ति ॥ अयमेत्य सप्पायमेदो ॥

१३. भावनामु पन सब्बत्यापि परिकम्मभावना लब्धेत् ॥ बुद्धो-
मुस्सति आदिमु अट्टमृ, सञ्जा-वयत्यानेमु चा ति दसमु कम्मद्वा-
नेमु उपचारभावना च गंपञ्जति । नत्य अप्पना ॥ सेतेमु पन सम-
विस्तरम्मद्वानेनु अप्पनामावना पि संपञ्जति ॥

१४. तत्यापि दस कसिणानि, आनापानं च पञ्चरुज्जानिरुनि ।
दस अमृभा, कायगतासति च पठमञ्जानिरु । मेत्ताइयो तयो
चतुर्कञ्जानिरु ॥ वर्षे रखा पञ्चमञ्जानिरु । ति छञ्चीसति रुगावष-
रञ्जानिरुनि कम्मद्वानानि । चत्तारो पन 'आरुप्या' 'आरुपञ्जा'
निरु ति ॥ अयमेत्य भावनामेदो ॥

१५. निप्रित्तेमु पन परिकम्मतिपित्तं, ब्रह्महनिप्रित्तं च समया
पि त्यपारई प्रतिपायेन कम्मनोव ॥ पटिक्लागनिप्रित्तं पन कसिणा-

एवं द्वापरायानाशासनां एवं इत्यादि ॥ एवं ये पटिभागनिपित्त-
शासन उपचारशास्त्रादि, अपेक्षाग्रामादि च प्रदर्शनि ॥

१६. एवं १ आदित्य विद्युत्तराग ये पटिभागनिपित्ति इत्य-
एवाग्राम ग्रन्थस्यां पटिभागनिपित्ति ये प्रयुक्तिः ॥ या ये भाषणा
पटिभागनिपित्ति जाप ॥

१७. एवं एवं ये निपित्ति विजेन ग्रहग्रामालिते रोति, चारुना
ग्रामलालोक एवोडाराग्राम आग्रामपाग्राम, तदा तदेव आग्राम्यज्ञ उग्र-
रामनिपित्ति जाप ॥ या ये भाषणा ग्रन्थाधिपतिः ॥

१८. तथा ग्रामालित्तरा एवेश्वरा ततो ये तस्मि उल्लानिपित्ति
पटिभागनिपित्ति भारतमनुकृत्यन्तम् यदा क्षेत्रिभागी यत्पुष्पम्भ-
रिहस्तिर्वत् पञ्चविनिपत्तियात् भाषणामयपारम्भले विजे भैनिपित्ति
ग्रन्थाधिपत्ति रोति, तदा तं पटिभागनिपित्ति ग्रन्थालक्ष्मी विह प्रयुक्तिः ॥
ततो एवाय पटिभागनिपित्तीना वापारवरमपापित्तसामा उपचार-
मापना निष्पत्ता जाप रोति ॥

१९. ततो ये तदेव पटिभागनिपित्ति उपचारमपापित्ता समा-
सेवनाम्भूत्यापवरपटमग्रामानपर्यंति ॥ ततो ये तदेव पठमज्ञानं,
आपद्धनं, ग्रन्थापक्षनं, अपिष्ठानं, पुष्टानं, परायेवस्त्रा येति इयाहि
पद्धति यस्तिकाहि यागीभूते कल्वा विनाशादिकपीडारिकंगी पदानाये,
रिचारादिग्राम्युक्तिर्विषया पदहृष्टो यपारम्भे हुवियज्ञानादपो यपा-
रम्भेन्ति ॥

२०. इयेरं पटवीक्षणिणादिषु द्वावीक्षकमद्वानेषु पटिभागनिपि-
त्त्यमृपलब्धति ॥ अवगेसेषु पन अप्यमन्त्या सच्चपद्धतिर्विषयं पवचन्ति ॥

२१. आपासरज्जितक्षणिणेषु पन ये किंचि फसिणी उग्राटेत्वा
एद्वमाक्षामं अनन्तवसेन परिष्कम्भे वरोन्तस्स पदमादप्यपर्यंति ॥

तमेव पठमारुप्पविज्ञाणं अनन्तवसेन परिकम्मं करोन्तस्स दुतिया
रुप्पमप्पेति ॥ तमेव पठमारुप्पविज्ञाणाभावं पन नत्यि किंची ति
परिकम्मं करोन्तस्स तत्यारुप्पमप्पेति ॥ तत्यारुप्पं सन्तमें
पणीतमेतं वि परिकम्मं करोन्तस्स चतुर्थ्यारुप्पमप्पेति ॥

२२. अवसेसेमु च दसमु कम्मट्टानेमु बुद्धगुणादिकमारम्मणं आ-
रुम परिकम्मं कल्पा तर्स्मि निमित्ते साधुकमुग्हिते वत्येव परि-
कम्मं च समाधियति, उपचारो च संपञ्जति ॥

२३. अभिज्ञावसेन पवत्तमानं पन रूपावचरपञ्चमज्ञानं अभि-
ज्ञापादकपञ्चमज्ञाना बुद्धित्वा अधिष्ठेयादिकमावज्ञेत्वा परि-
कम्मं करोन्तस्स रूपादिसु आरम्मणेमु यथारहमप्पेति ॥

२४. अभिज्ञा च नाम-

इद्विघं दिव्यसोरं परचिचविजानना ।

पुन्वेनिवासानुस्तवि दिव्यचक्रम् वि पञ्चया ॥

अयमेत्य गोचरमेदो ॥ निष्ठितो च समयरुम्मट्टाननयो ॥

२५. विपस्तनाकम्मट्टाने पन सीलविसुद्धि, चित्तविसुद्धि,
दिहिविसुद्धि, कंखाविवरणविसुद्धि, वगामग्राणदस्तनविसुद्धि,
पटिपदावाणदस्तनविसुद्धि, वाणदस्तनविसुद्धि चेति सत्त्वविषेन
विसुद्धिसंग्रहो ॥

२६. अनिश्चयत्वरूपं, दुरस्त्वत्वरूपं, अनश्लश्वरूपं चेति तीर्ति
एतत्वगानि ॥

२७. अनिश्चानुपस्तना, दुरस्तानुपस्तना, अनश्लानुपस्तना चेति
निम्मो अनुपमना ॥

२८. सम्मगनप्राणी, दद्यव्यवयवाणी, भंगवाणी, भयवाणी, वा-
दीनवप्राणी, निम्बिदावाणी, सुविदृष्ट्यवाणी, पटिसामावाणी,

६८. अनुरोद्धरणात्परं, अनुस्थोदनार्थं शेति दग्ध विषरानानामाग्नि ॥

६९. शुद्धज्ञाने विषोवत्त्वे, अनिविष्टे विषोवत्त्वे, अप्यगिहितो
विषोवत्त्वे वेति शब्दो विषोवत्त्वा ॥ शुद्धज्ञानुष्ठाना, अनिवि-
षानुष्ठाना, अप्यगिहितानुष्ठाना वेति शीणि विषोवत्त्वमुख्यानि
एव देवित्तसानि ॥

७०. शब्दं । पातिषोवत्त्वपरमीयं, इन्द्रियसंदर्शीयं, आकीर-
णित्युद्दितोऽयं, एव परनिविष्टतमीयं चेति चतुर्सरित्युद्दितमीयं
शीणित्युद्दित नाम ॥

७१. उपवारमधारि अप्यनामधारि वेति दुविषो वि समापि
विषविष्टुद्दित नाम ॥

७२. छष्टवण-रग-पञ्चुपृष्ठान-पदहानपत्तेन नामरूपरिणामो दि-
द्वित्युद्दित नाम ॥

७३. तंगदेव च नामरूपानं पर्यपरिणामो वस्त्राविवरणविष्टुद्दि-
त नाम ॥

७४. कठो परं पन नपापरिणामेत्यु रथ्यवरेत्यु तेभ्यमहसंलारेत्यु
अनीकादियेदभिष्ठेत्यु रथन्पादिनयमारब्धं कलापत्तेन संखिपित्वा,
अनिविष्टं रथपट्टेन, दुवर्तं भयपट्टेन, अनगा असारकट्टेना ति अद्वानव-
मेन, रथन्तिवर्तेन, रथगवत्तेन या गम्यसनश्राणेन लक्ष्यगच्छं स-
म्यमन्तस्तम, तेत्येव पर्यपत्तेन रथगवत्तेन य उद्यवन्वयश्राणेन उद्य-
व्यं समनुपसरन्तस्तम च-

ओभासो शेति पस्त्रद्दिभिष्ठोवत्त्वो च पग्नामो ।

एवं व्याणमुष्ठानमृष्टेवत्त्वा च निषन्ति वेति ॥

ओभासादित्रिपत्तनुपक्षिलेपंरिवंवपरिगद्वसेन मगामगलवत्
णवत्त्यानं पगापगवाणदस्सनविसुद्धि नाम ॥

३५. तथारेत्रिवंवविवृत्तस्स पन वस्स उद्यव्यवजाणनो पद्मा
यावानुलोपा विलक्षणं विपत्तनापरंपराय पटिपञ्जन्तस्स न
विपत्तनावाणानि पटिपदावाणदस्सनविसुद्धि नाम ॥

३६. तस्तेवं पटिपञ्जन्तस्म पन विपत्तना परिपाकमागम्य इदानि
अप्पना उपज्ञित्तस्सनी ति भवंगं वोच्छिन्दित्वा उपनपनोदारानन्दां
द्वे तोणि विपत्तनाचित्तानि यं किंचि अनिवादिलवत्तवणमारणं
परिकम्पोपचारानुलोपनामेन पवत्तनि ॥ या सिखापत्ता, सा सा
नुलोपा संखारेत्तवा, उट्टानगामिनी विपत्तना ति च बुद्धति ।
ततो परं गोत्रमुचितं निव्वानपालं चित्ता पुषुड्वनगोचमभिमवन्तं
अरियगोचमभिसंभोन्तं च पवत्तति ॥ तम्भानन्तरमेव मगो दुर्वा
सधं परिनानन्दो, समुद्यसधं पजहन्तो, निरोधमधं सच्छिह्नो
न्दो, मगमधं भावनावसेन अप्पनावीयिमोनरनि ॥ ततो परं ते
तोणि फलचित्तानि पश्चित्ता भवंगपातो च होति ॥ पुन भवंगं वो
च्छिन्दित्वा पश्चयेत्तवणवाणानि पवत्तनि ॥

मगं फलं च निव्वानं पश्चयेत्तति पश्चित्तो ।

दोने क्षित्येसे संसे च पश्चयेत्तति वा न वा ॥

उच्छिमुद्धिमेनेवं भावेत्तव्यो चतुर्थियो ।

वाणदम्भनरिमुद्धि नाम मगो पश्चयति ॥

अथमेन्य विमुद्धिमेदो ॥

३७. तन्य भनणानुपत्तना अनामिनिरेमं सुशन्ती गुल्मगानु-
पत्तना नाम विपोससमुद्धी होति ॥ अनिवामुपत्तना शिरद्वागरि-

पितं मुञ्चन्ति अनिमिचानुपस्सना नाम विमोक्खमुखे होति ॥
दुर्खानुपस्सना समापणिं पितं मुञ्चन्तो अप्यणिहितानुपस्सना नाम
विमोक्खमुखे होति ॥ तस्या यदि बुद्धानगामिनो विपस्सना
अनचतो विपस्सति, मुञ्चन्तो विमोक्खो नाम होति मग्गो । यदि
अनिच्छनो विपस्सति, अनिमिचो विमोक्खो नाम । यदि दुर्खतो
विपस्सति, अप्यणिहितो विमोक्खो नामा ति च मग्गो विपस्सना-
गमनवसेन तीणि नामानि लभति । तथा फलं च मग्गागमनवसेन
मग्गादीयिं ॥

३८. फलसमापत्तियोधियं पन यथाबुद्धनयेन विपस्सन्तानं यथासकं
फलमूष्यज्ञमानं पि विपस्सनागमनवसेनेव मुञ्चतादिविमोक्खो ति
च बुद्धति ॥ आरम्भमवसेन पन सरसवसेन च नामचर्यं सञ्चत्य
सन्वेसं पि सम्भेद ॥

अप्यमेत्य विमोक्खमेदो ॥

३९. एत्य पन सोतापत्तियम् भावेत्वा दिद्विचिकिर्णापहानेन
पद्धीनापायामनो सचयत्वचरप्मो सोतापन्नो नाम होति ॥

४०. सकदागामिमग्गं भावेत्वा रागदोसमोहानं उनुकरत्वा सक-
दागामी नाम होति, सकिदेव इये लोकं आगन्त्वा ॥

४१. अनागामिमग्गं भावेत्वा कायराग-न्यायादानं अनवसेसप्प-
हानेन अनागामी नाम होति, अनागन्ता इत्यर्थे ॥

४२. अरहतपर्मग्गं भावेत्वा अनवसेसकिलेसप्पहानेन अरहा नाम
होति, खीणामवो लोके अगदविक्षणेऽयो ॥

अप्यमेत्य पुगालमेदो ॥

४३. कलमपारचियो पनेच्य सन्देसं रि यथाग्रहक्तव्या
सायारग्ना व ॥ निरोघमनादतिशयारक्षने पन अनागामीने
अरक्षनानं घःलक्ष्मिति ॥

४४. तन्य यथाह्यं पउदग्नानादिमरणात्मपारिति मभारिता
ता तुडाय तापगो मैजारयने तद्य तत्त्वेर दिग्दणनो या
किञ्चन्जादानं गन्त्वा तो परे भवितुर्यादिर्हु पुनर्लिपं क
नेत्तरन्त्रानामन्त्रायाने समावग्नति ॥ गत्तम द्वितीय अन्तर्नाम
नाने पर्हो शोचितउत्तिं निराकृतिः ॥ ततो निरोघमना
माम होति ॥

४५. तुडानसाले पन भनामाबिनो भनामाबिहृषिते, भाव
भावादादर्तिते एहारारोर परागिता भाँगामो होति ।
एते गम्भीरागम्भाणी पातनि ॥

४६. भाँगाम परितेहो भारतादपातुन्ते ॥

परितिरागम्भाद् पर्यपनेत गापते ॥

इति भविताम गगग्ने कम्मटुतमंगदिवालो नाम
नामो परितेहो ॥

चारित्ससोभिविसालकुलोदयेन
 सद्भामिद्युपरिसुदगुणोदयेन ।
 नम्बव्ययेन पणिधाय परानुकंपं
 यं पत्तियतं पकरणं परिनिष्टिं तै ॥
 पुञ्जेन तेन विपुलेन हुमूलसोमं
 पञ्चाधिवासमुदितोदितमायुगन्तं ।
 पञ्चावदातगुणसोभिवलजिनभिवसु
 मञ्जन्तु पुञ्जविभवोदयमंगलाय ॥
 ॥ इति अनुरुद्धाचरियेन रचितं
 अभिधम्यत्यसंगइ नाम पकरणं निष्टिं ॥

KUGARCHAND BHAIRODAN SETHIA.
 JAIN LIBRARY.:
 BIKANER, RAJPUTANA.

सदानुकमो

[यद्य पछी अने वे दंड (II) पछी आवता अंकदा परिच्छेद-
संख्या दर्शवि हे, एकदंड (I) पछी आवता अंकदा
प्रेत्याफसंख्या दर्शवि हे.]

अ-

अकनिहृ ६। ६। १५॥
अहुसल १। ६। २८॥ २। ४
८। २५। २७। २८॥ ३। ७।
८। १०। २२। १५॥ ४। २२॥
५। १९। २०। २४॥ ६। ११॥
अहुसलकम्म ६। २७॥
अहुसलपाक १। १०॥ ८। ७॥
अहुसलविषाक १। ७॥ ४। १६॥
९। १०॥
अहुसलसंगह ७। २। ३॥
अगोचरागादिकहप ६। ८॥
अगदविलगेत्य ९। ४२॥
अगमगकलुक्षित ३। २५॥
भैग ६। २३॥ ७। १५। १७। २३॥
२४। ११॥ ८। ९। ७। १४॥
भैगधार ५। ४०॥
अंगुष्ठति ९। १९॥
अश्वत ६। ३१॥
अच्छुत ८। ४१॥ ६। ११॥
अश्वत ६। १३॥ ८। १९। ३१॥
अउष्ठिक ६। ७। ९। २२॥
अउष्ठिकहप ६। ८॥
अउष्ठिकसंतान ६। ११॥

अवसोहरणकाल ६। १४॥
अभ्य २। २६। २७॥
अभ्यमभ्य ८। १४। २२। २३॥
२४॥
अभ्यमभ्यपद्य ८। ११। १०॥
२३॥
अभ्यसमान २। ३। ८। २१॥
२३। २९॥
अभ्यताविनिधि ७। १८। २२॥
आठिभन्निधि ७। १८। २२॥
आहिक ९। ७॥
अतल्प ६। ६। १९॥
अतिहृ ४। १६॥
अतिपरित ४। ७। ९॥
अतिमहत ४। ७। १। १८॥
अतीत ८। ६। ८॥
अतीतक ४। ९॥
अतीतादिभेद ९। १५॥
अतीतारम्मण ८। १७॥
अतुल १। १॥
अतवाद ७। १३॥
अतवादुपादान ७। ७॥
अताविनिवेस ९। १७॥
अत्यर्थायाकार ८। १५॥

अतिथिपद्य ८। ११। २०। २८।
 २९॥
 अदिग्रादात् ६। २१॥
 अदुक्षमसुव ३। १२।
 अदोह २। ६॥ ३। ६। ८॥
 ७। १६॥
 अद्वा ८। ७। ६॥
 अद्वान् ९। ३४॥
 अद्वय ६। ४१॥
 अद्वारकप ६। ८॥
 अधिहृत ९। १९॥
 अधिहेत्यादिक ९। २३। ४४॥
 अधिरति ७। २०। २३। २४॥
 अधिरतिपद्य ८। ११। २०।
 २१॥
 अधिसोरव २। ३। ११। २३॥
 ९। ३४॥
 अनन्तात्प्रसामीतिश्रिय ७।
 १८। २२॥
 अनत ९। ३४। ३३॥
 अनत्तद्वय ९। २६॥
 अनत्तानुपस्मना ९। २३। १३॥
 अनत्तरापद्य ८। ११। १३॥
 अनन्तरातिश्रद ८। १३। १३॥
 अनन्तरातिश्रद ८। १८। १९॥
 अनतिया ६। ८॥
 अनवंसहित्यसाधान ६। ४२॥
 अनवंसहान ६। ४॥
 अनागत ८। ३॥
 अनामि ४। १०॥ ६। ३८॥
 ७। ४३॥ ८। ४॥
 अनामामित्यामल ४। ४२॥

अनामामिकल ४। १९॥
 अनामामिकलचित् १। २६॥
 ९। ४२॥
 अनामामिमग १। ३०॥ १॥
 ४१॥
 अनामामिमगवित् १। २३॥
 अनादिक ८। १०॥
 अनारमण ६। ७॥
 अनिय ९। ३४। ३३॥
 अनियता ६। ८॥
 अनियतवय ९। २६॥
 अनियादिलक्षण ९। १३॥
 अनियानुपस्मना ९। २३। १३॥
 अनिह ५। १३॥
 अनिद्रस्मनद्वप ६। ८॥
 अनिद्रियकर १। ८॥
 अनिक्ष ६। ६॥
 अनिमित ६। ३०॥ १। २१॥
 ३॥
 अनिमितानुपस्मना ९। ११॥
 ३॥
 अनिमिता ३। २६॥
 अनुपर १। २७। २८। ११॥ १॥
 २०॥
 अनुपरमूल ३। २१॥
 अनुपरस्मना ९। २३। २३। १५॥
 अनुपादिग्रादा ६। ८॥
 अनुपादितेतिश्रद्यात्पात्तु १। १॥
 अनुपत्र ७। १६॥
 अनुरैप ४। ८॥
 अनुरोध ४। ११॥ १२। ११॥
 अनुरोधकान १। १८॥

अनुमय ७। १। १४॥
 अनुमदपूर्वक ५। २१॥
 अनुगति ३। २। ८। १२॥
 अनोन्य २। ४। ११॥७। १२॥
 अनोन्यदल ७। १९॥
 अन १। ११॥
 अनिति ४। २६॥
 अनशायन ८। २६॥
 अनर ४। १॥
 अनराष्ट्रियदेशीय ८। १९॥
 अनरिणीटि ३। ३७॥
 अनाव ८। १२॥ ९। २९॥
 अनायपटिसंधि ८। १। ३०॥
 अनायमूलि ८। ३। ४। ८।
 १०। २७॥
 अनुम्य २। १५॥
 अन्पटिष्ठप ६। ८।
 अन्पणिहित ६। १०॥९। २१।
 ३७॥
 अन्पणिहितानुपस्तता ९। २१।
 ३७॥
 अन्पणा ४। १३। १४। १८। १९।
 २१॥ १। १३। ३६॥
 अन्पणाज्ञयन ४। २१॥६। १२॥
 ९। ४४॥
 अन्पणाज्ञवाचार ४। १३॥
 अन्पणाज्ञवाचावसान ४। १३॥
 अन्पणायत ६। २६॥
 अन्पणाभावना ९। ४॥
 अन्पणाधीयि ४। १३॥९। ३६॥
 अन्पणाममाधि ९। १८। ३१॥

अन्पणमध्रा २। ७। १६॥११।
 २। ११। २४॥ १। १।
 १। १२। २०॥
 अन्पणमायतुभ ८। ८। १७॥११॥
 अन्पणमालाम ६। ६। १५॥११॥
 अन्पणदात्य ६। ७॥
 अन्पणदोग्न ४। ९॥
 अन्पणेतिउत्त ४। २६॥ १। ४०॥
 ६। ८॥
 अन्पणाशत ३। ८॥
 अभाव ९। २१॥
 अभिग्राम ८। २३॥ २४॥ ७। ६॥
 अभिग्राम ३। २२॥ ४। १९।
 २०॥ ६। १२॥ १। २३।
 २४॥
 अभिग्रामाकुसल ३। २२॥
 अभिग्रामाजवत ४। १९॥
 अभिग्रामादकपञ्चमज्ञहान १।
 २३॥
 अभिघम ७। ११॥
 अभिघमत्य १। १॥
 अभिघमत्यसंगढ १। १॥
 अभिवक्तरण ६। ३८॥
 अभिनिष्पत ८। १४॥
 अभिनीहार ४। १३॥
 अभिमुखीभूल ६। ३८॥
 अभिसंस्थत ६। ११॥
 अमोह ३। ६। ८। १। १९॥
 अरह ९। ४२॥
 अरहत ४। १९॥
 अरहतफल ४। १४। १९॥
 अरहतफलचित १। २६॥ १।
 ४६॥

अतिष्यवद्य ८। १। २०। २०।
 २१॥
 अदिग्राशात् ६। २१॥
 अदुश्लमसुम् ३। २।
 अदोत् २। ७॥ ३। ७। ८॥
 ७। १२॥
 अद्वा ८। ७। ९॥
 अद्वान् ९। ३॥
 अद्वृष्टि ७। ४॥
 अद्वारक्षय ६। ८॥
 अद्विहात् ९। ११॥
 अधिक्षेत्रादिक् ९। २३। ४७॥
 अधिष्ठि ७। २०। २३। २४॥
 अधिष्ठितव्यय ८। ११। २०।
 ११॥
 अधिष्ठितव्य २। १। १। १३॥
 १। १४॥
 अधिष्ठितव्यादीपित्रिव ७।
 १८। १२॥
 अध्यत् ७। ३५। ३६॥
 अध्यत्तद्वलग् ७। १५॥
 अध्यत्तद्वृष्टवलग् ७। १३। १३॥
 अध्यत्तद्वयव ८। ११। ११॥
 अध्यत्तद्विद्व ८। ११। १०॥
 अध्यत्तद्विद्वय ८। ११। ११॥
 अध्यत्तद्विद्वय ८। ११॥

अनागामिकाऽ ४। १९॥
 अनागामिकलयित १। २१॥
 १। ४३॥
 अनागामिमया १। ३०॥ १।
 ४१॥
 अनागामिमया वित १। २२॥
 अनादिक ८। १०॥
 अनाद्यमग १। ७॥
 अनिय १। ३४। ३७॥
 अनियता १। ७॥
 अनियतवलग १। २१॥
 अनियादिलवलग १। ११॥
 अनियाद्वारामग १। २३। १३॥
 अनिष्ट ४। ११॥
 अनिष्टवलद्व १। ८॥
 अनिष्टिवल १। ८॥
 अनिष्टिवल १। १०॥ १। ११॥
 ११॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १२॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १३॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १४॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १५॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १६॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १७॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १८॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 १९॥
 अनिष्टिवलद्वलग १। ११॥
 २०॥

अनुमय ७। १। १४॥
 अनुमयमूलक ६। ३६॥
 अनुस्सति ९। २। ८। १२॥
 अनोहत्प २। ४। १३॥ ७। १२॥
 अनोहत्पदल ७। १९॥
 अन्त १। ३१॥
 अन्तरित ४। २६॥
 अपायायन ८। २६॥
 अपर ४। १॥
 अपरापरियवेदनीय ८। १९॥
 अपरिगहित ९। ३४॥
 अपाय ८। १२॥ ९। ३९॥
 अपायपटिलंधि ८। ९। १०॥
 अपायमूर्मि ८। ३। ४। ८।
 १०। २७॥
 अपुज्ञ २। १४॥
 अप्पटिप्रृष्ट ६। ८।
 अप्पणिहित ६। ३०॥ ९। २९।
 ३७॥
 अप्पणिहितानुपस्तना ९। २९।
 ३७॥
 अप्पना ४। १३। १४। १८। १९।
 २१॥ १। ३। ३६॥
 अप्पनाजवन ४। २१॥ ६। २२॥
 १। ४४॥
 अप्पनाजवनार ४। १२॥
 अप्पनाजवनावसान ४। १३॥
 अप्पनापत ५। २६॥
 अप्पनाभावन ५। ४॥
 अप्पनालीधि ५। १३॥ ९। १३॥
 अप्पनालमधि ५। १६। ११॥

अप्पमञ्जा २। ७। १७। ११।
 २१। २३। २४॥ ९। १।
 १। १२। २०॥
 अप्पमाणसुभ ६। ६। १६। ३१॥
 अप्पमाणाभ ६। ६। १५। ३१॥
 अप्पहात्पथ ६। ७॥
 अप्पहोगत ४। ९॥
 अप्पोदिष्टप ४। २६॥ ९। ४०॥
 ६। ९६॥
 अप्पाकत ३। ८॥
 अभाव ९। २१॥
 अभिज्ञा ६। २३। २४॥ ७। ६॥
 अभिज्ञा ३। २२॥ ४। १९॥
 २०॥ ६। १२॥ ९। २३॥
 २४॥
 अभिज्ञाकुसल ३। २२॥
 अभिज्ञाजवन ४। १९॥
 अभिज्ञापादकप्रस्त्रमश्चान १।
 २३॥
 अभिधम्म ७। ११॥
 अभिधम्मरूप १। १॥
 अभिधम्मसंग्रह १। १॥
 अभिदयकरण ५। ३२॥
 अभिनिष्ठत ८। १४॥
 अभिनीहार ४। १३॥
 अभिमूर्खामूर्त ५। ३६॥
 अभिमंखत ६। ११॥
 अभोद ३। ६। ८। १७॥
 अरद ५। ४२॥
 अरहत ४। १९॥
 अरहतरूप ४। १४। १९॥
 अरहतरूपचित १। २६॥ ९।
 ४६॥

अरहतफलभाग ७ । २२ ॥
 अरहतमग्न ९ । ४२ ॥
 अरहतमग्नवित १ । २५ । ३० ॥
 अरहतमग्नफलवित ३ । २२ ॥
 अरहत ९ । ४३ ॥
 अरिय ४ । २२ ॥ ९ । ८ ॥
 अरियगोत ९ । ३६ ॥
 अरियसद ७ । ४७ ॥
 अरूप ३ । १० । २४ ॥ ४ । २५ ॥
 ६ । २७ । २९ ॥ ७ । २२ ॥
 अरूपपटिसंधिक ६ । ३८ ॥
 अरूपमूर्मि ६ । ७ ॥
 अकाशरात्रसैयोग्य ७ । १० ॥
 अकाशसंहा ३ । २४ ॥
 अकाशविद्याक ६ । १२ ॥
 अकाशवर १ । २ ॥
 अकाशवरहुत्तम ६ । १५ । २५
 ३२ ॥
 अकाशवरहुत्तमवित १ । २१ ॥
 अकाशवरकियावित १ । २३ ॥
 अकाशवरदिविति ६ । ९ ॥
 अकाशवरमूर्मि ४ । २४ । २५ । ३० ॥
 अकाशवरदिवितावित १ । २२ ॥
 अडवि ८ । २८ । २९ । ३२ ॥
 अहोव ८ । ६ ॥ ३ । ६ । ८ ॥
 ७ । १३ ॥
 अरम्भुद ६ । ३१ ॥
 अरम्भुदार ३ । ८ ॥
 अरम्भाम ४ । ९ । ११ । ११ ॥
 ५ । १३ ॥
 अरम्भेन ८ । ९ ॥
 अरिम्भारथव ८ । १२ । १० ॥
 २८ ॥

अविज्ञमान ८ । ३३ । ३५
 अविज्ञमानपञ्चमति ८ । १
 ३६ ॥
 अविज्ञा ८ । ४ । ६ । ७ ।
 ९ । १० ॥
 अविज्ञायोग ७ । ५ ॥
 अविज्ञानीयरण ७ । ८ ॥
 अविज्ञानुसय ७ । ९ ॥
 अविज्ञानुसयपरिक्रित ५
 ३६ ॥
 अविज्ञासंयोजन ७ । १० । ११ ॥
 अविज्ञामव ७ । १ ॥
 अविज्ञोय ७ । ४ ॥
 अविनिष्ठोगकृप ६ । ८ । १ ॥
 १८ । १९ ॥
 अविमूर्त ४ । ७ । ११ । १२ ॥
 अविरिय ७ । २३ ॥
 अविह ५ । १ । ११ ॥
 अविष्ट ६ । ३ । ३६ ॥
 अविष्टता ८ । ११ ॥
 अविष्टार ५ । ३० ॥
 अविष्टारिक १ । ३ । ११ । ११
 १४ ॥ ६ । २६ ॥
 अविष्टमूर्मि ६ । ८ ॥
 अविष्टमाम ४ । १७ । ६ । १
 १७ । १९ । ११ । १८ । १८ । १९ ॥
 अविष्ट्र ६ । १८ । १९ ॥
 अविष्ट ५ । ८ ॥
 अविष्टुदार ८ । ११ ॥
 अविष्ट ५ । ३५ ॥
 अविष्ट ५ । ११ ॥ २ । ११ ॥
 १४ । १६ ॥

असुर ५। ११। १२॥
 असुरकाय ५। ४॥
 असेकम ४। २३॥
 अहितिक २। ४। १३॥ ७।
 १२॥
 अहितिकथल ७। १९॥
 अहेतु ५। ३९॥
 अहेतुक १। १०॥ २। ११।
 १८। २९॥ ३। ६। ८॥
 ४। २१॥ ५। २९॥ ६॥
 ७॥ ७। २३॥
 अहेतुकक्रियावित्त १। ९॥
 अहेतुकवित्त ३। ६॥
 अहेतुकपटिसंधियुगल २। २९॥
 अहेतुकविपाक ५। २८॥
 अहोसिकम ५। १९॥

 आ
 आकार ८। ५॥
 आकारभेद ६। ३०॥
 आकास ६। २१॥
 आकासकसिण ९। ६॥
 आकासधातु ६। ५। ११॥
 आकासवज्जितकसिण ९। २१॥
 आकासानभायतनकुसलवित्त १।
 २१॥
 आकासानभायतनक्रियावित्त १।
 २३॥
 आकासानभायतनमूर्मि ५। ७॥
 आकासान-विपाकवित्त १। २२॥
 आकासानभायतनादि १। ११॥
 आकासानभायतमूर्पग ५। १५॥
 आविष्टम्भायतन ५। ५५॥

आकिर्ण-कुसलवित्त १। २१॥
 आकिर्ण-क्रियावित्त १। २१॥
 आकिर्ण-मूर्मि ५। ७॥
 आकिर्ण-विपाकवित्त १। २२॥
 आकिर्णम्भायतमूर्पग ५। १७॥
 आगत ४। ९॥
 आचरिय ८। ३॥
 आचिण्ण ५। १९॥
 आजीय ७। १७। ३१॥
 आजीयपारिसुद्धिल ९। ३०॥
 आदिकम्भिक ४। १९॥ ९। १६॥
 आदीनवनाण ९। २८॥
 आनापान ९। १२। १४। १५॥
 आनापानस्तति ९। ८॥
 आपाय ४। ८। १। ११॥ ५।
 ३७॥ ९। १७॥
 आपोकम्भिण ९। ६॥
 आपोधातु ६। ४॥
 आपूर्ध ८। १०॥
 आभस्सर ६। ६। १५। ३१॥
 आयतन ६। ८॥ ७। ३८।
 ४। ४२॥
 आयति ८। ८॥
 आयु ४। ८॥
 आयुक ६। २५॥
 आयुकरण ६। ३४॥
 आयुष्माण ५। १६। १७॥
 आयुष्माणगणना ५। १२॥
 आरक्षण १। १। १। १। १। २।
 २२॥ ४। २। ४। १। १। १।
 १। १। १। १। १। १। १। १।
 ३५। ३६। ३७। ३८। ४०॥

उपेक्षसासदगतमंतीरण ३। १०
 १। १७॥ ४। १७॥
 उपेक्षेकागतासदित १। १७।
 १। १९। ३०॥
 उपेक्षितनित्रिय ७। १८॥
 उपज्ञामानभय ६। ३७॥
 उप्यज्ञ ७। २६॥ ८। २६॥ १। ३३॥
 उप्याद २। १। २७॥ ४। ८॥
 उपयक्षय ६। ३४॥

ए

एकगता १। १७। १८। १९। २०॥
 २। २॥ ७। १६। २३॥
 एकपित्रकलण ४। ८॥ ९॥
 एकपित्रकलणिक ४। १९॥
 एकातिय ५। १८॥
 एकाद्विकथित ३। १८॥
 एकतिरोप ५। १७॥
 एकतिरमय ६। १७॥
 एकहेतुक ३। ७। ८॥
 एकालस्थवरम्भुक २। १॥
 एकान्नाद ६। १७॥
 एकान्नादनिरोध २। १॥

ओ

ओङ्करितवनग ६। १०। ८। २७॥
 ओंय ३। ४। १४॥
 ओंका ६। ८। १४॥
 ओंजामरण ६। १८॥
 ओंगत ६। १५॥
 ओंगत ८। ६॥
 ओंगतरवल ८। १९॥
 ओंशत्वनित्र ५। १॥
 ओंशत्वादित ६। २४॥

ओमात ९। ३४॥
 ओमक ५। २९॥ ६॥
 ओलारिकंग ९। १९॥
 ओलारिकहय ६। ८॥

क

कंखाधितरणविसुदि १
 २॥
 कदाकम्म ५। १९॥
 कदेत्ताहय ८। ३०॥
 कद्य ६। १६। १७॥
 कध्याकार ६। ४॥ ७॥
 ८॥ २८॥
 कम्म ३। २१॥ ४॥ ३॥
 ४॥ २०। २१। २२
 २६। २७। ३६। ३१
 ३१। ३२। ३३। ३५॥
 कम्मकलय ६। १४॥
 कम्मचतुर्म ६। १३॥
 कम्मम ६। ८। १५॥
 कम्ममहय ६। २१॥
 कम्ममगता ६। ५॥
 कम्महुआ ९। १९। १५
 १८। २०। २१। २६॥
 कम्मदार ५। १०। २७॥
 कम्मतिपित ४। १॥ ६॥

३॥ ३८॥

कम्मम ७। १३। ११॥
 कम्ममधय ८। ११। ११॥
 कम्ममव ५। १२॥
 कम्ममव ८। १॥
 कम्ममव ८। १॥
 कम्ममव ८। १॥
 कम्ममव ८। १॥

कम्मसमुद्धानकलाप ६। १८। २८॥
 कम्मसमुद्धानरूप ६। ११॥
 कम्मानुरूप ६। ३६॥
 कम्मभिनिधयते ८। १४॥
 कम्मिक ४। १९॥
 कहगा २। ७। १६। १७। २१। १९॥
 कलाप ६। २। १७। २३। २८॥ ९।
 ३४॥
 कलापमेतति ६। २५॥
 कलापदानि ६। २४॥
 कस्तिण ९। २। ६। १२। १४। १६॥
 २०। २१॥
 कमिगतिमिति ८। ३६॥
 कलेवर ६। २६॥
 काम १। २९॥ ३। २४। २६॥ ४।
 ११। १८। २६॥ ५। २१। २४॥
 ६। २९॥ ७। १३॥
 कामक्रिया ४। १५॥
 कामचुम्भनीधरण ७। ८॥
 कामतिदेतुद ५। १९॥
 कामपाक २। २४॥
 कामयोग ७। ५॥
 कामराग ९। ४१॥
 कामरागमेयोजन ७। १०। ११॥
 कामरागानुमय ७। ९॥
 कामलोक ६। २४॥ ८। २७। २८॥
 ६। २४। २५॥
 कामनुगति ५। ११। २८॥
 कामनुगतिपटितमिति ६। ९। ११॥
 कामनुगतिमूलि ५। ३। १६॥
 कामायचर १। २। ३। ११। ११॥
 ३। १५। २२॥ ४। १३। १७॥
 १९॥ ६। ७। ११। १२॥ १२॥

कामायचरकम्म ५। २५॥
 कामायचरकुसल २। १५॥ ३।
 २२॥ ६। १९। २५। २८॥
 कामायचरकुसलवित १। १२॥
 कामायचरचित २। १७॥
 कामायचरजवन ३। १७। १७॥
 २२॥ ४। ८। १७। १९॥
 कामायचरधम्म ४। १७॥
 कामायचरपटिसंधि ५। १७॥
 कामायचरभूमि ४। २४॥ ८। १५॥
 कामायचरसत्त ४। १७॥
 कामायचरसमाधि ९। १८॥
 कामायचरसोभन २। १८। २३॥
 ३। ७॥
 कामायचरारम्मण ३। २२॥
 कामासप ७। ३॥
 कामुपादान ७। ७॥
 कामोष ७। ४॥
 काय ३। ३। १३। २४॥ ४। ८॥
 ६॥ ६। ४। २४। २८॥ ८।
 १६॥ २६। २७॥
 कायकम्म ५। २०। २१। २५॥
 कायकम्भज्ञता २। ५॥
 कायगतासति ९। ८। १२। १४॥
 कायगम्य ७। ६॥
 कायदलक ६। १८॥
 कायद्वार १। १३। ६। २१। २८॥
 कायद्वारघोषि ४। ६॥
 कायधानु ७। १९॥
 कायपस्तदि २। ५॥
 कायपागुञ्जता २। ९॥

कायमुद्दता २। ५॥
 कायलहुता २। ५॥
 कायविश्वरति ८। २१॥ ६॥
 १६॥
 कायविश्वाण १। ७। ८॥ २। १०॥
 ३। ४॥ ४॥ ५॥
 कायविश्वाणधोतु ७। ३॥
 कायविश्वाणधोय ४। ३॥
 कायानुपस्तनासतिंपहान ७।
 २५॥
 कायायतन ७। ३॥
 कायविश्व ७। १॥
 कायुमुकता २। ६॥
 कारण ८। ३॥
 कारणपरियाय १। ३॥
 कारङ्ग २। २॥ ४। १९॥ ६। १७॥
 ८। २४॥ २६॥ २८॥ ८।
 ३१॥ ३३॥
 दिव ३। १। १०॥ १२॥ १६॥ १९॥
 दिवेन ७। १२॥ १३॥ ३॥
 दिवेनवृ ८। १॥
 दुकुष २। ४। १३॥ १७॥ २१॥
 दुमढ १। २३॥ २८॥ २। १६॥
 ३॥ १॥ १०॥ २६॥ ४॥ १४॥
 २२॥ ६॥ ११॥ १९॥ २६॥ २३॥
 २८॥ ३॥ १॥ १२॥ ४॥ १॥
 ५॥ ४॥ १॥ २७॥ ३॥ १॥ १॥
 दुमढविन १। १३॥ १८॥
 दुमढविवर ८। १॥
 दुमढविवाह १। १०॥ १॥ १॥
 ४॥ १॥ ४॥

कृष ८॥ ३॥
 कैवल ८। ४॥
 कोट्ठास ९। १७॥
 कोट्ठासमायना ९। १२॥
 किया १। १६॥ २। २७॥ ३॥ १॥
 २॥ २६॥ ४॥ १४॥ १६॥ २॥
 कियायित १। १०॥ ११॥ २८॥
 २॥ २३॥
 कियामथ ४। १७॥ १८॥ १९॥ २१॥
 २२॥
 कियामिश्राथोडुपत १। २२॥
 स
 सण ४। ९॥ ५॥ १०॥ ४॥ १॥
 ८॥ २॥ २॥ १॥ २७॥ ४॥
 ३॥ ३॥
 समतय ४। ८॥
 सगिक ४। १॥
 सम्प ७। ३॥ ७॥ १०॥ ८॥ १॥
 ३॥ १॥ ३॥ १॥ १॥ ३॥
 सय ६। १॥
 सयह १। ३॥
 सीगालव ४। ११॥ १॥ १॥ ४॥
 सुरक १। १॥
 ग
 गग १। १॥
 गगन २। २॥
 गगम ६। १॥
 गग्निमिल ३। १॥ १॥ १॥ १॥
 ६॥ १॥ १॥ १॥
 गग्न ३। १॥ १॥ १॥ ४॥ १॥
 गग्नाद ७। १॥

गन्धारवत ७ ॥३८॥
 गन्धारमण ३ ॥११॥
 गय ७ ॥६ ॥२४॥
 यमसेव्यकसत्त ६ ॥२४॥
 यक ८ ॥१९॥
 यदवत ८ ॥१९ ॥२१॥
 यदितपटिमधिक ८ ॥५०॥
 युदा ८ ॥३३॥
 ये ह ८ ॥३३॥
 योचर ३ ॥२३ ॥४ ॥१॥
 योगरमादिकरूप ६ ॥८॥
 योगरभेद ९ ॥२४॥
 योगरहूप ६ ॥४॥
 योगत ९ ॥३६॥
 योगमु ४ ॥१३ ॥९ ॥३६॥
 य
 यान ३ ॥३३ ॥२४ ॥४ ॥५ ॥६॥
 ६ ॥४ ॥२४ ॥२८॥
 यानदसक ६ ॥१८॥
 यानद्वार ३ ॥१३॥
 यानद्वारथीयि ४ ॥६॥
 यानधातु ७ ॥३९॥
 यानविज्ञान ३ ॥७ ॥८ ॥४॥७॥
 यानविज्ञानधातु ७ ॥१९॥
 यानविज्ञानथीयि ४ ॥६॥४॥
 यानादिसत्य ६ ॥८॥
 यानायतन ७ ॥३८॥
 यानिश्रिय ७ ॥१८॥
 यादव ३ ॥९ ॥१०॥
 य
 यकलादिकरूप ६ ॥८॥
 यकलायतन ७ ॥३८॥

यकलु ३ ॥१३ ॥१४ ॥२१ ॥२४ ॥
 ४ ॥७ ॥६ ॥० ॥९ ॥६ ॥४ ॥
 २४ ॥२८ ॥९ ॥१७ ॥
 यकलुइसक ६ ॥१८ ॥२४ ॥
 यकलुद्वार ३ ॥१३ ॥४ ॥९ ॥
 यकलुद्वारथीयि ४ ॥६ ॥
 यकलुद्वारिकवित्त ३ ॥२२ ॥
 यकलुधातु ७ ॥३८॥
 यकलुग्रिय ७ ॥१८॥
 यकलुविज्ञान १ ॥७ ॥८ ॥३ ॥
 १६ ॥२१ ॥४ ॥८ ॥८ ॥४॥४॥
 यकलुविज्ञानधातु ७ ॥३९॥
 यकलुविज्ञानथीयि ४ ॥६ ॥
 यकुक ५ ॥२ ॥
 यकुम्युण ६ ॥१२ ॥
 यकुरथज्ञान १ ॥१७ ॥१८ ॥१५
 ३० ॥५ ॥३१ ॥
 यकुरथज्ञानमूर्मि ६ ॥६ ॥१४ ॥
 यकुरथज्ञानविपाक ६ ॥१४ ॥
 यकुरथज्ञानसोतापत्तिमरगवित्त
 १ ॥३० ॥
 यकुरथज्ञानविकवित्त २ ॥११ ॥२१ ॥
 यकुरथाहूप ९ ॥२१ ॥
 यकुरथाहूपज्ञान ४ ॥११ ॥
 यकुरथानुवदत्यान ९ ॥१० ॥
 यकुरणरितुद्विलोल ९ ॥१० ॥
 यकुरमगमान ६ ॥३० ॥
 यकुरमगमपभेद १ ॥२७ ॥
 यकुरसत्य ८ ॥८॥
 यकुरसत्य ७ ॥४॥
 यकुरसमुद्वान ९ ॥२६ ॥
 यकुरदवतन ८ ॥११ ॥

धरित ९। १२॥
 धरितसंगद ९। ३॥
 धलन ४। ९। ११॥
 धयन ८। १०। ३६। ४०॥
 धयनवाल ८। १४॥
 धयनमानस ८। १८॥
 धागानुस्सति ९। ८॥
 धातुम्भाराजिक ८। ०। १२॥
 धित १। १२। २९। ३०॥ २।
 २७। २९॥ ३। १। ३। ६। ७
 । १०। ११। १५। १७। २०।
 २१। २३॥ ४। १। ६। ८।
 १०। १२। १६। १९॥ ९।
 ४०॥ ६। १०। १२। १८।
 १६। ८३। ८६। ३२॥ ७।
 २३। ३३। ३४॥ ९। १७।
 १८। ३३। ४२॥
 धितकम्भन्नता २। ८॥
 धितमेतगिक १। १॥ ६। १॥ ८।
 १३। १५। १९। १२-२४।
 २७। ३२॥
 धितज ६। १५॥
 धितजकर ६। २६। २८॥
 धितप्रह्लदि २। ६॥
 धितपाणुमता २। ८॥
 धितप्रवति ४। १। ८। २६॥
 धितमूढा २। ८॥
 धितलहूता २। ८॥
 धितविमुदि १। २२। ३१॥
 धितवंगति ८। ४॥ ९। ४४॥
 धितमेतान ८। १२॥
 धितमूढान १। २५॥ ८। १०॥

धितसमुढानकलाप ६। १९॥
 धितसमुढानहर ६। १२॥
 धिलाधिपति ७। २०॥
 धितानुषस्तनासतिपटान ७। २५॥
 धितिदिपाद ७। २७॥
 धितुउमुदगा २। ५॥
 धितुप्याद २। ९। ३०॥ ३। १।
 १२॥ ४। ११। १०। १२॥
 ५। २४। २६। ४०॥ ८। ३३॥
 धितोनुगमुढान ६। २८॥
 धुति ३। ९-११। १६। २१॥ ६।
 १। १४। १६। ३१। ४१॥
 धुतिधित ६। ३६। ४२॥ ६। २५॥
 धुतिपटिमधिकम ६। ३९॥
 धेतना २। २॥ ८। १४॥
 धेतमिक १। ०॥ ३। १॥ ३॥
 २०॥ ६। १। ३२॥ ७। ४२॥
 ८। १। ७। १९। २२-२४॥
 २०। ३२॥
 धेतोगुण २। १॥

 उ
 उद्याकिपितपयनि ४। २६॥
 उद्यद २। ३। ११। २७। २९॥ ७।
 १३। ३४॥
 उद्याधिपति ७। २३॥
 उगिदिपाद ७। २३॥
 उगिगुडि ७। ३५॥ ९। ३५॥
 उद्यु ३। २६॥
 उद्यमित्र ८। १२॥

 ग
 गमग्य ८। ११॥
 गमद ८। १०। १५॥

जरता ६।८।२९॥
 जरामरण ८।४।६।७।१०॥
 जयन श ९-१।।६।१७।२२॥
 ४।८।९।१।।३।१४॥
 ६।१८।२२॥६।३७॥६॥
 १२॥७।२३॥८।२३॥८
 ४॥
 जाति ८।४।६-८॥
 जातिस्य ६।५॥
 जापमानादिस्य ६।१७॥
 जाग ६।२६॥
 जिवदा ३।२४॥४।८।८।६॥
 ४।८।२८॥
 जिवदादग्रह ६।१८॥
 जिवदाद्वार ३।१३॥
 जिवदाद्वारथोषि ४।६॥
 जिवदाधातु ७।३९॥
 जिवदाधातु ७।३८॥
 जिवदाधिज्ञान १।७।८॥४।
 ५॥
 जिवदाधिज्ञानधातु ७।३९॥
 जिवदाधिज्ञानर्थोषि ४।६॥
 जिविद्विद्वय ७।१८॥
 जीवित २।२॥६।६।८।१८॥
 ८।२६॥
 जीवितवक ८।३८॥९।१८॥
 २८॥
 जीवितस्त्र ६।४॥
 जीवितस्त्रिय २।२॥६।४॥
 ७।१८।२२॥

क
 काल १।३१॥२।२४॥३।३
 २२॥६।१४।३१॥
 २३।४५॥
 कातंग १।११॥६।२६॥७॥
 १६।२३।२४॥८।१४॥
 कानपद्य ८।११॥
 कानिक २।१९॥९।१४॥
 ल
 लाल २।८३।२४॥३।७।२२॥
 ६।३०॥७।२२॥९।३४-
 ३६।४६॥
 लागदस्तत्पितुद्वि १।२६।३६॥
 लाणवित्पद्मुत्त १।१२-१४॥३॥
 ७।२२॥४।२१॥
 लाणवित्पद्मुत्त १।१२-१४॥२॥
 १६॥३।७।२२॥४।१३।
 २१॥
 म
 मान १।१९॥६।१४।२८॥
 दिति ४।८॥६।१३॥८।३॥
 दितिकाल ६।२६।२६॥
 त
 तण्डा ६।३०॥७।१३।४३॥
 ८।४।७-९॥
 तण्डानुसय ८।३६॥
 तण्डापलिषि ९।३७॥
 ततिःज्ञान १।१७।१८।३॥
 २।२१॥६।११॥
 ततियस्त्रानभूमि ६।६।१४॥

चरित ९। १२॥
 चरितसंग्रह ९। ३॥
 चलन ४। ९। ११॥
 चवन ५। १०। ३३। ४०॥
 चवनशाल ६। १४॥
 चवनमानस ७। १८॥
 चागानुस्मति ९। ८॥
 चाकुम्महाराजिक ८। १। १२॥
 चित १। १। २। २९। ३०॥ २।
 २७। २९॥ ३। १। ३। ३। ७॥
 १। २०। १। १। १२। १८। २०॥
 २१। २३॥ ४। १। ३। ८। १॥
 १०। १। १२। १३। ११॥ ९॥
 ४०॥ ६। १०। १२। १३॥
 १३। ६॥ १२॥ १२॥ ७॥
 २३। १३॥ ३४॥ १। ७॥
 १८। १३॥ ४५॥
 चितामयज्ञा २। ८॥
 चितभेदलिङ्ग ३। १॥ ४। १। १५॥
 १। १५। १५। १०२-१५॥
 २३। ३॥
 चितत ५। १५॥
 चितप्रदा ६। २१। १८॥
 चितप्रदिवि ८। ६॥
 चितप्रागुपत्रा २। ६॥
 चितप्रबति ४। १। ४। २३॥
 चितमूर्ता २। ६॥
 चितप्रूपा २। ६॥
 चितप्रमुदि १। १२॥ ११॥
 चितप्रवर्ति ८। ४॥ १। ४॥ ४४॥
 चितप्रकाश ६। १२॥ ४॥
 चितप्रमुख ६। १२॥ ४॥ १०॥

चित्तमुद्घानकलाप ६। ११॥
 चित्तमुद्घानरूप ६। १२॥
 चित्तप्रिपति ७। २०॥
 चित्तानुप्रस्तासतिप्रटात ७। २३॥
 चित्तदिपाद ७। २७॥
 चित्तुक्षुद्रया २। ५॥
 चित्तुल्याद २। ९। ३०॥ ३। १॥
 १२॥ ४। १। ९। १०। १२॥
 ६। २४। २८। ४०॥ ८। ३३॥
 चित्तोनुगम्भटात ६। २८॥
 चुति ३। ९-११। ३५। २१०६।
 १। १४। १६। ३१। ४१॥
 चुतिप्रिति ६। ३३। ४४॥ ६। २३॥
 चुतिप्रटिप्रियम ६। ३१॥
 चेतमा २। २॥ ८। ३४॥
 चेतनिक १। १॥ २। १॥ १॥
 २०॥ ६। १। १२॥ ७। ४२॥
 ८। १। ३। ५। ११। १२-१३॥
 २०॥ ३॥
 चेतामृत २। १॥
 उ
 उचितप्रितापति ४। २१॥
 उच्चर २। १। १८। २१। १९॥ ५॥
 १३। ३७॥
 उच्चातिपति ७। २३॥
 उच्चिरित्याद ७। २३॥
 उच्चिर्युदि ७। ३७॥ १। ३४॥
 उच्चृत १। १३॥
 उच्चित्त ८। ३५॥
 उ
 अदाय २। ११॥
 अन्त ८। ११॥ १२॥

वरता ६।८।२९॥

वरामरण ८।४।६।७।१०॥

वर्षन ३।९।१।१।१६।१७।२२॥

४।८।९।१।१।१।१॥

६।१।८।२।२।१।६।१७॥६॥

१२।५।७।२।३॥८।१।८॥७॥

४।४॥

जाति ८।४।६—८॥

जातिलय ६।८॥

जायमानादिलय ६।१॥

जाय ६।४॥

जिव्हा ३।२४॥४।७।८।९।१६॥

४।२४।२८॥

जिव्हाद्वारक ६।१॥

जिव्हाद्वार ३।१॥

जिव्हाद्वारवीर्य ४।६॥

जिव्हाधारु ७।१॥

जिव्हाद्वार ७।३॥

जिव्हाविज्ञाय १।५।८॥४॥

६॥

जिव्हाविज्ञानधारु ७।३॥

जिव्हाविज्ञानवीर्य ४।६॥

जिव्हाविद्वय ७।१॥

जीवित २।२॥६।६।८।१८॥

८।२६॥

जीवितनवक ५।१॥६।१॥१८॥

२॥

जीवितस्य ६।४॥

जीवितविद्वय २।२॥६।६।४॥

७।१॥२॥

स

सात ८।३॥२।२॥२४॥

२२॥७॥४॥३॥

२३॥४॥

सातेंग १।३॥७॥२॥२२॥

१॥२॥२॥२॥४॥

सामयश्य ८।१॥

सानिक २।१॥९॥१॥८॥

थ

थाल २।२॥२॥२॥३॥

६।४॥७॥२॥२॥९॥

३॥४॥

आगदस्तत्विसुद्धि ९।२॥

आगविष्ट्युत १।१२—१३॥

७॥२॥४॥२॥

आणमंपयुत १।१२—१३॥

१॥॥६॥७॥२॥२॥४॥

२॥

ठ

ठान ३।९॥६।१॥४॥२॥

ठिति ४।८॥६॥१॥३॥८॥

ठितिकाल ६।२॥२॥२॥

ठ

तण्डा ६।३॥७॥१॥१३॥

८॥४॥७—९॥

तण्डानुसय ७॥१॥६॥

तण्डापणिधि ९॥३॥

ततिक्ष्याम १।१७॥१॥८॥

२॥२॥६॥१॥१॥

ततियज्ञामभूमि ८॥६॥८॥

ततियग्रहानसोताप्तिमण्डित
 १।३०॥
 ततियग्रहानसोताप्तिमण्डित २।२९॥
 ततियावर्ण ९।२१॥
 तथमग्रहान्तरा २।६॥
 तथागत ६।३२॥
 तथारम्भग ३।१०।११।१२॥
 ४।८।११।१३।१५-१८।
 २८॥
 तनुकरण ९।४०॥
 तन्त्रदिमात ९।१८॥
 तन्त्रग्रुक ७।१३॥
 तन्त्रग्रहानसोताप्तिमण्डित
 शिवत ८।३॥
 तात्त्वित ५।८॥
 तिरचालयोगि ८।४॥
 तिष्ठवयग ९।३२॥
 तिष्ठगु ३।२३॥
 तिष्ठित ८।८॥
 तिष्ठृ ४।१२॥
 तिष्ठृक ३।७।८॥४।२२॥
 ५।२०।३०॥७।२३॥
 तूलिन ५।८।१२॥
 तेजादित ८।३॥
 तेजादितित ९।११॥
 तेजाग्रु ३।४।१३॥
 तेजूपद ३।४२।४३।४८।५०॥
 ५।३४॥
 ८
 तेजू २।८।१३।१५।२१।२३॥
 १३॥

थीतमिद्द्वीपरम ७।५॥
 ८
 दमक ६।२८॥
 दत्तसन ३।९।१०।११।१२
 दान ८।२२॥
 दिट्ठग्रहानसोताप्तिमण्डित ६।११॥
 दिहानुसरण ७।९॥
 दिहासर ७।३॥
 दिहि २।४।१३।२५
 ५।२३।२४।४७।१२
 १७।३१।३३॥११।३५
 दिहिगत ७।१३॥
 दिहिगतविष्यग्रुप ३।३॥
 दिहिगतसंप्रयुक्त १।३४।४।२
 दिहिग्रुहम ६।२६॥
 दिहियोग ७।५॥
 दिहियोगि ९।४॥१॥
 दिहियोग्य ७।१०।११॥
 दिहिगारात ७।७॥
 दिहीय ७।४॥
 दिव ६।१२॥
 दिवधर्मग्रु ९।२४॥
 दिवसोत ९।३४॥
 दिवा ८।३३॥
 दीगजाला ९।३६॥
 दुर्घट १।२।४॥७।७।४॥१॥
 ८।४।११।४९।१४॥
 दुर्घटहितीष्ठामिनीष्ठिरा
 ७।४०॥
 दुर्घटनष ९।३१॥
 दुर्घटहर्षण ९।३१॥
 दुर्घटमहर्षण ९।४०॥

दुर्लभतात् १ । ५ ॥
 दुर्वासुपस्त्रा २ । २७ । ३७ ॥
 दुर्विशेषद्युम्प ७ । १८ ॥
 द्वागति ४ । २१ ॥
 द्वितियवित्त ६ । २६ ॥
 द्वितियशान १ । १७ । १८ ।
 ३० ॥ २ । ११ ॥ ९ । ३१ ॥
 द्वितियशानमूष्मि ६ । १ । १७ ॥
 द्वितियशानविषयक ६ । १८ ॥
 द्वितियशानसोलाष्टिमाणवित्त
 ३ । २० ॥
 द्वितियशानविकवित्त २ । १२ ।
 २१ ॥
 द्वितियाहृष्ट ९ । २१ ॥
 द्विद्वृक्ष १ । ७ । ८ ॥ ४ ॥ २१ ॥
 द्विद्वृप्य ६ । ८ ॥
 देव ५ । १२ । १५ । १७ ॥
 देवतानुस्तति ९ । ८ ॥
 दोमतस्तु २ । ३१ ॥ ३ । ३-
 ४ ॥ ७ । १६ ॥ ८ । ४ ॥
 दोमतस्तस्तहगत १ । ४ ॥ ३ ।
 ३ ॥ ४ । १७ ॥
 दोमतस्तिस्त्रिय ७ । १८ ॥
 दोस ५ । ४ । १३ । २६ ॥ ३ ।
 ६ ॥ ८ ॥ ७ ॥ १२ ॥ १५ ॥ १ ।
 ४० ॥
 दोसम्बल १ । ६ ॥ २ । १४ ॥
 ६ । २४ ॥
 दोसद्वित ९ । ३ । १२ ॥
 द्वार २ । ११ ॥ ३ । १ । १३ ।
 ३४ ॥ ४ । २ । ४ । ६-९ ।
 १२ । १५ ॥ ७ । २० । २१ ।
 २६ । ३६ ॥ ७ । ४२ ॥

द्वारकप ६ । ८ ॥
 द्वारसंगाठ ३ । १३ ॥
 द्वारिक ३ । १७ ॥ ४ ॥ २४ ॥ १६ ॥
 द्विपथविज्ञान २ । ११ ॥ ३ ।
 ६ । ११ ॥ ३ । ११ ॥
 द्विद्वृक्ष ५ । ९ ॥ ७ ॥ १३ ॥
 ४
 धम्म २ । १ । १६ । १८ । १९ ।
 २१ । २२-२३ । २९ ॥ ३ ।
 १ । १९ । २० ॥ ५ ॥ १७ ॥ ७ ।
 ३ । २४ । २६ । २४ ॥ ११ ॥
 ८ । १३ । १६ । १९ । २२-
 २४ । २७ । ३१ । ३२ ॥ ९ ।
 ४४ ॥
 धम्मदेसता ७ । २६ ॥
 धम्मधारु ७ । ३१ । ४१ ॥
 धम्मविषयसंघोस्तीर्ण ७ । १० ॥
 धम्मसबन ७ । २६ ॥
 धम्मानुपस्त्रासतिपठान ७ ।
 २५ ॥
 धम्मानुस्तति ९ । ८ ॥
 धम्मायतन ७ । ३८ । ४८ ॥
 धम्मारम्मण ३ । १९ ॥
 धरण ६ । ३७ ॥
 धातु ३ । २६ । २६ ॥ ६ । ४ ।
 ६ । १३ । १६ । १० ॥ ७ ।
 ३८ । ४१ । ४२ ॥ ४२ ॥ ८ । १६ ।
 २४ । २३ ॥
 न
 नय ८ । २-४ ॥ ९ । २४ । ३४ ।
 १८ । ४६ ॥

नियपश्य ८ । ११ । १३ ॥
 तदीसोत ६ । ४० ॥ ६ । २६ ॥
 तातकविजिक ८ । १४ ॥
 ताम ८ । १२ । ६ । १६ । २० ।
 २ । ३१ । ३५ । ३० । ३८ ॥
 तामहृप ८ । ४ । ७ । १४ । १७ ।
 २५ । २६ ॥ ९ । ३२ । ३३ ॥
 निक्षन्तत्त ६ । ३० ॥
 निष्क्रम ९ । १८ ॥
 निष्पक्षहृप ६ । ४ ॥
 निष्वान १ । २ ॥ ३ । २० ॥ ६ ॥
 ३० । ३१ ॥ ७ । ४२-४३ ॥
 ८ । ३२ ॥ ९ । ३८ ॥
 निष्वानगोचर ३ । २३ ॥
 निष्वानारम्मण ३ । २२ ॥
 निष्ठिद्वान्नाण ९ । २८ ॥
 निमित्त ६ । ३५ । ३७ । ३८ ॥
 ८ । ३३ । ३६ ॥ ९१६ ।
 १६-२० । २२ ॥ ३७ ॥
 निम्मानरति ६ । ६ । १२ ॥
 नियतयोगि २ । ५७ ॥
 नियम ४ । १८-२० ॥ ६ । १२ ॥
 निय ६ । ४ ॥
 निष्टु ४ । १९ ॥ ६ । ३६ ॥ ८ ।
 १९ ॥
 निरोध २ । १ ॥ ४ । ९ । १९ ॥
 ६ । ४० ॥ ७ । ४० । ४३ ॥
 ८ । १० ॥
 निरोधसत्त्व ९ । ३६ ॥
 निरोधसमाप्ति ९ । ४४ ॥
 निरोधसमाप्ति ४ । १९ ॥ ९ ।
 ४३ ॥

निस्तट ७ । ४२ ॥
 निस्तटकलनिदम्भ ८ । ७ ॥
 निस्तटवश्य ८ । ११ । २० । १२ ॥
 नीलकमिष ९ । ६ ॥
 नीतादि ९ । १२ ॥
 नीषरण ७ । ८ । १४ ।
 नेषमज्ञानामप्यायतन १ । २ ॥
 २३ ॥ ९ । ३ । ९ । ४४ ॥
 नेषमज्ञानामप्यायतनूपग ६
 १० ॥

४

एकलूपनिस्तय ८ । १८ । १९ ॥
 एकालित ६ । १६ ॥
 एकिण्णक २ । ३ । ९ । १२ । २९ ॥
 एगद ९ । ३४ ॥
 एशय ८ । १ । ४ । १३ । ११-
 २१ । ३१ । ३५ ॥
 एशयद्विनि ८ । ३ ॥
 एशयपरिगद ९ । ३३ ॥
 एशयसंगद ८ । २ ॥
 एशयस्तिसुतसीढ ९ । ३० ॥
 एशयस्तवग्नाप ९ । २६ । ४५ ॥
 एशवेदग्नाप ९ । १९ ॥
 एशासद्वरण ६ । ३६ ॥
 एशुपहान ९ । ३२ ॥
 एशुपद्म ६ । ३६ । ३७ ॥ ८ ॥
 एश्वाज्ञात ८ । १२ । २७ । २८ ॥
 एश्वाज्ञातपश्य ८ । ११ ॥
 एश्विच ६ । ३३ ॥
 एश्वक्षमन्ध ७ । ३६ ॥
 एश्वद्वार ४ । ७ । ९ । १० ॥
 एश्वद्वारावच्छन १ । ९ ॥ २ । ३ ॥
 ३ । ६ । १६ । २६ ॥ ४ ॥ ८ ॥

पदमराहात १। १७-१९। ३०॥	२४। २५। २७। २८॥ ८। २६॥
२। १८। २१॥ ८। १४॥	३॥ ३०॥
पदमराहातसोतापतिमारुदिग्न १। ३०॥	पहिमधिक ४। १७॥ ५। ५०॥
पदमराहातनिषयित २। १९। २१॥	पहुत ८। ३१॥
पदविभ्रमय ४। १६॥	पहुतनय ८। २। ३। ११॥
पमत ८। ३३॥	पठमराहात १। १७। १८। ३०॥
पमतारम्भग ५। २८॥	५। ३। ३। १। १९। ४४॥
पमति ३। २०-२२॥ ६। ३८॥	पठमराहातभूमि ५। ६। १५॥
८। ३१-३६॥ ९। ३८। २०॥	पठमराहातयिपाक ५। १४॥
पमता २। १६॥ ७। ३४॥	पठमराहातसोतापतिमारुदिग्न १। ३०॥
पमादक ७। १९। २९॥	पठमराहातिकवित २। १९। २१॥
पटिप्रदिव २। ७॥ ७। १८। २८॥	पठमरवेग ६। १२॥
पटिमृगलसप्तप्रा ९। १०॥	पठमरवेग ३। २५॥ ४। २४॥
पटिय १। ४॥ १। १३। २८॥ ३॥	पठमादय ५। १६॥ ९। २१॥
५। २५॥	पठबीकसिन ९। ६। २०॥
पटियवित १। ४॥ ३। ३॥	पठभीषानु ६। ४॥
पटियजवन ८। २२। २३॥	पठशीरणदत ९। १९॥
पटियनयाजग ७। १०। ११॥	पणीत ५। ३२॥
पटियानुसप ७। ९॥	पणिहत ९। ३६॥
पटियहमुन्नयाद ८। १०॥	पत्तानुमोदन ५। २७॥
पटियममुन्नयादनय ८। १२-१॥	पद ६। ३१॥
पटियहमागदहस्तनविसुद्धि ९।	पश्चान ९। ३२॥
२५। ३५॥	परचित्ताविजानित ९। २४॥
पटियव्यविष्पदोन ९। १८॥	परनिमितयसवति ५। ५। १२॥
पटिमागनिमित ९। ६। १५।	परमत्य १। १॥ ६। ३२॥
१८-२०॥	परियन ४। १३॥ ९। २१-२३॥
पटिन्द्राव्राण ९। २८॥	९। ३६॥
पटिसंधि २। २९॥ ३। ९-१२।	परिकम्भनिमित ९। ६। १५। १६॥
४। २१॥ ४। १३॥ ५। १२।	परिकम्भमाधन ९। ४। १५॥
९-११। ३५। १६। १८। २७-	परिकम्भसमाधि ९। १८॥
२९। ३२। ३५-४१॥ ६। ११।	परिक्षेप ६। ६। २३॥

परिष्वेदस्य ६।५॥
 परित २।२४॥४।०।९।१३॥
 १३।११।२०॥६।३१॥३॥
 परितज्जनशार ४।१२॥
 परितज्जनशीषि ४।१९॥
 परितमुख ५।६।१५।३२॥
 परिताम्ब २।६।१५।३१॥
 परितारमण ४।२७॥
 परिदेव ८।४॥
 परियाह ९।३६॥
 परिकथ ९।३४।३५॥
 परियाय ६।१९॥६।३०॥७।
 ४२॥९।१९॥
 परियोगान ६।१०।५०॥
 परिषुद्ध ६।३६॥
 परम ६।१३॥३७॥६।२९॥३७॥
 १३॥८॥१०॥३५॥
 परविष्ट ८।१८।१९॥१९॥६।१४॥
 ६।१५॥३८॥७।३।१६॥
 १६॥१२॥
 परविष्ट ९।१॥
 परविष्टम ६।१॥
 परविष्टमर ८।१॥५॥१॥
 परमाद १।३०॥७॥८।२८॥१
 १॥१॥८॥०॥१॥४॥
 परमादरा ६।४॥
 परमादर्थ ३॥५॥
 परमर्थ ३॥३॥३॥३॥३॥३॥
 परमर्थत्वं गोपय ३॥३॥
 परम ७।३९॥४२॥४०॥
 परमात्मात्मन ७।३२॥
 परम १।३६॥४२॥४०॥३५॥

३।२६॥४।८॥१।११॥५॥
 १९।२७॥३०॥३३॥
 पादिक्षितम्य ६।३३॥
 पादिधारिय ४।१९॥
 पाणातिषात ६।२१।२४॥
 पानिमोक्षसंपरतोऽ १।३०॥
 पापक ७।२६॥
 पापमेगह ७।१४॥
 पापादेश्वरमुत १।१॥
 पितुगवाया ६।२२॥
 पीतकलिण ९।९॥
 पीति १।१७।१८।१०॥१।१॥
 १।१९।३।१३-१५॥१५
 ७।१६।१३-१५॥१।१४॥
 पीतिमोक्षीण ७।३०॥
 पीचित ८।१०॥
 पुण्ड्र ८।१३।१२॥५।१८॥
 १९॥१३॥१५॥१७॥
 पुण्ड्र ८।१०॥१३॥१०॥१७॥
 १॥१३॥
 पुण्ड्र ८।१६॥१३॥६॥१०॥
 पुण्ड्रगंगा ९।११॥
 पुण्ड्र ९।१५॥
 पुण्ड्रहिष ९।४५॥
 पुण्ड्रगम ६।३३॥
 पुण्ड्रार ८।१॥
 पुण्ड्रितामामृणि ९।४७॥
 पुण्ड्रामामृण ९।१६॥
 पुरिम ८।१॥१॥
 पुरिम ९।१४॥
 पुरिमुण्ड ८।११॥

इरितिनिष्ठय ७। १०॥
इरेशन ८। १५। १३। २८॥
इरेशारपदय ८। १। १। ०७॥
इरुरु ९। ७॥
ईतिविसय ९। ४॥

क

एससवाक्ष ६। २२। २४॥
एड १। १७॥ ३। १०। २२॥
२२। ४। ११॥ ६। १०॥ ७॥
४३॥ ९। ३७। ४८॥

एलित १। ३०॥ ४। १९॥ १॥
३॥ १॥

एससय ४। १४॥
फलपक्क ८। ८॥
एससमापति ९। ३८। ४३॥
फल्स २। २॥ ७। २८॥ ८। ४॥
७॥

एसन ३। ९। १०॥
फोटूस्ट ३। १९॥ ६। ४॥
फोटूच्चवधानु ७। ३९॥
फोटूच्चायतन ७। ३८॥
फोटूच्चारमण ३। १९॥

घ

घल ७। १। २३। २४। २९॥
घटिदा ६। २२॥
घुच्छितव्यतण ४। ८॥
घाहिर ६। ७। ८॥
घातू ६। ३६॥
घाहुहुकुति ८। २१-२३॥
घुच्छण ९। २२॥
घुदानुस्तति ८। ८। १२। १३॥
घुटिच्छरित ९। ३। १२॥

घुष १। ३१॥ ६। ४२॥
घोडांग ७। ३०॥
घोषिष्ठिग्नपंगह ७। २। २६॥
घ्यापाद ६। २३। २४॥ ७। ६॥
९। ४॥

घ्यापादनीवरण ७। ८॥
घ्यापारिस्त्र ५। ६। १८॥ १॥
घ्यापुरीहित ७। ६। १८॥ ३॥
घ्यापवाह ९। ९॥

भ

भगवा ४। १९॥
भेगप्राण ९। २८॥
भयज्ञाण ९। २८॥
भयह ९। ३४॥
भव ८। ३५। ३६। ५०। ४६॥
७। १३॥ ८। ४। ७-९॥
भवंग ३। ९-११। १४॥ १६। २१॥
४। ८। ९। ११। १२। १३॥ १७॥
८। १०। ११। १४। १६। १८। १९॥
३७। ४१॥ ६। १२॥ ११-१६॥
भवंगवरय ८। ३६॥
भवंगवलन ४। ९। ११॥
भवंगमतरित ४। २६॥
भवंगवात ४। ८। ९। १२। १३॥
१७। १९॥ ९। ३६। ४७॥
भवंगसंतति ८। ४०॥
भवंगसोत ४। ८। १९॥
भवैतर ८। ३६। ३६॥ ६। २७॥
भवयोग ७। ६॥
भवरामसंयोजन ७। १॥
भवरामानुसय ७। ९॥
भवास ८। ३॥

मध्योद ७ ॥ ४ ॥
 माम ८ ॥ १२ ॥
 माव ९ ॥ ६ ॥ ८ ॥ २४ ॥
 मावसक १० ॥ २८ ॥
 मावना ११ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ८ ॥ ८ ॥
 ११ ॥ ४ ॥ १२-१४ ॥ १५-१८
 ॥ १९ ॥

मावर १० ॥ ४ ॥
 भिर्योमाल ७ ॥ २५ ॥
 भृत्यनिक्षिप ९ ॥ ११ ॥
 भू ११ ॥ ४ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २१ ॥
 भूषा १ ॥ ४ ॥
 भूषि ४ ॥ ११-२४ ॥ २८ ॥ १७ ॥
 ४ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १४ ॥ १५ ॥ २३ ॥
 ५ ॥ १३ ॥ १५ ॥

भैर १ ॥ १२ ॥ ३ ॥ ७ ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥
 २५ ॥ ११ ॥ १० ॥ ८ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ४ ॥
 भंग ८ ॥ ११ ॥

म

माम १ ॥ १० ॥ ३ ॥ ८ ॥ १३ ॥
 २० ॥ ४ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १० ॥
 ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ ॥ १७ ॥
 १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥
 भासि १ ॥ ११ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
 ८ ॥ १६ ॥

मामाम ८ ॥ ११ ॥
 मामाम ९ ॥ ११ ॥
 मामामामामामामामामामामामामाम १ ॥
 २० ॥ १४ ॥
 मामामाम १ ॥ १ ॥ १३ ॥ १० ॥ ११ ॥
 मामामाम १ ॥ १३ ॥ १० ॥ ११ ॥
 मामाम १ ॥ १३ ॥

माम ८ ॥ ११ ॥
 मामाम २ ॥ २४ ॥ १८ ॥ ११ ॥
 माम ९ ॥ ११ ॥
 मामाम १ ॥ २३ ॥
 मामामाम १ ॥ २१ ॥
 माम २ ॥ २४ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १२ ॥
 ४ ॥ ६-७ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १५ ॥
 २३ ॥
 मामामाम २ ॥ २ ॥
 मामामाम ७ ॥ १८ ॥ १४ ॥
 मामामाम ७ ॥ १८ ॥
 मामामाम ८ ॥ १८ ॥ ११ ॥ १२ ॥
 मामामाम ८ ॥ १० ॥ २३ ॥ ११ ॥
 २३ ॥
 मामामाम १ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ ॥
 ११ ॥ १२ ॥ ६ ॥ १२ ॥ १२ ॥
 ८ ॥ १३ ॥ १ ॥ १३ ॥ १२ ॥
 मामामामामाम ४ ॥ ६ ॥ १ ॥
 मामामामामाम ३ ॥ ११ ॥ १ ॥
 १० ॥ ११ ॥
 मामामाम १ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
 मामामाम १ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
 ११ ॥ १२ ॥ १२ ॥
 मामामाम ४ ॥ १ ॥ १ ॥
 मामामामामामाम १ ॥ १२ ॥ १३ ॥
 १४ ॥
 मामामामामामाम ५ ॥ १ ॥
 मामामामाम ५ ॥ ११ ॥
 मामामाम ५ ॥ १२ ॥
 मामामाम ५ ॥ १३ ॥
 मामाम ५ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥
 १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ १३ ॥

रसायन ४ । १९ ॥ ७ ॥ २५ ॥
 ६ ॥ २६ ॥
 रसानुसरति २ । ८ ॥
 रसासप्तरीयि ६ । ३७ ॥
 रसुल्लिंग ६ । २ ॥ ३४ ॥
 रस्यत २ । २५ ॥ १८ ॥ २१ ॥ २२ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ७ ॥ १७ ॥ २२ ॥
 २३ ॥ ५ ॥ १३ ॥ ६ ॥ १३ ॥
 १८ ॥
 रस्यतस्त्रवन ४ । ३९ ॥
 रस्यतविषाक्त ३ । ११ ॥
 रस्यतसमापति ९ । ४४ ॥
 रस्यतारमण ३ । २२ ॥
 रस्त ४ । ७ ॥
 राघव ६ । ६ । १५ । १६ ॥
 रामूल ६ । ६ ॥ ८ । २२-२४॥
 रामुनि ८ । १० ॥
 राविषाक ३ । १० । २६ ॥
 ४ । २१ ॥ ७ । ११ ॥ २८ ॥
 रेति ६ । ११ ॥
 रेत २ । ४ । १३ । १७ । २५ ॥
 ७ ॥ १२ ॥
 रेत १ । २९ ॥ ६ । १८ । १६ ॥
 ४० ॥
 रेतसंयोजन ७ । १० । ११ ॥
 रेतानुभव ७ । ९ ॥
 रेत्तुषाखार ६ । २५ ॥
 रेत्तुषादिहि ६ । २३ ॥ २४ ॥
 ७ । १७ ॥
 रेत्तुषाधायाय ७ । १७ ॥
 रेत्तुषासंकर्ष ७ । १७ ॥
 रेत्तुषासमाधि ७ । १७ ॥
 रेत्तुष २ । ५ । १३ ॥ १७ ॥ २६ ॥

रेत्तुषसंगह ७ । २ । १६ ॥
 २४ ॥
 रुप ९ । २९ ॥
 रुधिनुकम्यताप्राण ३ । २८ ॥
 रुदिता २ । १६ ॥ २१ ॥ ९ ॥ १० ॥
 रुदुता ६ ॥ ९ ॥
 रुतायाद ५ । २२ ॥
 रुड ५ । २४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ १० ॥
 रेत्ता ९ । ९ । १४ ॥
 रोषथार ४ । ९ ॥
 रोमूद १ ॥ ५ ॥ २ ॥ ११ ॥ २ ॥ ७ ॥
 रोद २ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ३ ॥ ९ ॥ ८ ॥
 ७ ॥ १२ ॥ १६ ॥ ९ ॥ ४० ॥
 रोहयरित ९ । ३ ॥ १२ ॥
 रोहमूल १ । ६ ॥
 य
 यथासेभव २ । १८ ॥
 यमशपाटिहातिय ४ । १९ ॥
 याम ५ । ९ । १२ ॥
 यावतायुक ४ । २६ ॥
 योग २ । १८ ॥ ७ । ७ ॥ १४ ॥
 योजना ६ । १३ ॥
 योनि ६ । ४ ॥
 र
 रथ ८ । १३ ॥
 रथवक्ष ६ । ४० ॥
 रस ३ । १९ ॥ ६ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १ ॥
 १२ ॥
 रसधानु ७ । ३९ ॥
 रसायतन ७ । ३८ ॥
 रसारमण ३ । १९ ॥
 राग ८ । १९ ॥ ९ ॥ ४० ॥

रागधरित ९ । ३ । १२ ॥
 राजपुत ८ । ३६ ॥
 रूप १ । १ । २९ ॥ ३ । १० ।
 १९-२२ । २६ ॥ ४ । ८ ।
 २५ ॥ ६ । १४ । ३६ ॥ ६ ।
 १ । ३-८ । १३ । १४ । २४-
 २६ । २८ । ३२ ॥ ७ । २२ ।
 ४२ ॥ ८ । १२ । १४-१७ ।
 २०-२२ । २४ । २६ । २७
 ३० । ३१ । ३६ ॥ ९ । २३ ।
 ३२ । ३३ ॥
 रूपकलाप ६ । १७ ॥
 रूपवसन्थ ७ । ३६ ॥ ८ । ३२ ॥
 रूपजीवित ८ । २८ ॥
 रूपजीवितिन्द्रिय ८ । २६ ॥
 रूपधम्म ४ । ८ ॥ १० । ३२ ॥
 रूपभासु ७ । ३९ ॥
 रूपपटिसंधिक ६ । ३८ ॥
 रूपपरंपरा ६ । २६ ॥
 रूपपृथवति ६ । २८ । २२ ॥
 रूपरागसंयोजन ७ । १० ॥
 रूपरूप ६ । ४ ॥
 रूपछोक ३ । २४ ॥ ८ । २७ ।
 २८ ॥ ६ । २८ ॥
 रूपविभाग ६ । ९ ॥
 रूपसमुद्घान ६ । १० ॥
 रूपसमुद्घानय ६ । १६ ॥
 रूपसमुरेम ६ । ६ ॥
 रूपायतन ६ । ८ ॥ ७ ॥ ३८ ॥
 रूपारम्म ३ । १९ ॥ ४ । १४ ॥
 रूपावधर १ । २ । १७-२० ।
 ३१ ॥ ३ । २९ ॥ ४ । २४ ॥

६ । १९ । २६ । ३१ । ३१ ॥
 ६ । ११ ॥ ९ । १४ । १९ ।
 २३ ॥
 रूपावचरपटिसंधि ६ । ९ । १४ ।
 ३७ ॥
 रूपावचरमूमि ४ । २४ ॥ ६ । ३ ।
 ६ ॥
 रूपि ६ । २९ ॥
 रूपुपादानवसन्ध ७ । ३७ ॥
 स
 लक्षण ६ । ६ । १६ । २३ ॥
 ७ । ३ ॥ ९ । २६ । ३२ । ३६ ॥
 लक्षणतय ९ । ३४ ॥
 लक्षणग्रहण ६ । ६ । १६ ॥
 लद्धपचय ४ । ८ ॥
 लहुकृपवति ४ । १९ ॥
 लहुता ६ । ६ । १६ । १९-२१ ॥
 लोक ३ । २४ ॥ ५ । २७ ।
 २८ ॥ ६ । २४ । २६ । २८ ।
 ८ । ३६ ॥ ९ । ४० ॥
 लोकिय २ । १६ ॥ ६ । ७ ॥
 लोकुतर १ । २ । २६ । ३० ॥ २ ।
 १६ । १९ ॥ ३ । ३ । ७ । १७ ॥
 २२ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६ । ३० ॥
 ७ । ३६ । ४३ ॥
 लोकुतरजयन ४ । २२ ॥
 लोकुतरविपाकवित १ । २१ ॥
 लोम २ । ४ । १३ । २६ ॥ ३ । १ ॥
 ६ । ८ ॥ ७ ॥ १२ । १६ ॥
 लोममूळ १ । ६ ॥ २ । १४ ॥ ६ ॥
 ६ ॥ ४ ॥
 लोमसहगत १ । १ ॥

सोहितक १ ॥ ७ ॥
 सोहितकसिण १ ॥ ६ ॥
 य
 वचोकम्म ५ ॥ २० ॥ २२ ॥ २५ ॥
 वचोघोस ८ ॥ ३६ ॥
 वचीदार ६ ॥ २२ ॥ २५ ॥
 वचोविश्वसि ५ ॥ २२ ॥ ६ ॥
 ६ ॥ ११ ॥
 वह ७ ॥ ४३ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 वग्न ६ ॥ ८ ॥
 वग्नु १ ॥ १ ॥ २४-२६ ॥ ४ ॥ २ ॥
 ४ ॥ ६ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७ ॥ १४ ॥
 ८ ॥ १६ ॥ २२-२४ ॥ २७ ॥
 वग्नुदसक ६ ॥ १८ ॥ २४ ॥
 वग्नुधम्म ७ ॥ १ ॥ ९ ॥ १८ ॥
 वग्नुधर ६ ॥ ८ ॥
 वग्नुसगद ५ ॥ २४ ॥
 वग्नत्यान १ ॥ २ ॥ १० ॥ १२ ॥ १३ ॥
 वाचा ८ ॥ २२ ॥ २४ ॥ ७ ॥ १७ ॥
 ११ ॥
 वात ६ ॥ ३० ॥ ३१ ॥
 वायाम ७ ॥ १७ ॥ २६ ॥ ३१-३३ ॥
 वायोकरिण १ ॥ ९ ॥
 वायोपातु १ ॥ ४ ॥
 विकार १ ॥ १ ॥ १९ ॥
 विकारकर १ ॥ ९ ॥
 विकारावितक १ ॥ ७ ॥
 विकितक १ ॥ ७ ॥
 विगतप्रवर्ष ८ ॥ ११ ॥ १२ ॥
 विनवरण १ ॥ १९ ॥ ११ ॥ १३ ॥
 विचार १ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १० ॥ ४२ ॥

१ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥
 १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ११ ॥
 विविकिच्छा १ ॥ ६ ॥ २ ॥ ४ ॥ ११ ॥
 १३ ॥ १७ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७ ॥ १२ ॥
 २३ ॥ ९ ॥ ३९ ॥
 विविकिच्छामीवरण ७ ॥ ८ ॥
 विविकिच्छानुसय ७ ॥ ९ ॥
 विविकिच्छामेयोजन ७ ॥ १० ॥
 ११ ॥
 विच्छिक १ ॥ ७ ॥
 विज्ञमानपञ्चनि ८ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥
 विज्ञनि ८ ॥ २१-२३ ॥ ६ ॥ १६ ॥
 ६ ॥ ८ ॥ १२ ॥ १५ ॥ १९ ॥
 विज्ञपतिहर ६ ॥ ९ ॥
 विज्ञाण २ ॥ ११ ॥ १९ ॥ ३ ॥ १ ॥
 ६ ॥ ९ ॥ १७ ॥ २२ ॥ २५ ॥ ४ ॥
 २ ॥ ९ ॥ ६ ॥ ८ ॥ ७ ॥ १ ॥
 २१ ॥ १९ ॥ ४२ ॥ ८ ॥ ७ ॥ १ ॥
 ८ ॥ १६ ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ ॥ १६ ॥
 १ ॥ १२ ॥
 विज्ञाणवस्त्रध ७ ॥ १६ ॥
 विज्ञाणभायतम १ ॥ १२ ॥ १२ ॥
 १३ ॥ ८ ॥ ७ ॥ १७ ॥
 विज्ञाणधारु १ ॥ २५ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 ८ ॥ १३ ॥ १४ ॥
 विज्ञाणधारानवस्त्रध ७ ॥ १७ ॥
 वितक १ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १० ॥ १२ ॥
 १ ॥ ११ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १ ॥ १३ ॥
 १ ॥ १५ ॥
 वितकरतिक १ ॥ १ ॥ १५ ॥
 वित्तार १ ॥ १० ॥ ४ ॥ १४ ॥ १० ॥
 विवितामित्तार ५ ॥ ११ ॥ १२ ॥

विजितमीग्रहण ६ ॥ ८ ॥	विसयप्पदति २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥
विमीलक ९ ॥ ७ ॥	विषुद्धि ९ ॥ २५ ॥ ३०-३२ ॥ ३५
विष्वासनिनिः ९ ॥ ३७ ॥	३६ ॥
विष्वसना ९ ॥ १ ॥ २८ ॥ ३४-३८ ॥	विसेसक २ ॥ २४ ॥
विष्वसनाकम्भान् ९ ॥ २८ ॥ ३५ ॥	वीतराग ४ ॥ १६ ॥
विष्वसन्त ९ ॥ ३८ ॥ ४४ ॥	वीयि ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११
विषाक २ ॥ १८ ॥ २८ ॥ २ ॥ २३ ॥	१९ ॥ ८ ॥ ३७ ॥ ४१ ॥ ४१
३ ॥ ३ ॥ १० ॥ ११ ॥ १७ ॥ २२ ॥	४६ ॥ ३६ ॥ ९ ॥ ३६ ॥
२८ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २१ ॥ ५ ॥ १० ॥	योगिचित्त ४ ॥ ९ ॥ १० ॥ १२ ॥ १५
११ ॥ १४ ॥ १६ ॥ २८-३० ॥ ६ ॥	२४ ॥ २५ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३६ ॥ ४० ॥
१२ ॥ ८ ॥ १९ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २७ ॥	योगिमुत ४ ॥ ३ ॥
विषाकवस्थ ८ ॥ १४ ॥	योगिमुनमंगद ५ ॥ २ ॥
विषाकपर्वय ८ ॥ ११ ॥	योगेनाधिपति ७ ॥ २० ॥
विषाकवट ८ ॥ ११ ॥	योगसिद्धिपाद ७ ॥ २७ ॥
विषुद्धक ९ ॥ ७ ॥	योगताकार ८ ॥ ८ ॥
विष्वयुतपर्वय ८ ॥ ११ ॥ २० ॥ २७ ॥	बुद्धान ८ ॥ १९ ॥ ९ ॥ ३७ ॥ ४२ ॥
विभाग ४ ॥ २६ ॥ ६ ॥ १ ॥ १ ॥	बुत ७ ॥ १ ॥ १४ ॥
८ ॥ १ ॥	यदना १ ॥ १५ ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ १ ॥
विमूल ८ ॥ ७ ॥ ११ ॥ २३ ॥ १८ ॥	३ ॥ ॥
विमोक्ष ९ ॥ ३ ॥ ८ ॥	येदनाकर्मण ७ ॥ ३६ ॥
विमोक्षमुम ३ ॥ २९ ॥ ३७ ॥	येदनानुवस्तनामतिपट्टान ७ ॥
विरति २ ॥ ६ ॥ १२ ॥ १३ ॥ २३ ॥	२६ ॥
२४ ॥	येदनुपादानकर्मण ७ ॥ ३७ ॥
विरतिर २ ॥ २१ ॥ ७ ॥ ३३ ॥	येत्यायष ८ ॥ २६ ॥
३४ ॥	येहकठ ८ ॥ ६ ॥ १५ ॥ ३ ॥
विरिय २ ॥ ३ ॥ ११ ॥ २९ ॥ ७ ॥ ४ ॥	योद्धपत १ ॥ २९ ॥ ३ ॥ ६ ॥ १०-१ ॥
विरियवल ७ ॥ १९ ॥ २९ ॥	१२ ॥ १७ ॥ २२ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥
विरियसंबोजसंग ७ ॥ ३० ॥	८ ॥ १२ ॥
विरियाधिपति ७ ॥ २० ॥	योगिम्बक ८ ॥ ३६ ॥
विरियदिपाद ७ ॥ २७ ॥	योद्धार ३ ॥ २३ ॥
विरियदिव्य ७ ॥ १८ ॥ २८ ॥	
६ ॥ ६ ॥ ८ ॥	

४

स उपादिसेत्वगिरानपातु द्वा॒ ३०॥
 संयोजन ७। १०। ११। ३४॥
 संसेदत् ६। २४॥
 सदृ ८। ३३॥
 सदृशगामि ८। ८॥ ९। ४०॥
 सदृशगामिकल १। २६॥
 'सदृशगामिषण १। २६। ३०॥
 १। ४०॥
 'संकल्प ७। १७। ११। ३३-३५॥
 संकेत ८। ३६॥
 'संखत ६। ७॥ ८। १। ११॥
 'संखा ५। २९॥
 'संखार ५। ३०। ३६॥ ८। ४।
 १-२॥ ९। ३४। ४४॥
 संखारकलाघ ७। ३६॥
 संखारपादानकलाघ ७। ३७॥
 संखारपेक्षा ९। २८। ३६॥
 संखेष ८। ६॥
 संग्रह २। १७-१९। २९॥ ३। १९॥
 ४। १॥ ६। २-४॥ ७। २।
 १४। १६। २४। २६। ३३॥
 १-२॥ २॥
 संयानुस्तवि २। ८॥
 'सम्भा १। २। ३। ७। ४२॥ ११। २।
 १०। १२। ११॥
 'सम्भास्तराघ ७। ३६॥
 'सम्भाविराग ८। ३१॥
 सम्भुपादानकलाघ ७। ३७॥
 सति २। ६॥ ७। १७। १६। ३३॥
 'सतिश्रिय ७। १८। २८॥
 सतिपूर्व ७। २६। ३२॥

सतिपूर्व ७। १९। २१॥
 सतिसंपोर्हग ७। २०॥
 सत् (साव) ४। १७। १८॥ १८॥
 सतपञ्चति ९। २९॥
 सतपञ्चतुपरम ९। ३१॥
 'सदित ६। ३॥
 'सद ३। १९। २०॥ ६। ४। १६॥
 १९। २०। १२। २८॥ २९॥
 सदपातु ७। ३५॥
 सदनवक ६। २०॥
 सदायतन ७। ३८॥
 सदारमण ३। १९॥
 'सदमर १। १॥
 सदा २। ८॥ १। ११। १४॥ १॥
 १॥
 सदायरित ९। ३। १९॥
 सदापल ७। १९। २१॥
 सदिश्रिय ७। १८। २८॥
 'सतिदस्तवकलप ६। ८॥
 'सतति ६। ४०। ४१॥ ४५॥ १॥
 ३४। ४४॥
 'संवान ६। ११॥
 संतिकेहण ६। ८॥
 संतीरण ६। ७। ८॥ १। ११॥
 ६। १-१। १५। २६। ३॥
 ८। १६। १७॥ ८। १०। ११॥
 'संषिद १। १। ४॥
 'सम्पर्य, ६। ७। १। १। ३॥
 सप्तदिष्ठैर७ ६। ८॥
 सप्ताय १। १॥
 सप्तवित्सावारण २। १॥

विगिर्भीगहृप ६। ८॥
 विनोदक ९। ७॥
 विगङ्गासनिवित्त ९। ३७॥
 विपस्तना १। १। २८। ३४-३८॥
 विपस्तनाकम्भास ९। २५। ४५॥
 विष्णवन्न ९। ३८। ४२ ॥
 विराकर ८। १८। २८॥२। २३॥
 ३। ३। १०। ११। १७। २२।
 २८। २८। १६। २१॥५। १०।
 ११। १४। १६। २८-३०॥६।
 १२॥८। १९। २२। २३। २७॥
 विपाकवयव ८। १७ ॥
 विपाकवयव ८। ११ ॥
 विपाकदृ ८। १९ ॥
 विपुलक ९। ७ ॥
 विज्ञवुतपयव ८। ११। २०। २३।
 विवाग ४। २५॥६। ६। ९ ॥
 ८। १॥
 विष्णु ४। ७। ११। १२। १८ ॥
 विमोऽव ९। १८ ॥
 विमोऽस्मूल ३। २१। ३७ ॥
 विरणि २। ६। १२। १३। २३।
 २४ ॥
 विरतिर २। २१॥७। ३३।
 ३४ ॥
 विरिव २। ३। ११। १२। १२। ३। १४॥
 विरियद ३। ११। १२। ४॥
 विरियमेशोऽप्ति ३। ३० ॥
 विरियाविविति ३। ३० ॥
 विरियिदिपाद ३। २३ ॥
 विरियिदिप्रथ ३। १८। २८ ॥
 विमव ६। १। ८॥

विसयाप्यति ३। २। ३। ११॥
 विष्णुदि ९। २२। ३०-३३। ३५।
 ३६ ॥
 विसेवक २। २४ ॥
 वीतराग ४। १५ ॥
 वीयि ४। २। ६। १। १०। १३।
 ११॥६। ३३। ५। ५। ४। ८।
 १६। ३६। ९। ३६ ॥
 वीयिचित ४। १। १०। १२। १५।
 २४। २२॥६। १। ३३। ४० ॥
 वीयिमुत ४। ३ ॥
 वीयिमुलसंगद ६। २ ॥
 वीमेनापिरति ७। २० ॥
 वीमसिद्धिपाद ५। २३ ॥
 वीमताकार ८। ८ ॥
 वुहान ४। १९। ९। ३७। ४८ ॥
 वुत ७। १। १४ ॥
 विद्वा १। ११॥०॥२। २५॥३। १।
 २। ४॥७। ४॥२॥४। ४। ५।
 ३॥
 वेदनामादध ७। ३६ ॥
 वेदनामुद्भवतामनिरद्वय ७।
 २५ ॥
 वेदनुगाद्यनवदध ७। १३ ॥
 वेष्यादध ८। ३१ ॥
 वेहादध ८। १। १६। १। १। ॥
 वोद्वय १। १२॥०॥१। १। १-१॥
 १२। १। १३। २२॥४। ८। १४।
 ६। १२ ॥
 वोत्रिलद ८। १५ ॥
 वाहार १। ३२ ॥

स

सउपादिसेतनिष्ठानधातु ६। ३०॥
 संयोजन ७। १०। ११। ३४॥
 द्वेषदत्त ६। २४॥
 द्वच ८। ३३॥
 सहशरागामिक ९। ८०। ४०॥
 सहशरागामिकल १। २६॥
 सहशरागामिमणग १। २५। ३० ३
 ९। ४०॥
 संखल्प ७। १७। ३१। २३-२५॥
 संवेद ८। ३६॥
 संवत्सर ६। ७॥ ८। १। १॥
 संवाद १। २६॥
 संवार ८। ३०। ३६॥ ८। ५।
 १६-१॥ ९। १४। ४४॥
 अंत्यारक्षयमध ७। ३६॥
 अंत्यारपादानवत्तमध ७। ४७॥
 अंत्यादपेक्षणा ९। २८। ३५॥
 मंखेष ८। ५॥
 संगढ २। १७-१९। २९॥ ३। ९॥
 ४। १॥ ६। २-४॥ ७। २।
 १४। १६। २४। ३५। ३३॥
 १९। २॥
 संपादुस्तति ९। ८॥
 संस्कार १। २॥ ७। ४४॥ ९। २।
 १०। ११। १२॥
 संस्कारव्यवध ७। ३६॥
 भ्रात्याक्षयमध ५। ३१॥
 सम्भ्रुपादानवत्तमध ७। ४७॥
 सति ८। ८॥ ७। १०। ११। १२॥
 सतिलिखिय ७। १८। २८॥
 सतिपटान ७। २५। १२॥

सतियल ७। १९। २१॥
 सतिहंपोरझग ७। ३०॥
 सत (सत्य) .४। १७। १८॥ ५
 १४॥ ६। २४॥
 सतपञ्जति ९। २१॥
 सतपञ्जतुपरम ९। ३६॥
 सदिस ६। ३३॥
 सह ३। १९। २०॥ ६। ४। १५
 १९। २०। २२। २८। २९॥
 सहपातु ७। २९॥
 सहवयक ६। २०॥
 सहपत्तन ७। ३८॥
 सहारमण ३। १९॥
 सहदम १। १॥
 सदा २। ८॥ ७। १३॥ १४॥ १।
 ३॥
 सदायति ९। ३। १५॥
 सदायल ७। १९। २९॥
 सदिग्निय ७। १८। २८॥
 सतिदसमहर ६। ८॥
 संतति ६। ४०। ४१॥ ४५॥ ५।
 ३४। ४४॥
 संतान ८। ११॥
 संतिकेहय ६। १॥ ८॥
 संतीरण १। ७। १०॥ १२॥ १३॥
 १। १९-२१। १५। १८॥ १४॥
 १। १५। १७॥ ८। १०। ११॥
 संषिद १। १। ४३॥
 संवरय १। ७॥ ९। १५॥
 सप्तदिपकर ६। ८॥
 सम्माय १। १२॥
 सम्भवितसाधारण २। १।

सद्वसंगद ७। २। ४३॥
 समाय ३। १॥ ६। ३०॥
 समावत् ६। १६॥
 समावरूप ६। ४॥
 समय १। १। २। ११॥
 समयकम्मटान ९। २। २४॥
 समनन्तरपश्य ८। ११। १३॥
 समाधि ७। ३। ३३। ३४॥ १॥
 १५। १८। १९। ३१॥
 समाधिनिद्रिय ७। १८। २८॥
 समाधियड ७। १९। २९॥
 समाधिसंबोज्ञंग ७। ३०॥
 समापञ्चन ९। १९। ४३॥
 समापति ४। १९॥ ९। ३८।
 ४३। ४६॥
 समाप्त ४। १॥
 समुग्नादित ९। १७॥
 समुचय ७। १॥
 समुचयसंगद ७। २॥
 समुद्गान ६। २। १०-१२। १६।
 १८-२३। २३। २६। २८॥
 ८। ३०॥
 समुदय ७। ४०। ४३॥ ८। ४॥
 समुदयसंघ ९। १६॥
 समुरेस ६। २। ६॥
 समुप्याद ८। १०॥
 समोधान ८। २९॥
 मेषटिष्ठन १। ७। ८॥ २। १॥
 ३। ६। ९। १०। १२। २५॥
 ४। ८। १३॥
 मेष्युष्टपश्य ८। ११। १३॥
 मेष्योग २। ९। १६। १०॥

संफल्पलाप ६। २२॥
 संयोज्ञंग ७। ३०॥
 संयम ४। १७। २३॥ ८। ३१॥
 संभारसंनियेसाकार ८। ३३॥
 सम्मण्डान ७। २६। ३२॥
 सम्मसनवाण ९। २८। ३४॥
 सम्मसनरूप ६। ४॥
 सम्माआजीय २। ६॥ ७। १७।
 ३१॥
 सम्माकम्मन्त २। ६॥ ७। १७।
 ३१॥
 सम्मादिष्टि ७। १७। ३१। ३३॥
 सम्मावाचा २। ६॥ ७। १७। ३३॥
 सम्मायायाम ७। १७। ३१। ३३॥
 सम्मासंकल्प ७। १७। ३१॥
 सम्मासति ७। १७। ३१। ३३॥
 सम्मासमाधि ७। १७। ३१॥
 सम्मासिद्ध १। १॥
 सरस ९। ३८॥
 सलवत्तरूप ६। ४॥
 सथन १। ९। १०॥
 ससंधार २। १४॥
 ससंधारिक १। ३। ४। १६-१७॥
 २। १३। २६॥
 सदगात ६। ३६॥ ८। १४। २५॥
 २६। २८॥
 सदगातपश्य ८। ११। २०॥ २०॥
 सदगातरूप ८। २२। २४। २३॥
 ३०॥
 सदगाताधिष्ठित ८। २१॥
 सदेतुक १। १५-१६॥ २। १५॥
 २४॥ ३। १॥

सुराम ८।१५॥
सुराम ६।२४॥
सुर ९।३२॥
सुराम ९।२६॥
सुर १।१।१०॥
सुर ८।७॥
सुराम १।१२॥
सुरहंस ८।४१॥
सुर ६।११॥
सुर ८।५८॥१।१०॥
सुरवत्यरामाम ७।८।१२॥
सुरवत्यरामामसंयोजन ८।
१०।११॥
सुरवत्यरामाम ७।७॥
सुरविशुद्धि ९।२१।३०॥
सुरामुम्पति ९।८॥
सुर १।१७।१८।१०॥२।
२।॥१।२।२-४॥८।१६॥
८।१९॥९।१८॥
सुरामीरण २।२८॥३।३॥७॥
सुरामदग्न १।८॥
सुरविविष्ण ८।१६॥
सुरुम १।१९॥
सुरुमहस १।२०॥६।८॥
७।४॥
सुरतिष्ठ १।२१॥७।१।५।९।
१।१।२८॥
सुरध्यन ६।१०॥५॥९॥४॥१७॥
१८॥
सुरभ्रतामुपस्थिता १।३९।३७॥
सुराम ७।१०॥

सुराम ८।१५॥१६॥
सुरमिल ८।१५॥१७॥
सुरहंस १।११-१२॥
सुराम ८।६।१।१०॥
सुरक्ष ५।४१॥
सुर १।१४॥
सुरविशुद्धि ९।१६।१६।१८॥
सुरव ४।१६।२२।२३॥
सुराम ८।११॥
सुरक्ष ८।७॥
सुराम १।१२।१४॥
सुरविशुद्धि १।६।६।८।९।११॥७
७।०।९।४।२४।२५॥२६॥
१।२४॥
सोतदाम ६।१८॥
सोतदाम १।१३।१५॥४।१०॥
सोतदामधीष ४।११॥
सोतधातु ७।३॥
सोतविज्ञान १।७।८॥३॥
१६॥४॥६॥
सोतविज्ञानधातु ७।३॥
सोतविज्ञानधीष ४।६॥८॥
५॥
सोतापतिकल १।२६॥
सोतापतिमाग १।२६।१०॥५॥
२२॥९॥३॥
सोतापत ६।८॥९॥१५॥
सोतायतन ७।३॥
सातिष्ठिय ७।१८॥
सोभन १।११॥२।१५॥१६॥
१८॥३॥७॥
सोभनसाधारण १।५॥

सोमनस्त १।२।४।११॥५॥
१७॥६।१२॥७।१६॥

सोमनस्तसदगत १।३।८।९।
१२।१४॥३।५।६।८।१३।
१४।१६॥

सोमनस्तपटिसंधिक ४।१७॥
सोमनस्तसिंचित्र ७।१८॥

इ

हतयिकिताक ९।७॥
हदय ३।२४।२५॥ दादाव॑१६॥
हदयहर्ष ६।६॥

हदययस्यु ६।४॥
हमग २।२९॥३।३।६।२२॥
२३॥४।२४॥६।१२॥

हमितुल्यादचित १।१॥

हानि ६।२४॥

हिरि २।६॥

हिरियल ७।१९॥

हीन ९।३६॥

हेट्टिम ४।१४।२४॥५।३९॥

हेतु ३।१।२।८।७।१५।२४॥
८।१।१४॥

हेतुपर्य ८।११।१४॥

गाथानुक्रमो

अ-

उत्तिस सततिस २ । २४ ॥
 या लोभमूलानि १ । ६ ॥
 योसति कामेसु ६ । २९ ॥
 सहि तथा द्वे च ३ । १२ ॥
 परस पश्चरस ६ । १६ ॥
 तीते हेतंसो पश्च ८ । ८ ॥
 या यस्सानुसारेन ८ । २६ ॥
 नुहरे शानधम्मा २ । २४ ॥
 रेया नोपलभ्यन्ति ८ । ८ ॥
 तीति वीयिष्यितानि ४ । २६ ॥
 देवदानं चतुष्पाता० ४ । २३ ॥
 देवदार संसार० ६ । १० ॥
 देहुकहुरसेक० ३ । ८ ॥
 देहुयेसु 'सद्वर्त्य २ । ३० ॥

आ

पद्मचुतिया होन्ति ६ । १९ ॥
 गलभ्यनप्पमेदेन १ । २४ ॥
 गसवाने समुप्यादा ८-१ १६ ॥
 गसबोधा च योगा च ७ । १४ ॥

इ

ऐषमहूषीस० ६ । ९ ॥
 ऐके मतसत्ताने० ६ । ३७ ॥
 ति चित्ते वेतसिकं ६ । १२ ॥
 ति तेवालिका धम्मा ८ । ११ ॥
 इयमेषु नवयुति० १ । २९ ॥
 इयं वित्तावियुक्ताने० २ । ३० ॥
 इयं महायाते पुम्भे० ५ । १३ ॥
 इदिकिष्ठे दिष्प्यतोते० ९ । २४ ॥
 इस्सा-मर्ष्टेर-कुचकुचा० २ । १७ ॥

ए

एवद्वारिकवित्तानि १ । १८ ॥
 एवादसविष्ठे तस्मा० १ । ११ ॥
 एकुप्पादनिरोधा च ८ । ११ ॥

पकूनवीसहुरस २ । २८ ॥

पकूनवीसति धम्मा २ । १६ ॥

पत्तावता विभक्ता हि० ६ । १० ॥

ओ

ओमासो पीति पस्सदिं९ । १४ ॥

फ

कम्मचित्तोनुकाहार० ६-१ । २३ ॥

कलापाने वरिष्ठेद० ६-१ । २३ ॥

कामे जयनसत्तार० ४ । १८ ॥

कामे सेवीस पाकानि १ । १६ ॥

च

चतुष्पञ्चासधा कामे १ । २९ ॥

चतुमण्डपमेदेन १ । २७ ॥

चत्तारोपिषतो बुहा० ७ । २४ ॥

चित्तुप्पादानमिष्ठेव० ४ । १३ ॥

छ

चत्तिसति तथा तीणि० ३ । १८ ॥

चत्तिस पश्चतिसाप० २ । २० ॥

चत्तिसानुहरे धम्मा २ । १८ ॥

चदा नामे तु नामस्स ८ । १२ ॥

चदो वित्तमुपेवया च ७ । ३३ ॥

चित्तुदिक्षेदेवे० १ । १६ ॥

चवाप्ते निविलता कामे० १ । २६ ॥

चसहि पश्चप्पास० २ । १२ ॥

च हेतु पश्च सामैता० ७ । २४ ॥

चित्तानुसया होन्ति० ७ । १४ ॥

ज

जायमातादिसत्ताने० ५ । १९ ॥

झ

हासेनयोगेदेन० १ । ३१ ॥

त

तत्त्वं बुलाभिष्पम्मदा० १३ २४ ॥

सोमनस्त ३ ॥ २ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४ ॥
 १७ ॥ ६ ॥ १२ ॥ ७ ॥ १६ ॥ ८ ॥
 सोमनस्तसद्यत १ ॥ ३ ॥ ८ ॥ ९ ॥
 १२ ॥ १४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ६ ॥ १३ ॥
 १४ ॥ १६ ॥

सोमनस्तसपटिसंधिक ॥ ८ ॥ १७ ॥
 सोमनस्तिसंन्द्रिय ७ ॥ १८ ॥

इ

हतयिकिवतक ९ ॥ ७ ॥
 हदय ३ ॥ २४ ॥ २६ ॥ दादादाद्या ॥
 हदयहृष्ट ६ ॥ ६ ॥

हदययन्तु ६ ॥ ४ ॥
 हसन २ ॥ २९ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ६ ॥ २२ ॥
 २६ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ६ ॥ १२ ॥
 हसितुप्पादचित १ ॥ १ ॥
 हानि ६ ॥ २३ ॥
 हिरि २ ॥ ६ ॥
 हितियल ७ ॥ १९ ॥
 हीन ९ ॥ ३ ॥
 हेड्हिम ६ ॥ १४ ॥ २२ ॥ ६ ॥ ३१ ॥
 हेतु ३ ॥ १ ॥ २ ॥ ८ ॥ ७ ॥ १६ ॥ २४ ॥
 ८ ॥ १ ॥ १४ ॥
 हेतुपथय ८ ॥ ११ ॥ १४ ॥

गाथानुक्रमो

अ-

अद्वितीय सत्तिस २ । २४ ॥
अद्वया लोभद्वयाति १ । ६ ॥
अद्वयोन्ति कामेषु ३ । २९ ॥
अद्वसहि तथा द्वे च ३ । १२ ॥
अद्वारस पश्चरस ३ । १६ ॥
अतोते हेतंषो पश्च ८ । ८७ ॥
अरण यस्तानुपरेन ८ । ३६ ॥
अनुत्तरे शानधम्या २ । २४ ॥
अतिंया भोपलम्भिते ८ । ८ ॥
असीति विधिचिंतानि ४ । २२ ॥
असेषणां यतुचक्ता० ४ । २३ ॥
असंखार संख्यार० ५ । ३० ॥
अदेषुकद्वारसेक० ३ । १८ ॥
अदेषुपेषु संख्य० २ । ३० ॥

आ-

आदपशुतिया होन्ति ६ । ३१ ॥
आलम्बनप्रभेदेन ३ । २४ ॥
आसवान्ति समुप्यादा० ८ । १० ॥
आसवोपाच योग च ७ । १४ ॥

इ

इषेषमद्वीप० ६ । ९ ॥
इषेषे मतसातां० ६ । २७ ॥
इति वित्त वित्तिकै० ६ । १२ ॥
इति तेषालिका धम्मा० ८ । ३१ ॥
इषेषेषमद्वीप० १ । २९ ॥
इषेषे वित्ताविषुताने० २ । २७ ॥
इषेष महागाते पुर्व्ये० ६ । ३३ ॥
इद्विषेषे दिष्यसोते० ६ । २४ ॥
इस्ता-मस्तेर-कुषक्षय० २ । १७ ॥

ए-

एवद्वारिषेषितानि० ३ । १८ ॥
एवद्वसयिषे तद्मा० ३ । ३१ ॥
एकुप्यादनिरोधा० ३ । १५ ॥

एकुप्रवीसद्वारस २ । २८ ॥

एकुनवीति धम्मा० २ । १६ ॥

एतावता विभवा द्वि० ६ । १ ॥

ओ

ओभासो पीति पस्तदिं० १ । १४ ॥

क

कम्मचित्तोतुकाहार० ६ । २३ ॥

कलापाले परिष्ठेऽ६ । २३ ॥

कामे जयनस्तार० ४ । १८ ॥

कामे सेषीस राक्षानि० १ । १६ ॥

च

चनुप्रज्ञासया कामे० १ । २९ ॥

चनुभगत्यभेदेन० १ । २७ ॥

चतारोधिपती बुक्ता० ७ । २४ ॥

चित्तुप्यादानमिष्यं४ । २ ॥

छ

छत्तिसति तथा तीणि० ३ । १८ ॥

छत्तिस पश्चित्ताथ० २ । २० ॥

छत्तिसानुहरे० धम्मा० २ । १८ ॥

छदा नामं तु नामस्ते० ८ । १२ ॥

छदो० चित्तमुपेष्वाचा० ४ । १२ ॥

छदिषुदिष्मदेनेव० ६ । १६ ॥

छदत्यु० निस्तिता कामे० १ । २९ ॥

छस्तु० एवद्वयास० २ । १२ ॥

छ हेतु० पश्च शान्तगा० ७ । २४ ॥

छदिषोनुसया होगित० ७ । १५ ॥

ज

जायमानार्दिष्मदेन० ६ । १९ ॥

झ

झानेमयोगभेदेन० १ । ३१ ॥

त

तत्पुरुषादिष्मदेन० १० । २४ ॥

तेचक्षावीस निहमाय ३ । २६ ॥
 तेतिस पाके चर्तिम २ । २४ ॥
 तेरसञ्चममाना घ ८ । ८ ॥
 तेसमेव घ मूलानं ८ । १० ॥
 तेसं चित्तायितुतानं २ । ९ ॥
 तेसं द्वादस पाकानि ५ । ३० ॥

द

दुवर्खं तेमूरकं घट्ट ७ । ४३ ॥
 द्वच्चिस सुपुञ्ज्रम्दा ४ । १५ ॥
 द्वादसाकुसलानेवं १ । २८ ॥
 द्वादसेकादस दस २ । ३० ॥
 द्वारालंयनभेदेन ७ । ४२ ॥
 द्वासत्तिविधा बुत्ता ७ । १ ॥

न

नयसतं चेक्षीस ५ । १३ ॥
 न विज्ञन्तेत्य विरती २ । २४ ॥

प

पञ्चतिस चतुर्तित २ । २२ ॥
 पञ्चधा ज्ञानभेदेन १ । २० ॥
 पञ्चपञ्चास छसड्डि २ । १२ ॥
 पञ्चयीस परितम्बि ३ । २३ ॥
 पञ्चुपादनिकसन्धा ति ७ । ४२ ॥
 पञ्चति नामहृषानं ८ । ३७ ॥
 पञ्चति नामहृषानि ८ । १२ ॥
 पञ्चापकासिता सत्त० २ । १६ ॥
 पनेनमद्युंब ८ । ४१ ॥
 पनेनमद्युंब ३ । १२ ॥
 पनेनमद्युंब ८ । ४१ ॥
 पटिसंधि भर्गं घ ६ । १८ ॥
 पदमच्छुतमश्वन्ते ६ । ११ ॥
 परिष्ठेदो घ विज्ञति ६ । ६ ॥

पथतिसंगद्दि माम ४ । १ ॥
 पापादेतुकमुत्तानि १ । ११ ॥
 पुयुज्जना न लभन्ति ५ । ८ ॥
 पुयुज्जनान सेक्षणाने ४ । १६ ॥

म

भायेतद्यं पनिशेयं ९ । ४६ ॥
 भूतप्पसादविसया ६ । ६ ॥

म

मग्नयुत्ता फला चैव ७ । ४१ ॥
 मग्नं फलं घ निष्याने ९ । ३६ ॥

य

यया घ रूपायचरं १ । ३१ ॥
 यया युतानुसारेन २ । १७ ॥
 येस मंखतथम्मानं ८ । १ ॥

र

रूपायचरत्तुतिया ६ । ३९ ॥
 रूपं घ चेदना सञ्जा ७ । ४२ ॥

ल

लोमो दोसो च मोहो घ ३ । ८ ॥
 व

यधीपोसानुसारेन ८ । ३६ ॥
 यिविकिन्छा यिविकि० २ । १४ ॥
 यीयिचित्तवसेनेवं ५ । १ ॥
 यीयिचित्तानि तीणेव ४ । १२ ॥
 यीयिचित्तानि सत्तेव ४ । १० ॥
 यीतानुत्तरमुत्तम्मि ३ । २३ ॥
 येदनायाणसंखार० १ । १५ ॥
 येदनादेतुतो किं १ । १ ॥

स

संकल्पप्रसादि व पीतुरेकणा
७।३४॥

सत्त्ववन्तु परित्वानि ४।१०॥

सत्त्वतिसविष्टु पुञ्जं १।३१॥

सत्त्वोसत्यपुञ्जमिद २।१८॥

सत्त्व सम्पर्यय पुञ्जगित २।९॥

सत्ताकुसलणाकानि १।१०॥

सहो विकारो जरता ६।२९॥

सम्बापुञ्जेषु वकारो २।१४॥

सत्ये लोकुत्तरे द्वोग्नित ७।३५॥

समयविप्रसत्ताने ९।१॥

समुद्रसा विभागा व ६।२॥

संपुष्टा वयायोगे ३।१॥

सम्मासति समाधीति ७।३३॥

सम्मासंपुञ्जमतुले १।१।

सदज्ञाते पुरेज्ञाते ८।२८॥

सापारणा व वकारो २।२८॥

सुखमेवत्थ दुवर्णे व ३।४॥

सुसे दुवर्णे उपेवकाति ३।४॥

